छत्तीसगढ़ में गांधीजी

गांधी शताब्दी समारोह समिति, रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर : १९७०

गांधी जी

जिनकी १९२० और १९३३ की यात्राओं ने छत्तीसगढ़ के जनमानस को झकझोर कर एक नवीन सन्देश और अभिनव-चेतना प्रदान की।

(नवभारत के सौजन्य से)

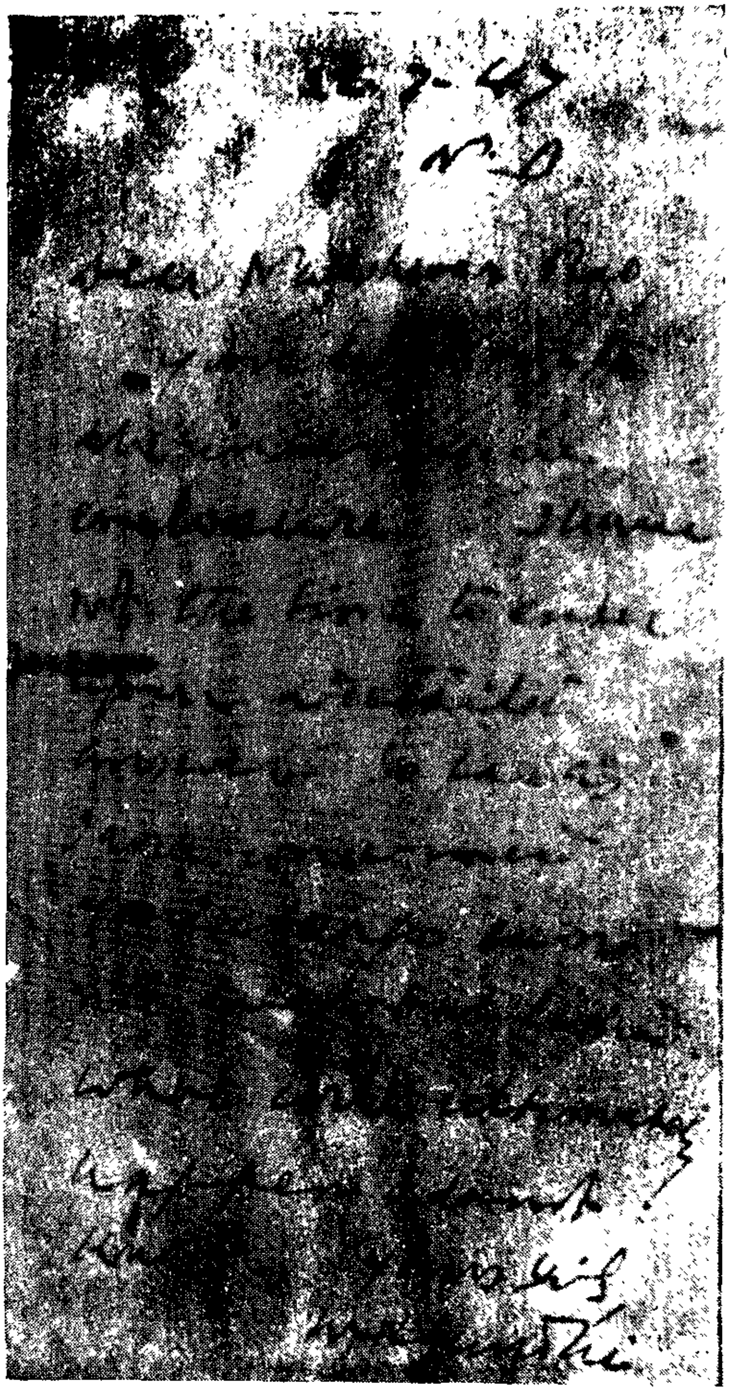

बिलासपुर के स्व. ई. राघवेंद्र राव जी को लिखा गया महात्मागांधी जी का एक अन्य पत्र (श्री ई. नागेश्वर राव के सौजन्य से)

छत्तीसगढ़ में गाँधी जी

सम्पादक

डॉ० ठा० मा० नायक

गांधी शताब्दी समारोह समिति

रविशंकर विश्वविद्यालय,

रायपुर

१९७०

प्रकाशक :

गांधी शताब्दी समारोह समिति,
रविशंकर विश्वविद्यालय
रायपुर (म०प्र०)

मूल्य— सात रु. पचास पैसे

मुद्रक :

ललित प्रिंटर्स,
नहरपारा
रायपुर (म०प्र०)

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्रस्तावना

सम्पादकीय क

गांधी शताब्दी समारोह समिति परिचय घ

छत्तीसगढ़—एक परिचय च

राजनीतिक खंड

१. छत्तीसगढ़ पर गांधी जी के व्यक्तित्व का प्रभाव	श्री हरि ठाकुर, रायपुर	१
२. १४ छत्तीसगढ़ का किसान आन्दोलन	श्री कंदूर भूषण मिश्र, रायपुर	७
३. कंडेल गांव का नहर सत्याग्रह	डॉ० शोभाराम देवांगन, धमतरी	११
४. छत्तीसगढ़ में गांधीवाद	श्री हरिप्रसाद अवधिया, रायपुर	१३

संस्मरण खंड

५. युग-पुरुष-मेरी स्मृति में	बल्देव प्रसाद मिश्र, राजनांद गांव	१५
६. गांधी की नजर में हिंदी	श्री घनश्याम सिंह गुप्त, दुर्ग	१७
७. बापू के सारथी	लेखक डॉ० शोभाराम देवांगन, धमतरी	२०
८. और लायसेंस रद्द हो गया	श्री अब्बास भाई, बिलासपुर	२३
९. गांधी जी की डांट	श्री गणपत राव जी दानी	२३
१०. गांधी जी बिलासपुर में	श्री यदुनंदन प्रसाद श्रीवास्तव, बिलासपुर	२४
११. कस्तूरबा को दंड	श्रीमती इंदिरा बाई लाखे, रायपुर	२६
१२. तीसरा दर्जा देखो ...	श्री प्रभुलाल काबरा अकलतरा	२६
१३. महात्मा गांधी के साथ ६ दिन	श्रीयुत यतन लाल जी महासमुन्द	२८
१४. मैं बनिया हूं	श्री कन्हैया लाल वर्मा, रायपुर	२९
१५. जब ताले का आतंक भी विफल हो गया	श्री राम शरण तम्बोली, जांजगीर	३१
१६. एक कट्टर बनिया	श्री मुकुट धर पांडेय, रायगढ़	३२
१७. जब कुलीन वर्ग की प्रतिष्ठा उपेक्षित	श्री राज वैद्य जी, रायपुर	३३
१८. मेहतर से तकली मास्टर	श्री जयदेव सतपथी, सरईपाली	३४
१९. धन्य मेरे भाग्य	श्री कुबेरनाई, रायपुर	३४
२०. लोक गीतों का नायक	श्री अद्वैत गिरीजी रायपुर	३५

सम्पादकीय

२ अक्टूबर १९६९ से सम्पूर्ण देश मे और विश्व म राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की जन्मशताब्दी मनाई जा रही है। भारत के प्रत्येक अंचल में, चाहे वह शहरी हो या ग्रामीण, शासकीय और अशासकीय स्तर पर गांधी शताब्दी समारोहों का आयोजन उत्साह एवं लगन के साथ किया जा रहा है।

गांधी शताब्दी समारोह के अन्तर्गत भारत की अनेक शैक्षणिक और अन्य संस्थाओं की ओर से गांधी स्मृति अंक का प्रकाशन वृहत् अथवा लघु रूप में अखिल भारतीय स्तर, राज्यीय स्तर और क्षेत्रीय स्तर पर किया जा रहा है। इस गांधी स्मृति अंक के प्रकाशन के पृष्ठ मे मूल भावना यही है कि भारत की उस पीढ़ी को जो स्वाधीनता के पश्चात् वयस्क हुई है, महात्मा गांधी के आविर्भाव और उनके प्रभाव तथा उनकी अलौकिक शक्ति का परिचय मिल सके और उन्हें गांधीजी के समकालीन भारत की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का भी बोध हो सके। नई पीढ़ी को यह ज्ञात हो सके कि सादगी से परिपूर्ण इस महान् सन्त ने किस तरह अहिंसा के माध्यम से सुप्त राष्ट्र में नवजागरण का संचार किया था।

रविशंकर विश्वविद्यालय ने अपने कार्य क्षेत्र "छत्तीसगढ़" में गांधीजी के आगमन और विचारों का क्या प्रभाव पड़ा है, इसे दिखाने के लिये इस स्मृतिग्रंथ का प्रकाशन किया है। "छत्तीसगढ़ मे गांधीजी" शीर्षक इस बात का द्योतक है कि इस स्मृति ग्रंथ में केवल वही सामग्री सम्मिलित है जिसका संबंध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गांधीजी और छत्तीसगढ़ के निवासियों से रहा है। यहां पर यह उल्लेखनीय है कि गांधीजी ने छत्तीसगढ़ की दो बार यात्रायें की हैं। उनकी प्रथम यात्रा सन् १९२० में तथा द्वितीय यात्रा सन् १९३३ में हरिजनोद्धार के संदर्भ में हुई थी। गांधीजी की इन यात्राओं के बारे में विस्तृत जानकारी पाठकों को स्मृतिग्रंथ में प्रकाशित सामग्री से प्राप्त होगी।

रविशंकर विश्वविद्यालय की गांधी शताब्दी समारोह समिति द्वारा स्मृति ग्रन्थ की सामग्री के लिये छत्तीसगढ़ के उन समस्त महानुभावों से, जो किसी न किसी प्रकार से महात्मा गांधी के संपर्क में आये थे, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित कर गांधीजी और छत्तीसगढ़ के संदर्भ मे संस्मरण, लेख, फोटो ग्राफ्स, पत्र तथा अन्य जानकारी उपलब्ध कराने के लिये अकथनीय प्रयास किये। बहुतों ने काफी मदद की, कुछ क्षेत्रों से उनके कार्याधिक्य के कारण हमे समुचित जानकारी और सामग्री प्राप्त नहीं हो सकी।

स्मृति ग्रंथ में कुल तीन खंड हैं। प्रथम खण्ड राजनीतिक, द्वितीय खंड संस्मरणात्मक और तृतीय खंड लोक साहित्य व गीतों से सम्बन्धित है। कुछ लेख और संस्मरण विलम्ब से प्राप्त हुए, अतः उन्हें संबंधित खंड

रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर
गांधी शताब्दी समारोह समिति

अध्यक्ष :

श्री घनश्यामसिंह गुप्त

सदस्य :

डा० बल्देव प्रसाद मिश्र
(संयोजक– गांधी काव्य ग्रन्थ)

डा० ठा० भा० नायक
(संयोजक– गांधी स्मृति ग्रन्थ)

श्रीमती प्रकाशवती मिश्र
श्री गुरुदेव शरण
श्री मथुराप्रसाद दुबे
श्री रामानन्द दुबे
श्री किशोरी मोहन त्रिपाठी
श्री यतीयतन लाल
श्री ई० नागेश्वर राव
(सदस्य– गांधी स्मृति ग्रन्थ उप समिति)

छत्तीसगढ़ : एक परिचय

वर्तमान छत्तीसगढ़ क्षेत्र दो संभागों रायपुर और बिलासपुर में विभाजित है। रायपुर संभाग के अन्तर्गत तीन जिले बस्तर, दुर्ग और रायपुर और उनकी १९ तहसीलें और बिलासपुर संभाग के अन्तर्गत सरगुजा, रायगढ़ तथा बिलासपुर जिले और उनकी १७ तहसीलें आती हैं। इस प्रकार संपूर्ण छत्तीसगढ़ ३६ तहसीलों में विभाजित है।

पुरातन अवशेषों के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि छत्तीसगढ़ के इस क्षेत्र में पूर्व पाषेण युग से मानव जाति का निवास है। रायगढ़ के निकट सिंघनपुर की गुफा में गहरे लाल रंग की चित्रकारी के माध्यम से आदिम मानव समाज अपने स्मृति चिह्न छोड़ गया है।

ऋग वैदिक आर्य मध्यप्रदेश तक नहीं पहुंचे थे। उत्तर वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण आरण्यकों में मध्यप्रदेश के संबंध में कुछ सूचनायें मिलती हैं। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार इस मध्यवर्त्ती वनाच्छादित प्रान्त को पहले महाकान्तार कहते थे। महाभारत में कान्तारकों के राज्य का जो स्थान निर्दिष्ट किया गया है उसे डा. के. पी. जायसवाल ने छत्तीसगढ़ कांकेर बस्तर राज्य माना है । चतुर्थ शताब्दी के लगभग यह भूखंड दक्षिण महाकोशल के नाम से जाना जाता था। गुप्त वंश के उद्‌भव के साथ सम्राट समुद्रगुप्त ने इस क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। प्रयाग के किले में समुद्रगुप्त द्वारा उत्तीर्ण प्रस्तर स्तम्भ में यह बात कही गई है। छठवीं शताब्दि में भीमसेन महाकोश ल का राजा था। सातवीं शताब्दी में यह प्रान्त बौद्ध भीम राजा के हाथ में चला गया। उसने जिला चांदा में मांडक (भद्रावती) को अपनी राजधानी बनाई थी। प्रसिद्ध चीनीयात्री हुएन सांग ने सन् ६३९ में अपनी यात्रा वर्णन में इस राजधानी नगरी का वर्णन किया है। इसी मांडक वंश की एक शाखा ने रायपुर जिले में महानदी के तट पर सिरपुर को अपनी राजधानी बनाई। इस राज्य का विस्तार बिलासपुर से खरियार तक और रायपुर से सारंगढ़ तक था। इस प्रदेश को वास्तविक प्रसिद्धि कलचुरी राजवंश और हैहयवंशी राजाओं के शासनकाल में ही प्राप्त हुई। कलचुरी राजाओं ने यहां आधिपत्य स्थापित किया परन्तु इसके पूर्व वे चेदिदेश पर राज्य करते थे। यह चेदिराज्य चंबल नदी से बांदा चित्रकूट तक और अमरकंटक से हसदो नदी तक फैला हुआ था। सन् ८७५ में रतनपुर में चेदिवंश का राजा कल्लोल राज्य करता था। यहीं से हैहयवंशी नरेशों का राज्य प्रारंभ होता है। "क्षोणी दक्षिण कोसलों जनपद वाहुब्दये नार्जित" से प्रमाणित होता है कि यह प्रान्त दक्षिण कोसल कहलाता था। हैहयवंशी राजाओं ने अपने आपको "सकल कोसलाधि तथा सकल कोसल मंडन श्री आदि उपाधियों से विभूषित किया था।

छत्तीसगढ़ शब्द की उत्पत्ति के विषय पर भिन्न-भिन्न मत हैं। बताया जाता है कि छत्तीसगढ़ शब्द की उत्पत्ति चेदिस वंशी राजाओं के काल कार्य में ही हुई है। मध्य प्रान्त के विद्वान राय बहादुर डा० हीरालाल ने छत्तीसगढ़ को चेदिशगढ़ का ही एक रूप माना है।

छत्तीसगढ़ शब्द के साथ अठारागढ़ रतनपुर और अठारागढ़ रायपुर शब्द की संप्तति अवश्य ही विचारणीय है। प्रसिद्ध संक्षोभ के ताम्रपत्र के अष्टादश अटवीं राज्य" से ऐसा संकेत मिलता है कि इस ओर अठारह राज्यों के समूह की परम्परा छठी शताब्दि से चली आ रही है। रतनपुर और रायपुर राज्य १८ गढ़ों के कहे जाते हैं और दोनों मिलकर छत्तीसगढ़ कहलाते हैं।

लाला प्रद्युम्न सिंह ने अपनी पुस्तक नागवंश के पृष्ठ २ में लिखा है कि प्राचीनकाल में छत्तीसगढ़ विभाग में छत्तीस राजा राज्य करते थे। इसमें छत्तीस राजधानियां थी और प्रत्येक राजधानी में एक गढ़ था। छत्तीसगढ़ होने के कारण इस भूभाग का नाम छत्तीसगढ़ पड़ा।

छत्तीसगढ़ शब्द की उत्पत्ति का संबंध उन छत्तीस कुटियों से भी जोड़ा जाता है जिनका संकेत रतनपुर निवासी कवि गोपालचन्द्र मिश्र "खूब तमाशा" तथा कवि रेवाराम कृत "विक्रम विलास" में प्राप्त होता है। श्री गोपाल चन्द्र मिश्र ने लिखा है---बसे छत्तीस कुटी सब दिन के सब वासी सब सबके। कवि रेवाराम ने भी "विक्रम विलास" में लिखा है:—"बसंत नगर सोभा की खानि, चारि बदन निज कर्म निदान और कुरी छत्तीस है वहां, रूपराशि गुन पूरन जहां।" यहां पर कुरी का अर्थ कुल से होता है। संभव है कि कलचुरीय हैहयवंशी राजाओं ने इस प्रान्त को जीतने और अपना राज्य स्थापित करने के उद्देश्य से उत्तर भारत से अपने क्षत्रियों कुलों को समय-समय पर बुलाया होगा और कालान्तर में क्षत्रिय कुल यहीं पर बस गये।

छत्तीसगढ़ शब्द के संदर्भ में श्री लोचन प्रसाद पांडेय का यह विचार है कि मध्य युग में किसी राज्य की समर विजित शक्ति और महत्ता बतलाने के लिये उनका मान गढ़ों से बतलाया जाता था। उनका कथन है कि इस प्रदेश को छत्तीसगढ़ रतनपुर कहते थे। कालान्तर में रतनपुर शब्द का लोप हो गया और छत्तीसगढ़ विद्यमान रहा। देवार जाति द्वारा गाये-जाने वाले गोपल्ला गीत में वर्णित गढ़ों से भी इस मत की पुष्टि होती है कि रतनपुर और रायपुर राज्यों के अन्तर्गत १८-१८ गढ़ विद्यमान थे।

छत्तीसगढ़ शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कवि गोपालचन्द्र मिश्र ने हीअपने"खूब तमाशा"नामक ग्रंथ में किया है जो इस प्रकार है:—

"छत्तीसगढ़ गाढ़े जहां बड़े गढ़ोई जानि
सेवा स्वामिन को रहे सकै एंन को मानि।"

उपरोक्त पंक्तियों से यह प्रमाणित हो जाता है कि संवत् १७४६ में जो कि इस काव्य ग्रंथ का निर्माण काल है, छत्तीसगढ़ शब्द प्रचलित हुआ। अतः यह निष्कर्ष निकालना उचित होगा कि छत्तीसगढ़ शब्द संवत् १७४६ के पूर्व का है, बाद का नहीं हो सकता।

१७४०–४१ में हैहयवंशी राजा रघुनाथ सिंह मराठा सेनापति भास्कर पन्त से परास्त हो गये और रतनपुर पर भोंसलों का अधिकार हो गया। छत्तीसगढ़ क्षेत्र पर भोंसलों का आधिपत्य सन् १८१८ तक बना रहा और १८१८ से १८५३ तक वह ब्रिटिश सरकार के संरक्षण में रहा और अन्त में१८५३में यह संपूर्ण क्षेत्र ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत चला गया।

छत्तीसगढ़ के खालसा विभाग में रायपुर, बिलासपुर और संबलपुर जिले थे सन् १९०६ में दुर्ग जिला इसमें मिला लिया गया। पंडरिया, कवर्धा, सहसपुरा, पेंड्रा, मातिन, उपरोड़ा, केंडा, धुरी, कोरबा, चाम्पा, लाफा आदि छत्तीसगढ़ की जमींदारियां धीरे-धीरे इसके अधीन आ गयीं। इसके बाद खैरागढ़, नांदगांव, छुईखदान, गंडई, सिलहरी, बरबसपुर, लोहारा, ठाकुरटोला आदि खलौटी जमींदारियां इसके अन्तर्गत आ गई। तदन्तर रायगढ़, बरगढ़, सक्ति सारंगढ़, फुलझर, बोरासामर, खरियार, बिन्द्रानवागढ़ आदि गढ़जात स्टेट भी इसमें आ गयी। बाद मे भटगांव, बिलाईगढ़, कटंगी, कोरिया, पुरचोरी, मुअरमार नदी, देवरी, फिंगेश्वर, गुंडरदेही, खुज्जी, मदनपुर आदि गोंड़वान जमींदारियां छत्तीसगढ़ में आ गई। कालान्तर में कांकेर और बस्तर भी सम्मिलित हो गये। अन्त में खालसा और जमींदारियों के एक बन जाने पर यह छत्तीसगढ़ कमिश्नरी बन गई थी। पर थोड़े ही वर्षों बाद छत्तीसगढ़ का सम्बलपुर तथा खरियार जिला उड़ीसा राज्य के अन्तर्गत चला गया।

भौगोलिक स्थिति:—वर्तमान छत्तीसगढ़ का परिक्षेत्र १८–२४ उत्तर आक्षांश तक तथा ८०–८४ पूर्वी देशांश तक विस्तृत

है। इसका कुल क्षेत्रफल ५२, २१६ वर्गमील है जो कि संपूर्ण मध्यप्रदेश के क्षेत्रफल का एक तिहाई भाग होता है।

नदियां:—छत्तीसगढ़ की प्रमुख नदियां में महानदी, शिवनाथ नदी, इन्द्रावती, हसदो और अरपा नदियां हैं। महानदी छत्तीसगढ़ की प्राय: अधिकांश नदियों के पानी को अपने सम्मिलित कर उसे बंगाल की खाड़ी में ले जाती है।

जलवायु और वर्षा:– छत्तीसगढ़ की जलवायु सामान्य रूप से गर्म और आर्द्रतायुक्त है। बस्तर और रायगढ़ जिले की जशपुर तहसील और बिलासपुर जिले का अमरकंटक स्थान की जलवायु ग्रीष्म ऋतु में भी ठंडी रहती है। शेष स्थानों की जलवायु ग्रीष्म के प्रारंभ में कुछ शीतल रहती है और ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक उष्ण हो जाती है। जनवरी का तापमान छत्तीसगढ़ में १८ से २८ सेन्टीग्रेड तक मिलता है। वार्षिक औसत तापमान १८ से २५ सेन्टीग्रेड तक पाया जाता है। वर्षा सामान्य रूप से ४०" से ५५" तक होती है।

वानस्पतिक विवरण:–छत्तीसगढ़ का लगभग दो तिहाई भाग वनों से आच्छादित है। विशेषकर बस्तर, सरगुजा व रायगढ़ जिले का अधिकांश भाग वनों से आच्छादित रहता है। इसी तरह रायपुर जिले का दक्षिणी भाग जिसके अन्तर्गत धमतरी, बिन्द्रानवागढ़ की जमींदारी का क्षेत्र और उत्तर में महासमुन्द और बालौद बाजार की तहसीलों का एक बड़ा भाग वनों से आच्छादित है। इसी तरह बिलासपुर का अमरकंटक पेंड्रारोड आदि क्षेत्र भी सघन वनों से आच्छादित है।

छत्तीसगढ़ के जंगलों में प्रमुख रूप से मानसूनी पर्णपाती वन पाये जाते हैं। इन्हें पतझड़ के भी वन कहते हैं। वनों की ऊंचाई सामान्य रूप से १० से २० मीटर की होती है। इन वनों के अन्तर्गत सागोन, बीजा, शाल, शीशम, हरड़, बाहेड़ा. आवला, बेंत, बांस, लाल चन्दन, शहतूत, बांस कत्था, सरई, तेन्दू, महुआ, खैर तथा आम व जामून आदि के वृक्ष पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त फूल बहारी की घास भी सरगुजा और बस्तर के जंगलों में पाई जाती है।

बस्तर जिले का दंडक का वन किसी समय में छत्तीसगढ़ का सर्वाधिक सघन वन क्षेत्र था। यद्यपि आज भी छत्तीसगढ़ के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा दंडक का वन क्षेत्र अभी भी अपनी सघनता का परिचय देता है।

जामून, इमली, आम के वृक्ष सामान्यत: मार्ग के किनारे दिखाई देते हैं। इसके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ के ग्रामों में नीम, पीपर और बरगढ़, पलास, बबूल के भी पेड़ बहुतायत में है।

पशुधन:–छत्तीसगढ़ में दो प्रकार के पशु जंगली और पालतू पाये जाते है। जंगली पशुओं के अन्तर्गत छत्तीसगढ़ में शेर, तेन्दुआ माड़िया और बाइसन भैंसे और अन्य जंगली भैंसें पाये जते हैं। इसके अतिरिक्त काले और लालमुंह के बन्दर, सियार, लोमड़ी और कहीं कहीं पर रीछ भी पाये जाते हैं। नीलगाय, सांभर, हिरण, बारहसिगा और जंगली कुत्ते भी मिलते हैं।

जनसंख्या— छत्तीसगढ़ की जनसंख्या निम्नानुसार है। मध्यप्रदेश तथा भारत की जनसंख्या के तुलनात्मक आंकड़े भी उल्लेखित है:—

जिला	क्षेत्रफल वर्गमील	जनसंख्या हजार में	साक्षरता
बस्तर	१५१२४	११६८	६.७
दुर्ग	७५७६	१८८६	१८.१
रायपुर	८२१४	२००३	१८.३
बिलासपुर	७६१५	२०२२	१८.०
रायगढ़	५०६४	१०४२	१४.८
सरगुजा	८६२३	१०३७	६.०
सम्पूर्ण छत्तीसगढ़	५२२१६	६१५८	१४.१५
सम्पूर्ण मध्यप्रदेश	१७१,२१०	३२३६४	१६.६
सम्पूर्ण भारत	१२,५६,७६७	४३६७८१४२६	२३.७

धर्म:- हिंदू धर्म की संस्कृतिकरण की प्रक्रिया ने छत्तीसगढ़ के आचार विचार और रीति-रिवाज को कुछ अधिक प्रभावित किया है। आदिवासी क्षेत्रों के ग्रामीण देवी-देवता वैदिक देवताओं से भिन्न होते हैं तथापि आदिवासी अपनी उत्पत्ति भी हिंदू पौराणिक वंश में बताते हैं। सम्भवत: वे अपना संबंध महाभारतकालीन राजाओं से जोड़ते हैं।

संपूर्ण छत्तीसगढ़ में हिंदू धर्म के आचार विचार का पालन किया जाता है और हिंदू धर्म के नियम का पालन किया जाता है लेकिन यहां के धार्मिक अनुष्ठान वैदिक अनुष्ठान से भिन्न होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक धर्म : अनुष्ठान में स्थानीय परम्परागत रीति रिवाज सम्मिलित कर दिये गये हैं।

हिंदू धर्म अपनाने के बाद भी छत्तीसगढ़ की संस्कृति उत्तर या दक्षिण भारतीय संस्कृति से पृथक दिखाई देती है-जो उनके रीति रिवाज, अनुष्ठान, खानपान और पोशाक से स्पष्ट होती है। इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ के अधिकांश निवासी हिंदू धर्म के अंग होते हुए भी विशेष संस्कृति का पालन करते है। इसे हम छत्तीसगढ़ की प्रारंभिक संस्कृति कह सकते हैं।

छत्तीसगढ़ में वैदिक देवताओं के अतिरिक्त स्थानीय देवी देवताओं की भी अनुष्ठानपूर्वक उपासना की जाती है। ग्रामीण देवी देवताओं में देवी को विशेष महत्व का स्थान प्राप्त है जिसे आद्यशक्ति का अवतार कहा जाता है।

यहां के धार्मिक जीवन में तंत्र मंत्र और झाड़ फूक का भी विशेष महत्व है। स्थानीय देवी देवताओं की पूजा में बैगा या गुनिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और बलि का काम भी वे स्वयं सम्पन्न करते हैं।

सत्यनारायण और भागवत की कथा, गायत्री यज्ञ, रामायण पाठ, रामलीला और कृष्णलीला जैसे आयोजन छत्तीसगढ़ में लोकप्रिय है। साथ ही महामारी और देवी देवताओं की विपत्तियों के अवसर पर स्थानीय देवी देवताओं की भी उपासना की जाती है।

हिंदुओं के तीज त्योहार छत्तीसगढ़ में भी मनाये जाते हैं। फसल की कटाई के बाद मड़ई आयोजित की जाती है। छेरछेरा पुन्नी का उत्सव प्रसिद्ध है।

देश की पवित्र नदियों में यहां की महानदी को भी स्थान प्राप्त है। शिवरात्रि के अवसर पर राजिम का मेला आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर महानदी में स्नान करना पवित्र माना जाता है। जो व्यक्ति संगम में अस्थि प्रवाह नहीं कर पाते वे महानदी में अस्थि प्रवाह करते हैं।

संस्कृतिकरण के कारण यहां के जो आदिवासी हिंदू जाति व्यवस्था में शामिल हो गये हैं उन्हें सामान्यत: शुद्र या अस्पृश्य की श्रेणी में रखा जाता है। राजगोंड़ संस्कृत धार्मिक ग्रंथों के रीति रिवाज और आचार का विचार का पालन करते हैं और अपने को राजपूत मानते हैं लेकिन ऊंची जाति के लोग उन्हें यह स्थान नही देते।

छत्तीसगढ़ में कुछ सुधारवादी आन्दोलन भी हुए हैं। सतनामियों का प्रथम सम्प्रदाय ही बन चुका है। जिनके अलग से ब्राह्मण और पुरोहित होते हैं। अन्य पिछड़ी जातियों के लोग कबीर या पलटूपंथ के अनुयायी है। आदिवासी क्षेत्रों में भी सुधारवादी आन्दोलन हुए हैं। ईसाई धर्म प्रचारकों के कारण आदिवासी बड़ी संख्या में ईसाई हो गये जिसके प्रत्युत्तर में आर्य समाजियों ने शुद्धिकरण आन्दोलन शुरू किया है। इन आन्दोलनों के कारण जाति व्यवस्था प्रभावित नहीं हुई लेकिन एक महत्वपूर्ण परिणाम यह सामने आया कि इन जातियों मे वर्णात्मक एकता की भावना आई है, उनका जाति संगठन सुदृढ़ हुआ है और सुधारवादी विचारों के कारण उनमें संस्कृतिकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई

इस क्षेत्र में यद्यपि अस्पृश्य जातियां पाई जाती हैं लेकिन उत्तर या दक्षिण भारत की तरह सामाजिक नियंत्रण अधिक कठोर नहीं है।

साक्षरता और भाषा:–छत्तीसगढ़ में साक्षरता का प्रतिशत १४.१५ है जब कि मध्यप्रदेश का प्रतिशत १६.६ और अखिल भारतीय मान २३.७ प्रतिशत है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र की प्रमुख भाषा हिंदी है। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ी बोली का भी ग्रामीण क्षेत्रों में बहुलता से प्रयोग किया जाता है। आदिवासी क्षेत्रों में हलबी गोंड़ी आदि बोलियां प्रचलित हैं।

सामाजिक जनजीवन:– छत्तीसगढ़ में पिछड़े वर्गों और आदिवासियों की बाहुलता है। बाहर से आये उच्च वर्ग के हिंदुओं जैसे ब्राह्मणों, वैश्य और ठाकुरों ने यहां की मूल संस्कृति को प्रभावित किया है। फलस्वरूप छत्तीसगढ़ का परिक्षेत्र संस्कृति सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से तीन वर्गों में विभक्त हो गया है। पहला वर्ग हिंदू संस्कृति को मानने वाले सवर्ण हिंदुओं का है दूसरा वर्ग उन मूल निवासी आदिवासियों का है जो इस क्षेत्र के बीहड़ जंगलों में आज भी आदिम अवस्था में है और आदिम संस्कृति के अवशेषों को सुरक्षित रखे हुए हैं। तीसरा वर्ग उन लोगो का है जो हिंदू संस्कृति के प्रभाव में आ गये और उन्होंने अपनी बहुत सी मूल सामाजिक परम्पराओं और रीति रिवाजों को त्यागकर हिंदू संस्कृति को अपना लिया। ऐसा वर्ग उन आदिवासियों और पिछड़े हुए वर्गों का है जोशहरी परिक्षेत्र के समीप ही निवास करते हैं अथवा जहां पर औद्योगिक करण का प्रभाव पड़ा है।

छत्तीसगढ़ में विभिन्न प्रकार की सामाजिक परम्पराओं के दिग्दर्शन होते हैं। छत्तीसगढ़ मे एक ओर जहां हमें बाल विवाह, दहेज प्रथा एक पत्नी विवाह की परम्परायें देखने को मिलती है वही दूसरी ओर वयस्क विवाह, सेवा विवाह अपहरण विवाह तथा वधू मूल्य दिये जाने की प्रथाओं कीभी जानकारी प्राप्त होती है। उदाहरण के लिये बस्तर की गोंड़ जन जाति में युवा विवाह प्रचलित है। जब कि हिंदुओं में सामान्यतः बाल विवाह की प्रथा है। गोंड़ों मे ममेरे-फुफेरे भाई बहिनों में विवाह श्रेष्ठ समझा जाता है वहीं हिंदुओं में इसका निषेध है। गोंड़ो मे वधू मूल्य दिया जाता है। जब कि हिंदुओं में वधू से दहेज प्राप्त किया जाता है। गोंड़ो मे लमसेना विवाह (सेवा विवाह) की प्रथा है। गोंड़ो मे ममेरे-फुफेरे या माता पिता द्वारा निश्चित किये गये विवाहों को सामान्य श्रेणी के अन्तर्गत रखा जाता है, द्वितीय श्रेणी के अन्तर्गत विधवा विवाह अपहरण विवाह या बलात विवाह को रखा जाता है।

बस्तर की ही तरह सरगुजा जिले में भी लोगों का जनजीवन विविधताओं से परिपूर्ण है। आदिम जातियो मे बस्तर की ही तरह युवा-विवाह प्रचलित है जब कि अन्य जातियो में बाल विवाह की प्रथा प्रचलित है। जंगली जातियां अत्यधिक गरीब व कष्टमय जीवन व्यतीत करती है जब कि मैदानी क्षेत्रों में रहने वाली जातिया सम्पन्न हैं। इस क्षेत्र के लोग अत्यधिक स्वच्छंदताप्रिय है तथा उनके प्रत्यक कार्यकलाप सौष्ठव वसुघड़ता से युक्त होते है।तमाखू प्रमुख विलास है, चावल प्रमुख भोजन।

सरगुजा जिले की ही एक अन्य रियासत उदयपुर में पिता ही विवाह करता है। वैवाहिक कार्यक्रमों में पंडितों की आवश्यकता नही होती है। विवाह का शुभ मुहूर्त्त गांवों की पंचायतों की माध्यम से निश्चित किया जाता है। पंडित के स्थान पर सात औरतें भांवरें डालने का कार्य सम्पन्न कराती हैं। इन औरतों को पारिश्रमिक के रूप में साड़ियां दी जाती हैं। विधवा विवाह प्रचलित है। पर उनमें किसी भी प्रकार की तड़क-भड़क नहीं होती। जाति पंचायत के सामने विधवा अपने भावी पति के द्वारा दी गई चूड़ियां व साड़ी पहन लेती है।

रायगढ़ जिले की जशपुर तहसील के आदिवासी ओरांव जो कि अब ईसाई-करण के प्रभाव मे आ गये है, में यद्यपि विवाह का प्रस्ताव माता-पिता के माध्यम से हो आता है परन्तु उनमे वर-वधू की स्वीकृति आवश्यक है। विवाह छत्तीसगढ़ के अन्य आदिवासी जातियों की तरह पूर्ण युवावस्था में ही होता है। विवाह के बन्धन शिथिल होते हैं। यदि पति विवाह की राशि (वधू मूल्य) अदा नहीं करता तो वैवाहिक संबंध तोड़ दिये जाते हैं। यहां पर लमसेना प्रथा नहीं है।

ओरांव जातियों में वर का छोटा भाई वधू के माथे पर सिंदूर लगाकर उसे अपनी भाभी बना लेता है। यदि कोई विधवा पुनर्विवाह करती है तो उसकी छोटी बहिन सिंदूर पोंछ देती है। दूसरा पति सिंदूर लगा देता है।

भूमि:–छतीसगढ़ में मुख्यतः चार प्रकार की भूमि पाई जाती है। १–कन्हार-काली व मटासी भूमि जो रबी फसल के लिए अधिक उपयुक्त होती है। २– मटासी-पीली मिट्टी, ३– डोरसा जो कन्हार और मटासी के बीच की होती है जो कि प्रायः सभी फसल के लिये उपयुक्त होती है। ४– जो कि कम उपजाऊ होती है और उसमें कोदो कुटकी आदि होती है।

खनिज:–खनिज सम्पदा के अन्तर्गत मुख्य रूप से चूने का पत्थर, डोलोमाइट, लोह खनिज, डल्ली राजहरा,,झरनदल्ली और बैलाडीला में खनिज लोहा का तथा चिरमिरी क्षेत्र में कोयले और लोहे का भंडार उपलब्ध है।

अर्थ व्यवस्था:–छतीसगढ़ मुख्य रूप से कृषि प्रधान क्षेत्र है। चावल यहां की मुख्य फसल है। ८१ प्र.श. आबादी इसी पर निर्भर है इनमें ६५ प्र. श. किसान और २१ प्रतिशत खेतिहर मजदूर, ६ प्र. श. उद्योग, २ प्र. श. व्यवसाय और ६ प्र. श. आबादी विभिन्न उद्योगों में लगी है।

खेती का क्षेत्रफल ४३ प्रतिशत है। ३४ प्रतिशत वनभूमि है। चावल प्रमुख फसल है। इसके अलावा दाल, कोदो, कुटकी और फलों की भी खेती की जाती है। कहीं कहीं गेहूं और तिलहन की भी खेती की जाती है। आदिवासी क्षेत्रों में कपास और जूट का भी उत्पादन होता है।

उद्योग:–कृषि उद्योग छतीसगढ़ में अधिक पाये जाते हैं।–धान प्रोसेसिंग का काम होता है। कुछ तेल की मीलें हैं। इसके अलावा इमारती लकड़ी, लाख और टसर संबंधी उद्योग कार्य कर रहे हैं। तेंदू पत्ते के कारण बीड़ी कारखानें भी हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ बड़े कारखाने भी है। जैसे:––भिलाई इस्पात कारखाना, बैलाडीला खनिज लौह उत्खनन प्रोजेक्ट, कोरवा में थर्मल एवं अल्यूमीनियम प्लान्ट का कार्य प्रारम्भ है। मांढर में सीमेंट का कारखाना, कांपा में वैगन रिपेयरिंग वर्कशाप आदि।

बड़े-बड़े शहरों के पास डेयरी उद्योग भी हैं। राजनांदगांव में सूती मिल रायगढ़ में जूट मिल और बिलासपुर में स्पिनिंग मिल। इसके अलावा हैण्डलूम मीलें भी हैं। कोसा उद्योग भी महत्वपूर्ण है। अल्यूमीनियम वर्तनों का निर्माण कारखाना भी है।

परिवहन व्यवस्था:–ब्रिटिश शासनकाल के पूर्व परम्परागत आवागमन के साधनों का उपयोग किया जाता था। मुख्य रेल लाईन है नागपुर कलकत्ता, बिलासपुर कटनी रायपुर, वाल्टेयर। रायपुर धमतरी, रायपुर, राजिम, भिलाई राजहरा, और बैलाडीला कोट्टा वालसा। इसके अतिरिक्त पक्की सड़क और राष्ट्रीय मार्ग भी हैं। भीतरी क्षेत्रों में आने-जाने के लिये यात्री बसें भी हैं। लेकिन दूरंदरोज के गांवों में आने जाने के लिये अभी भी बैलगाड़ी का उपयोग किया जाता है।

ग्रामीण व्यवस्थाऔर जागृति:–गांवों की आन्तरिक व्यवस्था और स्वशासन पर यहां किसी भी राजसत्ता ने हस्तक्षेप नहीं किया।प्राचीनकाल के ग्रामीण,बाद में मुखिया परिवार के वृद्धजनों के सहयोग से गांव की व्यवस्था के लिये उत्तरदायी हुआ करते थे। आगे चलकर यहीं से सुव्यवस्थित पंचायत व्यवस्था का विकास हुआ। जब तक पंचायतें स्वाधीन रहीं तब तक गांवों की जनता संतुष्ट और स्वावलम्बी रही। सत्ता के केन्द्रीकरण के कारण पंचायतों का महत्व समाप्त हुआ और शासकीय हस्तक्षेप के कारण लोगों में निराशा, भय और अविश्वास की भावना उपजी। पहले गांव के गोटियां, कोटवार, पटवारी सत्ता के प्रतिनिधि हुआ करते थ। लेकिन वे गांवों की परम्परागत व्यवस्था में दखल नहीं देते थे। मौर्यकाल से लेकर मराठों तक हमारे यहां पंचायतों का कार्य अबाधित गति से जारी रहा। जब तक देश में शान्ति रही, आवागमन निरापद रहा, तब तक ये गांव स्वावलम्बी के रूप में राष्ट्रीय जीवन को योग देते रहे। वैदेशिक आक्रमण और आधिपत्य, अपरिचित रीतिरिवाज और नए जीवन के मूल्य के कारण हमारे राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन के परम्प-

शासन ढांचे को एक धक्का लगा। धार्मिक कट्टरता, जातीय मदान्धता और छुआछूत की भावना से जकड़ा हुआ हमारा समाज इस प्रकार से लड़खड़ा गया।। चारों तरफ, अराजकता और सामाजिक संघर्ष का परिणाम यह हुआ कि हम अन्तर्मुखी, भीरु, संकोची और कूप-मण्डूक होते चले गये। बाह्य संपर्क टूटता गया, अज्ञानता बढ़ती गयी और छत्तीसगढ़ के गांव विकास और प्रगति की दौड़ में कोसों पीछे रह गये।

१९२० के आसपास मृत पंचायतों में प्राण फूंकने की अधूरी कोशिश की गई। एक पंचायत अधिनियम द्वारा गांव को कुछ जिम्मेदारियां सौंपी गयी लेकिन, ग्रामीणों में उत्साह का अभाव था। अतः अगले २५ वर्षों में केवल ११०० पंचायतें पूरे राज्य में स्थापित हो सकी, जब कि उस समय पुराने मध्यप्रदेश में गांवों की संख्या ४८ हजार थी। तहसील स्तर पर लोकल बोर्ड और जिले स्तर पर डिस्ट्रिक्ट कौंसिल कार्य कर रही थी। किन्तु उनका विधायक कार्य शिक्षा तक ही सीमित था। जो गांव मालगुजारी के अन्तर्गत आते थे वहां तो स्थिति और भी निराशाजनक थी। किसानों को कुछ भी कहने सुनने का अधिकार नहीं था।

कांग्रेस में गांधीजी के प्रवेश के साथ ही पार्टी ने राजनैतिक कार्यक्रम के अलावा "गांव चलो" का नारा बुलन्द किया। इन्होंने खादी और कुटीर उद्योग को स्वाधीनता संग्राम का अचूक अस्त्र घोषित किया।

स्वाधीनता के बाद नया पंचायत अधिनियम बना, जिसके अधीन गांवों की उन्नति के सारे कार्य पंचायतों को सौंप दिये गये। सन् १९६५ में पंचायती राज कानून पास हुआ और पंचायतों को व्यापक अधिकार और सत्ता के विकेन्द्रीकरण की व्यवस्था की गई।

१९५१ में मालगुजारी प्रथा का अन्त होने से न केवल गांवों का आर्थिक पुनरुत्थान हुआ बल्कि किसानों का आत्मविश्वास लौट आया है। उन्होंने लोकतंत्रीय समाज में कर्त्तव्य बोध के लिये समाजशिक्षण योजना का सूत्रपात किया। आर्थिक विकास के लिये सामुदायिक विकास कार्यक्रम आरम्भ किये गये। साक्षरता का प्रचार कर गांवों में बौद्धिक नवजागरण लाया गया और सामुदायिक विकास के जरिये किसानों के सामने आर्थिक सम्भावनाओं के द्वार खोल दिये गये। गांवों में जागृति लाने और उनकी राजनैतिक जागरूकता को बढ़ाने, राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने, अन्याय का प्रतिकार करने, समस्त सुविधाओं का अवसर की मांग के लिये संगठित होने तथा अपने अधिकारों की रक्षा के लिये संघर्ष करने की प्रेरणा गांवों को राजनैतिक दलों से प्राप्त हुई है। ग्राम चुनावों तथा स्थानीय चुनावों से ग्रामीण जनता को अपनी संगठित शक्ति का आभास मिला।

एक शताब्दी के पूर्व छत्तीसगढ़ में अज्ञान और अन्धविश्वास का अंधकार फैला हुआ था। रायपुर में केवल एक नार्मल स्कूल था ताकि कुछ पढ़ेलिखे व्यक्तियों घरेलू शिक्षा देने की व्यवस्था की जा सके। शिक्षा का अभाव था। परन्तु अब छत्तीसगढ़ के प्रत्येक प्रमुख कस्बे में हाई स्कूल व उच्च शिक्षा हेतु ३५ से अधिक विभिन्न महाविद्यालय एवं एक विश्वविद्यालय हैं ।

SEGAON WARDHA

10-6-38

Dear Raghavendra Rao —

I have your letter of 6th inst. Mahadev has already asked you to send a copy of your first letter. I want to work at it without in anyway disclosing your name. All I wish to say at this stage is that you should send facts & figures to support your conclusions.

Yours sincerely,

M. K. Gandhi

१९३३ में गांधी जी का रायपुर आगमन - हरिजन उद्धार हेतु। चित्र में गांधी जी, स्व. रविशंकर जी शुक्ल, श्री ईश्वरी चरण शुक्ल, स्व. भगवती चरण शुक्ल, श्री प्रभू लाल लखोटिया आदि दिखाई दे रहे हैं। श्री हजारी लाल जैन कार चालक हैं। (नवभारत के सौजन्य से)

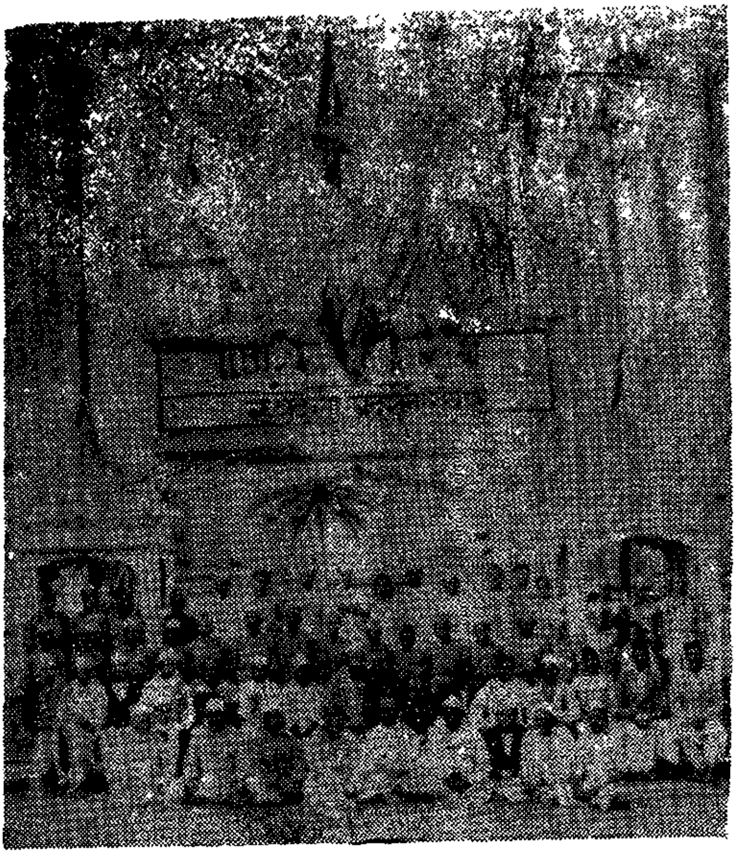

महात्मा गांधी जी के द्वारा १९३३ में उदघाटित स्वदेशी प्रदर्शनी - आयोजनकर्त्ताओं के चित्र। चित्र में अध्यक्ष स्व. पं रविशंकर जी शुक्ल, स्व. डा. राधा बाई, अब्दुल रऊफ, महन्त लक्ष्मीनारायण दास, नन्दकुमार दानी, और वामनराव लाखे, आदि दिखाई दे रहे हैं। चित्र श्रीमती प्रकाशवती मिश्र के सौजन्य से

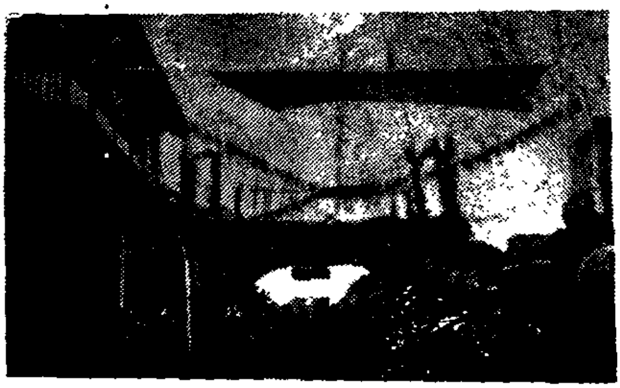

भाटापारा में १९३३ में गांधी जी के स्वागतार्थ बनाया गया, स्वागत द्वार, छायाकन श्री अब्बास भाई।

छत्तीसगढ़ पर गांधी जी के व्यक्तित्व का प्रभाव

–श्री हरि ठाकुर

सन् १८५७ के विद्रोह के पश्चात् अनेक वर्षों तक अंग्रेजी सत्ता द्वारा भारतीय जनता पर दमन चक्र चलता रहा। राष्ट्रीय चेतना को प्रज्वलित रखने के लिए सर्वाधिक कार्य लोकमान्य तिलक ने किया। किन्तु तिलक युग तक अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध जो भी आन्दोलन हुए वे मुख्यतः बौद्धिक स्तर पर हुए और इन आन्दोलन का नेतृत्व कुछ बुद्धजीवी लोगों के हाथों में ही रहा।

सन् १९२० के कुछ पूर्व गांधीजी ने भारतीय राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा उन्होंने भारतीय जनता को ऐसे नये कार्यक्रम दिये जिनकी ओर सर्व साधारण जनता का ध्यानाकर्षित हुआ। सन् १९१९ में रोलेट एक्ट पास हुआ जिसके खिलाफ सारे देश में गांधीजी ने आवाज बुलन्द की और यही वह समय था जब देश का नेतृत्व तिलक के हाथों से गांधीजी के हाथों में आया। इस एक्ट के विरुद्ध गांधीजी ने सत्याग्रह की घोषणा की और उसी माह इतिहास प्रसिद्ध जलियाना वाला बाग की घटना घटी। जलियाना वाला बाग हत्या कांड से सारे देश में अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध आक्रोश की भावना में वृद्धि हुई और इसका लाभ गांधीजी ने उठाया।

देश को गांधीजी ने सर्वप्रथम सत्याग्रह का मार्ग सुझाया। आगे चलकर सत्याग्रह भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन का अमोघ अस्त्र साबित हुआ। सन् १९२० के मध्य में छत्तीसगढ़ में भी सत्याग्रह आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। जुलाई माह में धमतरी तहसील के कन्डेल नामक ग्राम में नहर सत्याग्रह आरम्भ हुआ। इस सत्याग्रह के सूत्रधार थे पं. सुन्दरलाल शर्मा, नारायण राव मेघावाले तथा छोटेलाल बाबू। सत्याग्रह छिड़ने के निम्नलिखित मुख्य कारण थे:—

१– नहर विभाग द्वारा इस गांव के निवासियों पर चोरी का झूठा आरोप लगाया जाना।

२– नहर विभाग द्वारा गांव के निवासियों से जबरन व नाजायज ढंग से जुर्माने की रकम वसूल करना।

३– जुर्माने की रकम वसूल करने के लिये ग्रामवासियों पर अत्याचार करना।

नहर विभाग के अत्याचारों का विरोध करने के लिये जुलाई माह में इसी गांव में एक सभा हुई जिसे पं. सुन्दरलाल शर्मा, नारायण राव मेघावाले तथा छोटेलाल बाबू ने संबोधित किया। इसी सभा में अंग्रेजी नौकरशाही के अत्याचारों के विरुद्ध सत्याग्रह करने की घोषणा की गई।" और यह भी निर्णय लिया गया कि गांव में कोई भी व्यक्ति जुर्माने की रकम शासन को न दे। फलस्वरूप गांववालों की मवेशियां कुर्क कर ली गई। जब ये मवेशियां बाजारों में नीलाम करने के लिए ले जायी जाती तब वहां सरकारी कर्मचारी को कोई बोली बोलने वाला नहीं मिलता। इस प्रकार यह सत्याग्रह दिसम्बर माह तक चलता रहा। साथ ही अंग्रेजों का दमन चक्र भी बढ़ता गया।

अन्त में इस सत्याग्रह के नेताओं ने गांधीजी से पत्र-व्यवहार किया। और गांधीजी ने इस सत्याग्रह का मार्ग-

दर्शन करना स्वीकार किया। गांधीजी उस समय बंगाल का दौरा कर रहे थे। उन्हें बुलाने के लिये पं. सुन्दरलाल शर्मा गये।

२० दिसम्बर सन् १९२० को महात्मा गांधी का प्रथम बार रायपुर आगमन हुआ। उसी दिन उन्होंने गांधी चौक में अपार जनसमूह को संबोधित किया। रायपुर से गांधीजी मोटर द्वारा धमतरी और कुरुद गये। मार्ग में स्थान-स्थान पर ग्रामवासियों ने उनका जोरदार स्वागत किया। गांधीजी के आगमन के साथ ही कंडेल सत्याग्रह स्थगित हो गया था। क्योंकि अंग्रेजी नौकरशाही ने सत्याग्रहियों के सामने अपने घुटने टेक दिये थे। इसलिये गांधीजी धमतरी से ही वापस लौट आये। धमतरी और कुरुद से वापस लौटने पर गांधीजी पुनः रायपुर में रुके और उन्होंने महिलाओं की एक विशाल सभा को सम्बोधित किया। महिलाओं से गांधीजी ने 'तिलक स्वराज्य' फण्ड के लिए मांग की और उन्हें तुरन्त दो हजार रु. के मूल्य के गहने प्राप्त हुए।

सन् १९२० में छत्तीसगढ़ के निवासियों पर गांधीजी के व्यक्तित्व का जो प्रभाव पड़ा उसकी एक झलक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री प्रभुलाल काबरा के शब्दों में इस प्रकार है:—'मैंने गांधीजी को रायपुर के प्लेटफार्म पर देखा। डाक गाड़ी से लोकमान्य तिलक, दादा साहेब खापर्डे डा. मुंजे आदि कलकत्ता जा रहे थे। प्लेटफार्म पर ये सब नेता (फर्स्ट क्लास) प्रथम वर्ग या द्वितीय वर्ग से उतरे किन्तु उनमें एक गांधीजी नहीं थे। जनसमूह की आंखें गांधीजी को ढूंढ़ रही थीं। किसी ने बताया कि वे तृतीय वर्ग में बैठे हैं। जनता उधर दौड़ी तो उन्होंने देखा कि लुंगी और पट्टी बंडा कुरता पहिने गांधीजी दोनों हाथ जोड़े हुए दरवाजे पर खड़े हैं। तब तक गाड़ी चलने लगी थी जनता के मुंह पर एक ही बात थी देखो गांधी तृतीय वर्ग में जा रहा है।' उनकी सादगी को देखकर अनेक लोग भावुकता में पड़े। लोगों को यह विश्वास हुआ कि गरीब और दलित भारतीय जनता का नेतृत्व गांधी ही कर सकता है। २६ दिसम्बर १९२० को नागपुर में विजय राघवाचार्य की अध्यक्षता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ। इसी अधिवेशन में गांधीजी ने सत्याग्रह की घोषणा की। इस सत्याग्रह की भूमिका गांधीजी ने छत्तीसगढ़ की जनता को रायपुर, धमतरी व कुरुद की सभाओं में २० दिसम्बर को ही समझा दी थी। इस अधिवेशन में भाग लेने के लिये छत्तीसगढ़ से पं. सुन्दरलाल शर्मा, ठा. प्यारेलाल सिंह सखाराम दुबे आदि नेता गये थे।

उपर्युक्त सत्याग्रह की निम्नलिखित रूपरेखा तैयार की गई थी:—

१– सरकारी लगान न पटाना।
२– सरकारी उपाधियों का त्याग।
३– अंग्रेजी शिक्षा का बहिष्कार तथा राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना।
४– विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं स्वदेशी का प्रचार।
५– वकीलों द्वारा वकालत त्यागकर राष्ट्रीय पंचायतों की स्थापना।
६– कौंसिल का बहिष्कार
७– मद्य-निषेध का प्रचार।

इस सत्याग्रह की घोषणा के फलस्वरूप ठा. प्यारेलाल सिंह ने हमेशा के लिए वकालत छोड़ दी और सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया। रायपुर जिले में वकालत छोड़ने वाले वकील—पं. रामनारायण तिवारी। इसके साथ ही पं. यादवराव देशमुख ने जो उस समय जिला कौंसिल के सभासद थे, त्यागपत्र दे दिया। उपाधि त्यागने वालों में से प्रमुख थे, रायसाहेब वामन राव लाखे, रायसाहेब बैरिस्टर कल्याणजी मोरारजी थेकर, सेठ गोपीकिसन तथा खान साहेब काजी असगर खां। उपाधि त्याग के ही दिन पं. वामन राव लाखे का एक आम सभा में सार्वजनिक सम्मान किया गया

और जनता की ओर से 'लोकप्रिय' की उपाधि से विभूषित किया गया। बैरिस्टर 'केकर' ने जो विधानसभा के चुनाव में उम्मीदवार थे उन्होंने चुनाव का बहिष्कार किया। श्री बाजीराव कृदत्त जो धमतरी-महासमुन्द क्षेत्र से निर्विरोध चुनकर आये थे, उन्होंने इस सत्याग्रह के समर्थन में तत्काल अपना त्यागपत्र भेज दिया। इस बीच दो बार चुनाव की घोषणा की गई व दोनों बार स्थगित कर दी गई।

तीसरी बार भी इस जिले से किसी उम्मीदवार ने चुनाव में भाग नहीं लिया। इस प्रकार छत्तीसगढ़ की जनता ने देशसेवा के सामने पदलिप्सा को ठुकराकर त्याग का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस बीच गांव-गांव में सत्याग्रह के उद्देश्यों का प्रचार किया गया, सभायें की गईं और जनमानस को तैयार करने के लिये साहित्य बांटा गया। उपर्युक्त कार्यक्रमों में गांधीजी ने मद्य-निषेध को अत्याधिक प्रमुखता दी। जब वे रायपुर के दौरे पर थे तब उन्हें रायपुर के राजकुमार कालेज में भाषण देने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने विद्यार्थियों के सामने अपने विचार प्रकट करते हुए अंग्रेज प्रिंसिपल की उपस्थिति में ही कहा था कि बच्चो–अंग्रेजों के संपर्क में आकर उनके सद्‌गुण तो जरूर लेना लेकिन मद्यपान व जुवा सरीखे उनके राष्ट्रीय दुर्गुणों से बाल-बाल बचने के लिए प्रयत्नशील रहना। उनके इस वाक्य में अंग्रेज जाति व उसके राष्ट्रीय चरित्र पर सीधे आक्षेप है।

सन् १९२० में ही अप्रैल माह में ठा. प्यारेलाल सिंह के नेतृत्व में राजनांदगांव के मील के मजदूरों ने ३० दिनों की लम्बी हड़ताल की। लोगों का कहना है कि देश के मजदूर आन्दोलन के इतिहास में यह सबसे पहली लम्बी हड़ताल थी। इस हड़ताल ने समूचे देश का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया तथा छत्तीसगढ़ के मजदूर आन्दोलनों और रियासतों में जनजागरण के संबंधों में गांधीजी ठाकुर प्यारेलाल सिंह जी से बराबर सम्पर्क बनाये रखते रहे। इस आन्दोलन के सिलसिले में ठाकुर साहब को राजनांदगांव स्टेट की सीमा से बाहर निकाले जाने का हुक्म दिया गया।

सन् १९२० का आन्दोलन समाप्त होते होते सन् १९२१ के आरम्भ में आन्दोलन फिर जोर मारने लगा। अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के विरोध में सारे देश में राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना की गई। रायपुर में भी ५–२–१९२१ को सेठ गोपीकिसन, बाल किसन तथा रामकिसन की दानशीलता से राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना हुई। इस विद्यालय के संचालन समिति के मंत्री पं. बामन राव लाखे चुने गये। उस समय इस विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या २४० थी। शिक्षा का माध्यम हिंदी था। साथ ही सूत कातना, कपड़ा बुनना, लोहारी, बढ़ईगिरी आदि की शिक्षा की भी व्यवस्था थी ताकि इस विद्यालय का विद्यार्थी विदेशी सत्ता के समक्ष नौकरी के लिये हाथ न फैलाए।

इसी समय धमतरी में छोटेलाल बाबू ने अपने घर में (धमतरी) खादी उत्पादन केन्द्र खोला तथा अंग्रेजी शिक्षा छोड़कर आने वाले विद्यार्थियों की शिक्षा की भी व्यवस्था की। छोटेलाल बाबू ने इस संस्था को सन् १९२४ तक चलाया और इस बीच उन्हें २० हजार का घाटा उठाना पड़ा।

सन् १९२२ में वनविभाग की नादिरशाही के विरोध में सिहावा के आदिवासियों ने सत्याग्रह आरम्भ किया। इस सत्याग्रह के प्रणेता पं. सुन्दरलाल शर्मा थे। इस सत्याग्रह के पीछे मुख्य कारण था आदिवासियों को जंगल से उनका 'निस्तारी हक' दिलाना। इस सत्याग्रह में पं. सुन्दरलाल शर्मा, नारायण राव मेघावाले, श्यामलाल सोम, प. गिरधारीलाल आदि नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। पं. सुन्दरलाल शर्मा को एक वर्ष की तथा मेघावाले को ८ माह की सजा दी गई। सन् १९२१-२२ में केवल रायपुर नगर से ही गांधीजी को तिलक स्वराज्य फंड में १९६३४ रु० प्राप्त हुए। कृषकों में भी उत्साह कम नहीं था। हजारों किसानों ने नागर पीछे दो दो काठा धान दिया। मद्य-निषेध का कार्यक्रम भी जोरों से चलता रहा। सन् १९२१ में स्थिति यह थी कि शराब, गांजा और अफीम की नीलामी बोलने वाला कोई नहीं

मिला। धमतरी में कुछ ठेकेदारों ने लोकमत की उपेक्षा करके दो-एक दूकानें खोली किन्तु उनकी दूकानों के सामने लगातार धरना दिया गया और ये दूकानें ठप्प पड़ गई।

अछूतोद्धार का कार्यक्रम भी इस क्षेत्र में सफलतापूर्वक संचालित होता रहा। यों तो पं. सुन्दरलाल शर्मा ने सतनामियों को जनेऊ-धारण करने की अनुमति देकर उनका सामाजिक दर्जा उठाने का कार्य अनेक वर्ष पूर्व ही आरम्भ कर दिया था, किन्तु सन् १९२० के आसपास सतनामी पंथ के गुरुओं ने भी इस प्रभाव में रुचि लेना आरम्भ कर दिया और गांधीजी की शिक्षा के प्रभाव में आकर महन्त नैनदास ने अहिंसा के पालन तथा गोवध-निषेध का प्रचार आरम्भ किया व महन्त नैनदास ने अपने समाज के लोगों को आदेश दिया कि वे शराब तथा अन्य मादक वस्तुओं का प्रयोग न करें। राजनांदगांव के पंडित छबीराम चौबे ने छुआछूत के विरोध में २१ दिनों का उपवास किया जो उल्लेखनीय है।

इन कार्यक्रमों के साथ सन् १९२१ में स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का भी खूब जोर रहा। हजारों लोगों ने विदेशी वस्तुओं की होली जलायी और खादी पहनना शुरू कर दिया। अनेक स्थानों पर खादी उत्पादन केन्द्र खोले गये। रायपुर नगर कांग्रेस समिति ने नगर में गरीबों को ४६० चरखे मुफ्त में बांटे। सूत कातने की प्रतियोगिता तथा खादी वस्त्रों की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। रायपुर नगर में केवल दो व्यापारियों को छोड़कर शेष सभी ने विदेशी वस्त्र बिक्री न करने की प्रतिज्ञा ली। हजारों थान विदेशी वस्त्र गोदामों में पड़े सड़ते रहे। यही स्थिति छत्तीसगढ़ के अन्य प्रमुख नगरों और जिलों की भी थी। १९२१ में ही अदालतों का बहिष्कार करके राष्ट्रीय पंचायतों की स्थापना की गई।

सन् १९२३ में नागपुर में इतिहास प्रसिद्ध झण्डा सत्याग्रह आरम्भ हुआ। देश के कोने-कोने से इस सत्याग्रह में भाग लेने के लिये स्वयंसेवक आये। छत्तीसगढ़ से भी हजारों की तादाद में सत्याग्रही नागपुर गये और गिरफ्तार हुए। गांधीजी ने इस आन्दोलन में भाग लेने वालों को कहा था 'शेर का पेट इतना भर दो कि वह फूट जाय' और हुआ भी यही। इतनी अधिक मात्रा में गिरफ्तारियां हुई कि जेलों में इनकी व्यवस्था न हो सकी।

सन् १९३०–३२ में गांधीजी के आह्वान पर अनेक आन्दोलन तथा सत्याग्रह हुए। सन् १९२९ में लाहौर कांग्रेस में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव कांग्रेस ने पारित किया। २६ जनवरी १९३० के दिन पूर्ण स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा ली गई। उसी समय देश में सशस्त्र क्रांति का आन्दोलन भी अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका था। भगतसिंह और उसके साथियों को फांसी की सजा सुना दी गई थी। देश का वातावरण अत्यन्त उग्र था। इसी अवसर पर गांधीजी ने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष की घोषणा की। छत्तीसगढ़ में भी नमक कानून तोड़ा गया। मादक द्रव्य बेचने वालों दुकानों के सामने धरना दिया गया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। श्री रविशंकर शुक्ल आन्दोलन के पहले ही जबलपुर में गिरफ्तार कर लिये गये थे। उस समय रायपुर जिले का नेतृत्व इन पांच नेताओं के कंधों पर था। वामन राव लाखे, ठा. प्यारेलाल सिंह, महंत लक्ष्मीनारायण दास, शिवदास डागा तथा मौलाना अब्दुल रऊफ। किसी अज्ञात कवि ने १९३१ में इस आन्दोलन का आंखों देखा सजीव वर्णन किया:—

भैया पांचों पाण्डव कहिये, जिनको नाम सुनाऊं,
लाखे वामन राव हमारे, धर्मराज को है अवतार।
भीमसेन अवतारी जानों, लक्ष्मीनारायण जिनको नाम,
डागा सहदेव नाम से जाहिर, रऊफ नकुल को है अवतार।
ठाकुर अर्जुन के अवतारी, योद्धा प्यारेलाल सरदार।।

सन् १९३० में ही कृषकों पर लगान बढ़ाये जाने के विरोध में ठाकुर प्यारेलाल सिंह के नेतृत्व में पट्टा मत लो आन्दोलन छेड़ा गया।

महासमुन्द के 'तमोरा' नामक स्थान में ग्रामीणों ने जंगल अधिकारियों ने नादिरशाही के विरुद्ध जंगल सत्याग्रह आरम्भ किया। शंकर राव गनौद वाले तथा यतियतन लालजी ने इसी आन्दोलन का नेतृत्व किया। हरिमर्दन गिरि इस आन्दोलन के डिक्टेटर नियुक्त किये गये। इस आन्दोलन में सैकड़ों सत्याग्रहियों के साथ शंकर राव गनौदवाले भी गिरफ्तार किये गये। लगभग एक माह तक यह आन्दोलन चला। इस आन्दोलन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने का भार ठाकुर प्यारेलाल सिंह पर सौंपा गया। इसी बीच 'तानवट नयापारा' में गोलीकांड हुआ तथा नवागाव मे भी जगल सत्याग्रह हुआ। जगह-जगह १४४ धारा लगी और सत्याग्रहियों ने उन्हें तोड़ा।

१९३० के आन्दोलन के विषय में पं. रामदयाल तिवारी ने लिखा है–सन् १९३० का सत्याग्रह इतना तीव्र था कि लार्ड इरविन को जो उस समय वायसराय थे, गांधीजी से समझौता करने के लिये झुकना पड़ा। यह आन्दोलन जनता के हृदय में राष्ट्रीय स्वाभिमान का एक व्यापक प्रभाव छोड़ गया।

सन् १९३१ को पुनः गांधीजी ने आन्दोलन की घोषणा की। रायपुर जिले में आन्दोलन के संचालन हेतु आठ डिक्टेटर नियुक्त किये गये। २६ जनवरी को ठाकुर साहब पहले गिरफ्तार हुए। बाद में पं. रविशंकर शुक्ल, शंकरराव गनौद-वाले, पं. सुन्दरलाल शर्मा, श्रीमती राधाबाई, माधव प्रसाद परघनिया, रामनारायण, हरगुल मिश्र,ब्रह्मदेव दुबे तथा लक्ष्मीप्रसाद तिवारी। १२–१–१९३२ को यतियतन लाल अपने दो साथी क्रांतिकुमार भारती तथा सत्यनारायणदास के साथ महासमुन्द गांव में गिरफ्तार कर लिये गये। अंधियारखोर वाले भगवती प्रसाद मिश्र भी उसी समय गिरफ्तार कर लिये गये। १५ फरवरी को पं. रविशंकर शुक्ल, महन्त लक्ष्मीनारायण दास, नन्दकुमार दानी, रऊफ, डा. खूबचन्द बघेल आदि नेता एक ही दिन गिरफ्तार कर लिये गये। इन गिरफ्तारियों के आन्दोलन का नेतृत्व शंकर राव गनौदवाले पर आ गया। २९ मार्च को गनोदवाले तथा डा. लेतानाथ तिवारी के साथ अन्य सत्याग्रही गिरफ्तार कर लिये गये।

उसी दिन कुछ महिलाओं ने कीकाभाई की दुकान पर धरना दिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हे पुलिस के अभद्र व्यवहार का शिकार होना पड़ा। कोतवाली तक उन्हें सड़क पर घसीटते हुए ले जाया गया।

२० अप्रैल को पं. सुन्दरलाल शर्मा के साथ श्यामलाल सोम आदि नेता गिरफ्तार किये गये। १३ जून को एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए श्रीमती राधाबाई भी गिरफ्तार हो गई। ३१ जुलाई को आपत्तिजनक पर्चा बाटने के जुर्म में रामनारायण हर्षुल भी गिरफ्तार हो गये। ३१ दिसम्बर तक लगभग ४०० लोग गिरफ्तार हुए उनमें से १८ महिलायें थीं।

सन् १९४० के नवम्बर माह में गांधीजी के आदेशानुसार व्यक्तिगत सत्याग्रह आँरम्भ हुआ। इस सत्याग्रह में श्री रविशंकर शुक्ल , महन्त लक्ष्मीनारायण दास, वैष्णवदास, नैनदास, शिवदास डागा, यतियतनलाल. अनन्तराम बरछिया, वामनराव लाखे, नन्दकुमार दानी, लक्ष्मी प्रसाद तिवारी आदि नेताओं की गिरफ्तारियां हुई। सैकड़ों की संख्या मे लोग जेल गये। यह आन्दोलन शीघ्र ही समाप्त हो गया।

९ अगस्त सन् १९४२ को बम्बई में कांग्रेस ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने की अंतिम चेतावनी दी और गांधीजी ने देशवासियों को 'करो या मरो' का अंतिम मंत्र दिया। ९ अगस्त के प्रातःकाल ही देश के तमाम शीर्षस्थ नेता गिरफ्तार कर लिये गये। हड़तालों और प्रदर्शनों का स्थान-स्थान पर आयोजन किया गया. फलस्वरूप अंग्रेजी सत्ता का दमनचक्र भी तीव्रता के साथ आरम्भ हो गया। ठा. छेदीलाल बम्बई मे ही गिरफ्तार कर लिये गये। प. शुक्ल, महन्त लक्ष्मीनारा-यणदास, शिवदास डागा, आदि नेता बम्बई से नागपुर आते समय मार्ग में गिरफ्तार कर लिये गये तथा ९अगस्त को रायपुर में बड़ी उत्तेजना के साथ एक विराट जुलूस निकाला जो नगर के इतिहास मे अभूतपूर्व था। कंकाली अस्पताल के पास जुलूस के पहुंचने पर रामानन्द दुबे, राजेन्द्रकुमार चौबे. मानिकलाल चतुर्वेदी आदि नेता गिरफ्तार कर लिये गये।

मांग में अन्य नेता भी गिरफ्तार कर लिये गये। इन गिरफ्तारियों के बावजूद भी जुलूस संयम के साथ आगे बढ़ता गया और गांधी चौक में आम-सभा के रूप में परिणित हुआ। उस दिन सभा की कार्यवाही डा. खेतानाथ तिवारी की अध्यक्षता में हुई। कुछ ही घंटों में ५६ लोगों को गिरफ्तार किया गया। दूसरे दिन स्कूल तथा कालेज के विद्यार्थियों ने जुलूस निकाला और प्रदर्शन किये। रणवीर शास्त्री उसी दिन गिरफ्तार हुए। उसके पश्चात नित्यप्रति कार्यक्रम चलता रहा। जुलूस निकलते रहे, प्रदर्शन होते रहे, गिरफ्तारियों का सिलसिला चलता रहा। नगर के प्रायः सभी प्रमुख नेता गिरफ्तार किये जा चुके थे। रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर आदि प्रमुख नगरों में आन्दोलन की ज्वाला फैल चुकी थी और सैकड़ों की तादाद में गिरफ्तारियां होती रहीं। इस आन्दोलन में छात्रों ने मुख्य भूमिका अदा की क्योंकि शीर्षस्थ नेताओं के जेल के भीतर चले जाने से जनता नेतृत्वविहीन हो गई थी। इस आन्दोलन को विद्यार्थियों ने ही नेतृत्व प्रदान कर प्रगतिशील बनाये रखा। उस समय के प्रमुख नेताओं के रूप में काम करने वाले ठा. रामकृष्ण सिंह, बल्लभ गुप्ता, कमलनारायण शर्मा, सच्चिदानन्द सिंह आदि सितम्बर मास में गिरफ्तार कर लिये गये। सितम्बर मास तक रायपुर जिले में लगभग ४०० लोगों की गिरफ्तारियां हुई।

विद्यार्थियों ने इस स्वातंत्र्य आन्दोलन के प्रति अभूतपूर्व उत्साह देखा गया। कुछ उत्साही नौजवानों ने जोश में आकर तोड़-फोड़ तथा हिंसात्मक कार्यवाहियां की, जैसे टेलीफोन के तार काटना, रेल की पटरियां उखाड़ना, जेल की दीवारें तोड़ना आदि। जेल की दीवार तोड़ने के सिलसिले में जयनारायण पांडेय, नारायणदास राठौर, नागरदास बवरिया आदि पर मुकदमे भी चले। आन्दोलन जो कि तमाम देश में हिंसात्मक रूप अपनाता जा रहा था, छत्तीसगढ़ में पूर्णतः अहिंसात्मक रहा। इसका श्रेय उन नेताओं को है जो गिरफ्तार न होकर जेल नहीं गये और बाहर ही रही जनता और नौजवानों में स्फूर्ति भरते रहे। रायपुर जिले में महीनों यह आन्दोलन चलता रहा। क्योंकि ठा. प्यारेलाल सिंह तथा लक्ष्मणराव जी उद्गीरकर कुशलतापूर्वक इस आन्दोलन का संचालन करते रहे। कुछ स्थानों पर लाठी चार्ज तथा गोलियां भी चलीं।

इस जिले में शासन की ओर से हिंसात्मक कार्यवाही इसलिये नहीं हुई कि उस समय श्री आर. के. पाटिल डिप्टी कमिश्नर थे जो अंग्रेजी सत्ता की सेवा में रहते हुए भी अपनी राष्ट्रीय विचारधारा के लिये प्रसिद्ध थे। अंग्रेजों के नौकरी में रहते हुए भी आदतन खादी के कपड़े पहनते थे। अन्यथा इस जिले में भी अंग्रेजी नौकरशाही के सामने खुलकर हिंसात्मक कार्यवाही करने का पूरा अवसर था।

संक्षेप में छत्तीसगढ़ का यह क्षेत्र सन् १६२० से बराबर गांधीजी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर जनजागरण स्वातंत्र्य आन्दोलन तथा राष्ट्रीय चेतना में प्रमुख रूप से भाग लेता रहा। सभी जाति तथा सभी वर्ग के लोगों ने इस आन्दोलन में अपने सारे भेदभाव मिटाकर भाग लिया और जब जब गांधीजी ने आन्दोलन की घोषणा की हजारों की संख्या में इस क्षेत्र के लोग कूद पड़े। अनेक परिवार स्वातंत्र्य आन्दोलन में जूझते-जूझते आर्थिक दृष्टि से बरबाद हो गये। इस क्षेत्र में गांधीजी का दो बार आगमन हुआ और उन्होंने अपने व्यक्तित्व तथा विचारधारा से सर्वसाधारण को अत्यधिक प्रभावित किया। अनेक राष्ट्रीय संस्थायें तथा खादी एवं ग्रामोद्योग केन्द्र खुले। उनके माध्यम से ना केवल जनता को स्वावलम्बन की शिक्षा मिली वरन् स्वातंत्र्य आन्दोलन के लिये तपे हुए निष्ठावान सैनिक भी मिले। गांधीजी ने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध न केवल राष्ट्रीय चेतना को प्रज्वलित किया वरन् उन्होंने भौतिक बल को भी उतना ही महत्व दिया।

इस आन्दोलन के संदर्भ में हम उन लोगों को भी नहीं भूल सकते जो अंग्रेजी सत्ता के अंतिम क्षणों तक अंग्रेजों की चापलूसी और अपनी स्वार्थसिद्धि में लगे रहे किन्तु आजादी की घोषणा होते ही रातों रातों अपना चोला बदल लिया। ऐसे संदिग्ध चरित्र के व्यक्तियों के हाथों में नेतृत्व आ जाने के कारण ही इस क्षेत्र से गांधीजी के सिद्धान्तों तथा आदर्शों का पतन होता दिख रहा है। गांधीजी ने इस देश को एक नया जीवन दर्शन दिया था। उस जीवन दर्शन को आगे बढ़ाने के लिए जिस निष्ठावान नेतृत्व की आवश्यकता थी उसका अभाव होता गया।

छत्तीसगढ़ का किसान आंदोलन

—केयूर भूषण मिश्र

छत्तीसगढ़ पूर्णरूपेण एक कृषि प्रधान देश है। फलस्वरूप यहां की समस्या मूलतः किसानों की ही समस्या रही है। अंग्रेजों के शासनकाल के पूर्व यह क्षेत्र बाह्य शोषण से मुक्त था। क्षेत्र की आबादी कम और उत्पादन विपुल होने के कारण किसानों के समक्ष किसी प्रकार की कोई तात्कालिक समस्या नहीं थी। किसान राजा को नजराना देकर अपनी हल चलाने की क्षमतानुसार खेती करता था और भूमि पर गांवों का सामूहिक अधिकार रहता था। अंग्रेजी शासनकाल में पहली बार भूमि की व्यवस्था की गई और भूमि कराधान के अन्तर्गत लाई गई और सामान्ती शोषण के तरीके को राज्य की ओर से मान्यता प्राप्त हुई। किसानों का शोषण प्रारंभ हुआ। यह सब १८५७ के बाद की व्यवस्था थी।

इस तरह सामन्ती प्रथा के साथ ही साथ बेगारी प्रथा का भी जन्म हो गया और किसान बेगारी प्रथा का शिकार होने लगा। बेगारी प्रथा कई चरणों में ली जाती थी। किसानों से बेगारी मुकद्दम लेता था और मुकद्दम से बेगारी मालगुजार लेता था, मालगुजार से बेगारी जमींदार और जमींदारों से बेगारी अधिकारीगण लेते थे। इस तरह बेगारी के रूप में शोषण नीचे से ऊपर तक चलता था। ठीक इसी तरह रजवाड़ों में राजा जमींदारों से बेगार करवाता था और राजाओं से बेगार पोलीटिकल एजेंट लेता था।। इस बेगारी प्रथा के खिलाफ छत्तीसगढ़ के किसानों ने आवाज उठाई। राष्ट्रीय आन्दोलन के पहले भी बेगार प्रथा के खिलाफ आन्दोलन रजवाड़ों की जनता ने उठाया। राजनांदगांव इस दिशा में अग्रणी रहा। महन्त घासीदास १८७९ में अंग्रेजों की ओर से रूलिंग चीफ नियुक्त किये गये। राजनांदगांव नगर बना, और गांवों में बेगारी बढ़ी। किसान त्रस्त होने लगे। इस बेगार प्रथा के खिलाफ सेवता ठाकुर ने प्रथम बार बगावत की और सरगुजा स्टेट में बागुड़ बानियां और बिगड़ किसान ने विद्रोह किया। १९१०-११ में बस्तर राज्य के गुण्डा गोंड़ ने बगावत की थी, जिसका एकमात्र कारण कोर्ट आफ वार्ड में बस्तर के किसानों से ली जा रही बेगार प्रथा ही है।

छत्तीसगढ़ में किसानों की समस्या को ही आधार बनाकर कांग्रेस ने अपना आन्दोलन प्रारंभ किया और कांग्रेस का प्रारंभिक रूप जनता के समक्ष प्रस्तुत हुआ। स्व. पं. सुन्दरलालजी शर्मा, छोटेलाल बाबू, नत्थूजी जगताप, नारायणराव जी मेघावाले ने आगे आकर किसानों के आन्दोलन को एक नई दिशा दी। कन्डेल ग्राम का नहर पानी का सत्याग्रह किसानों का ही सत्याग्रह था। जिसका नेतृत्व किसानों के हाथों रहा। कन्डेल सत्याग्रह सन् १९१७ में प्रारंभ हुआ और १९२० में इस सत्याग्रह ने सफलता प्राप्त की। इस सत्याग्रह पर गांधीजी के चम्पारन सत्याग्रह का भी प्रभाव पड़ा क्योंकि किसानों ने इस सत्याग्रह के संचालन में अहिंसा को आधार बनाया था। नहर पानी का कर और जुर्माना न देने के कारण कन्डेल ग्राम के किसानों के मवेशियों को बलपूर्वक पकड़कर उन्हें नीलाम करने हेतु बड़े-बड़े शहरों में ले जाया जाता था। कंडेल के सत्याग्रही किसानों और अन्य स्वयंसेवकों के नैतिक प्रभाव और समझाने-बुझाने के कारण मवेशियों के लिये नीलामी की बोली नहीं बोली जाती थी अंततः शासन को झुकना पड़ा।

कंडेल नहर सत्याग्रह के बाद जो जंगल सत्याग्रह प्रारंभ हुआ उसके पीछे भी किसान जंगल में अपनी निस्तारी

हक प्राप्त करने के लिये लड़ रहे थे। किसान स्वराज्य के साथ, मालगुजारी प्रथा की समाप्ति, लगान माफी, भूमिहीनों को जमीन और महाजनों के शोषण से मुक्ति चाहते थे। इसीलिये स्वराज्य की लड़ाई में छत्तीसगढ़ का किसान आगे आया। इसका प्रभाव उस समय के किसान नेता मुंगेली निवासी श्री गणपतलाल बैस, लिखित साहित्य से जाना जा सकता है। उनका यह साहित्य प्रथम आम चुनाव १९३७के पहले,को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था। उन दिनों श्री गणपत-लालजी कांग्रेस के प्रमुख थ, साथ ही किसान संघ के मंत्री भी थे। किसान रामायण के मालगुजार कांड को देखिए:—

धनिक, मालगुजार, साहूकार,जमींदार अरू मालगुजारा हैं

जितने सरकारी चाकर, चपरासी. पटवारी. अफसर
जो हैं लिखे पढ़े बुधवन्ता, पंडित, साधु. गुरू महंता
इनमें बहु पाखंडी लोगा, दयाहीन रचारत रथ भोगा।
इसके आगे धूर्त मालगुजार के लक्षण बताते है:—
जब बेचे निज खेत किसाना, ले लेवें आधा नजराना,
खोटनी के सम खोटत रहना, अक गइय्या सम दुहत रहना,
अंगुल के नौ हाथ बनावें, किसान की पूंजी झरावें,
उपर खेती किसान बनावें, लन्द फन्द कर उसे नगावैं,
कृषकन की बहू-बेटी, उन पर दृष्टि देत,
बात खुले तब पुलिस को, झट रुपिया भर देत।
काम बिगारी मुफ्त कराही, न करने पर व्यर्थ सताहीं,
गोचर जोत किसान सतावै, व्यर्थ मवेशी कांजी लावै।

इसी तरह साहूकार कांड, सरकारी चाकर कांड, वकील कांड, ठगे कांड, मेम्बर कांड। कांग्रेस में आगे चलकर घुसे हुए ठगों को भी नही छोड़ा गया है। इस संबंध में श्री गणपतलालजी ने स्वराज्य की रूपरेखा बताते हुए कहा है:-

अब स्वराज्य का रूप बताऊं, अल्पहिं में सबको समझाऊं।
जाके कारण करत गोहारा, चित नहिं देवत कुछ सरकारा।
कृषक मांग जो उनहिं सुहाता, बरणों कुछ सुनिश्चित दे भ्राता।
कृषक भूमि के होवैं स्वामी, बन स्वतंत्र नसाय गुलामी।
मिले भूमि सबहीं कृषकन को, दुःखी, दीन अरू बहु श्रमिकन को।
कर्जमुक्त होवैं तत्काला, चहुंदिशि खोलहू उधम शाला।
मालगुजारी हक्क विनाशी, ग्राम-ग्राम विद्या पर काशी
कृषि आमद पर कर बैठारो, आमद कर समकर निरधारो
अन आवश्यक टैक्स बहु, एकदम होवैं दूर,
नमक टैक्स भी रद्द हो, पावें सुख भरपूर॥—॥

किसान आन्दोलन का संगठित रूप सन् १९३७ में डोंडी लोहारा और दुर्ग में दिखाई देता है। दुर्ग में किसान आन्दोलन का नेतृत्व सुप्रसिद्ध गांधीवादी नेता श्री नरसिंह प्रसाद अग्रवाल एडवोकेट दुर्ग तथा उनके छोटे भाई श्री सरयू प्रसाद अग्रवाल एडवोकेट ने किया। ये दोनों भ्रातागण सन् १९३२ के जेलयात्री सत्याग्रहियों में थे। छोटे भाई सरयू प्रसाद का उस समय विद्यार्थी जीवन था कांग्रेस के चुनाव प्रचार के बाद किसान आन्दोलन में फंस गये। बेमेतरा का चुनाव संचालन करने के उपरान्त जब बालौद आये तब यहां डोंडीलोहारा जमींदारी में श्री बनारस

पांडेय दीवान का आतंक छाया हुआ था। किसानों में असंतोष अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका था। चरी-निस्तारी में अधिक अड़चनें और अत्यधिक बेदखली का बोलबाला था। किसानों की कोई आवाज़ नहीं थी। डोंडी लोहारा की रानी के प्रभाव से लाल फतेहसिंह के संबंधियों को अलग कर मनाराम दीवान ने अपना वर्चस्व रानी पर स्थापित कर लिया था। रानी मात्र दीवान की कठपुतली रह गई थी। २८ अगस्त, १९३७ को डोंडी लोहारा जमींदारी के समस्त किसानों ने एकत्रित होकर मालीघोरी बाजार में ग्रामसभा का आयोजन किया। इस ग्रामसभा में मनाराम दीवान के खिलाफ दरख्वास्त भी दे दी गई परन्तु इसका कोई असर नहीं हुआ। फलस्वरूप कुछ प्रमुख किसान युवक श्री सरयू प्रसाद अग्रवाल की शरण में गये और उनसे नेतृत्व करने का आग्रह किया। किसानों की न्याय संगत मांग को देखकर श्री अग्रवालजी ने आन्दोलन का नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया और सत्याग्रह की तैयारी प्रारंभ होने लगी। श्री सरयूप्रसाद अग्रवाल ने इस सत्याग्रह में अपने आप को झोंक दिया। वे लगातार तीन वर्ष तक पैदल, मोटर और बैलगाड़ी में घूमते रहे और भाषण देते रहे। यह आन्दोलन लोहारा जमींदारी तक ही सीमित नहीं रहा और पानाबारस और चौकी आदि जमींदारियों में भी फैल गया। दुर्ग के श्री वासुदेव देशमुख तथा श्री सरयूप्रसाद अग्रवाल के अग्रज श्री नरसिंह प्रसाद अग्रवाल का सहयोग भी उन्हें प्राप्त होने लगा। जनता की महान शक्ति के कारण, जमींदार समाज, पुलिस अधिकारीगण, बड़े-बड़े अन्य लोग और सरकारी अधिकारी परेशान रहने लगे। क्षेत्र का पुराना पटवारी श्री वली मोहम्मद जो नागपुर झंडा सत्याग्रह में भाग ले चुका था, डोंडी लोहारा में बस्ती के बाहर तम्बू तानकर बैठ गया।

सत्याग्रह प्रारंभ होते ही शीर्षस्थ कांग्रेसी नेताओं को कठिनाई अनुभव होने लगी क्योंकि इन दिनों प्रान्त में कांग्रेस मंत्रिमंडल था। इस सत्याग्रह में ९४ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया और उन्हें रायपुर स्थित जेल में रखा गया। बालौद के दोनों अग्रवाल बन्धुओं को सिवनी जेल में रखा गया। इन सभी सत्याग्रहियों पर मनाराम दीवान की ओर से कम से कम एक हजार मामले दायर किये गये होंगे। ये मामले फौजदारी और दीवानी दोनों ही प्रकार के थे। चरी, निस्तारी, रखना और बंकर आदि के मामलों की संख्या अधिक थी। ये सभी मुकद्दमे धमतरी और रायपुर की अदालतों में चलाये गये। किसानों की ओर से रायपुर के वकील श्री त्रिवणीलाल श्रीवास्तव ने पैरवी की। नागपुर में बैरिस्टर श्री जकातदार ने किसानों का साथ दिया। दो अदालतों में किसानों की जीत हुई। परन्तु नेताओं की लगातार गिरफ्तारी से कारण नागपुर में मामले की ठीक से पैरवी न होने के कारण किसान मुकद्दमा हार गये। फल यह निकला कि मनाराम दीवान ने किसानों को खूब सताया। किसानों पर डिग्री लाई गई और उनकी सम्पत्ति कुर्क कर ली गई। आन्दोलन के अंतिम चरण के दौरान श्री आर. के. पाटिल. डिप्टी कलेक्टर थे। इनका दृष्टिकोण किसानों के प्रति उदारता एवं सहानुभूति का था। वे कलेक्टर होने के कारण, आन्दोलन में अपना सक्रिय और खुला सहयोग न दे सके। फिर भी उन्हीं की गवाही के कारण किसानों की दो अदालतों में विजय हुई।

जिस समय यह किसान आन्दोलन प्रारंभ हुआ था उस समय स्व. पं. रविशंकरजी शुक्ल, मध्यप्रदेश के शिक्षा मंत्री थे। पं. द्वारका प्रसादजी मिश्रा गृहमंत्री थे। इन दोनों महानुभावों ने किसानों के सत्याग्रह का विकराल रूप देखकर और किसानों के उत्साह को ध्यान में रखते हुए मध्यस्थता करने के उद्देश्य से अग्रवाल बन्धुओं को नागपुर बुलवाया। वहां पर मनाराम दीवान के साथ समझौता वार्त्ता प्रारंभ हुई। परन्तु समझौता नहीं हो सका। श्री द्वारका प्रसादजी मिश्रा, गृहमंत्री ने धमकी दी जिसे युवा नेता श्री सरयू प्रसाद अग्रवाल ने स्वीकार करते हुए सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया। उन्होंने दिनांक ३ मई, १९३९ को डोंडी के पास गुडकट्टा नामक गांव में अनशन प्रारंभ कर दिया। ५ मई, १९३९ को कुसुमकसा नामक गांव में विराट सभा हुई। इस सभा में तीन दिनों तक चरी और निस्तारी की लकड़ी काटने का कार्यक्रम बनाया गया। श्री सरयूप्रसाद अग्रवाल को उपवास की ही स्थिति में कुसुमकसा ले जाया गया और वहां से लोहारा। लोहारा छोड़ते ही सत्याग्रह बन्द कर दिया गया।

उपरोक्त सत्याग्रह पूर्णरूपेण नियंत्रित और अनुशासन बद्ध था। यद्यपि इस सत्याग्रह में हजारों व्यक्तियों ने भाग लिया परन्तु सत्याग्रह की समाप्ति के पश्चात एक भी झाड़ नहीं काटा गया। श्री सरयू प्रसाद अग्रवाल ने ६ रोज तक उपवास किया। तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष श्री रत्नाकर झा ने किसानों की मांगें पूरी करने का आश्वासन दिया था परन्तु मांगें पूरी नहीं हो पाईं और उनके स्थान पर जेल में स्थान दिया गया। श्री सरयू प्रसाद अग्रवाल की गिरफ्तारी के साथ ही उनके भाई श्री नरसिंह प्रसाद अग्रवाल उनके मुंशी तथा किसानों के नेता श्री वली मोहम्मद की गिरफ्तारी पानाबरस जमींदारी से लौटते समय पथराटोला गांव में हुई।

चूंकि उस समय कांग्रेस शासन था। कांग्रेस के बड़े नेता लोग भी इस आन्दोलन को तोड़ना चाहते थे। फलस्वरूप किसानों को भड़काया गया, गांवों में विशेष सशस्त्र पुलिस घूमती रही, और गांव गांव में विशेष अदालत लगती रही परन्तु किसी ने माफी के लिये याचना नहीं की। अंत में कांग्रेस मंत्रिमंडल के समाप्त होने के पूर्व ही किसान सत्याग्रहियों को भी जेल से मुक्त कर दिया गया। इसी बीच मानहानि के मामले का दंड का भुगतान न करने पर वकील साहब के घर का काफी सामान कुर्क कर लिया गया।

इस सत्याग्रह का एक बड़ा लाभ यह हुआ कि निस्तारी अधिकार कानून के निर्माण हेतु प्रयास किये गये और कानून बनाया गया। श्री व्ही. वाय तामस्कर जो उन दिनों विधायक थे, ने चरी और निस्तारी के लिये बिल लाया। इसके फलस्वरूप कमिश्नर श्री कामथ की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। समिति ने समस्त जमींदारियों का दौरा करने के उपरान्त मध्यप्रदेश में निस्तारी के अधिकार पर ५०० सौ पृष्ठों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट के आधार पर कुछ सुधार किये गये। पूर्ण सुधार जमींदारी-उन्मूलन के बाद हुए।

किसान सत्याग्रह के नेता श्री सरयू प्रसाद अग्रवाल विद्यार्थी जीवन से राष्ट्रीय आन्दोलन में रहे। गांधीजी और वर्धा आश्रम से आपका घनिष्ठ संबंध था। तपस्वी सुन्दरलालजी के साथ आपने भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ अनेक कार्य किये। १६४२ के किसान आन्दोलन के अन्तर्गत किसानों पर चलाये जा रहे मुकदमों की पैरवी के लिये हाईकोर्ट जाना चाहते थे क्योंकि आपको पूरी आशा थी कि वे मुकद्दमें जीत जायेंगे, परन्तु दीवान मनारामजी के प्रयत्नों के कारण आप गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हें पूरी अवधि तक बिना मुकद्दमा चलाये काल कोठरी में रखा गया। जेल यातना का आपके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा और उनके स्वास्थ्य में खराबी आ गई और वे बीमार रहने लगे। बड़े भाई नरसिंह प्रसाद अग्रवाल अकेले ही किसानों की समस्याओं के लिये संघर्षरत रहे।

तीसरा किसान सत्याग्रह स्वतंत्रता के पश्चात् सन् १६५३ में प्रारंभ हुआ। इस सत्याग्रह का नेतृत्व पुराने स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक श्री सुखराम नागे ने किया। श्री नागे ने जो बाद में समाजवादी दल के सदस्य हो गये, यह आन्दोलन भूमिहीनों के लिये भूमि की प्राप्ति के लिये किया था। इस आन्दोलन की शुरुवात सिहावा से ही प्रारंभ हुई जो राष्ट्रीय आन्दोलन के समय का एक प्रसिद्ध सत्याग्रह का रूप था।

जंगल की कृषि योग्य भूमि को भूमिहीन किसानों में बांटने के लिये यह आन्दोलन किया गया और सैकड़ों सत्याग्रही जेल गये। सुविख्यात समाजवादी नेता डा. राम मनोहर लोहिया भी इस आन्दोलन से प्रभावित होकर रायपुर आये। इस आन्दोलन के दौरान एक ग्राम सभा में भाषण करते हुए श्री सुखराम नागे का देहान्त हो गया। श्री नागे ने किसानों के हित के लिये जो आन्दोलन प्रारंभ किया था, वह आन्दोलन सफल रहा। आज हर जिले में किसानों को काबिल काश्त भूमि दी जा रही है। वन विभाग द्वारा भी काबिल काश्त भूमि का वितरण किया जा रहा है। इसका श्रेय श्री सुखराम नागे को ही है। उनका यह आन्दोलन गांधीजी के द्वारा बताये गये अहिंसा के आदर्शों पर ही आधारित था।

धमतरी के कन्डेल गांव का नहर सत्याग्रह

—डा. शोभाराम देवांगन

यह बात एक निर्विवाद रूप से सत्य है कि कृषि कार्य को सम्पन्न करने में उसकी सिंचाई की समुचित व्यवस्था चाहे कृत्रिम अथवा अकृत्रिम हो, होना नितान्त आवश्यक है। केवल इस आधार पर ही मध्यप्रदेश तथा बरार के शासन ने रायपुर जिलान्तर्गत धमतरी तहसील के मांडमसिल्ली ग्राम के पास सन् १९१४ में सैलरिया नदी के जल को रोककर तथा वहां एक वृहत्त बांध बांधकर उसे एक वृहत्त जलाशय का रूप देने के पश्चात् इस संचित जल को महानदी मे बहाकर, रुद्री ग्राम के पास एक और बांध महानदी में निर्माण कर तथा वहां से एक नहर निकालकर उसके द्वारा निकटवर्ती ग्रामों की खेती को सिंचाई के खातिर जल पहुंचाने का कार्य कुछ वर्षों से प्रारंभ किया गया था किन्तु नहर विभाग को इससे पर्याप्त आय नहीं हो सकती थी जिससे उनका कार्य समुचित रीति से संपन्न भी नहीं हो सकता था। इसलिये इस विभाग के कर्मचारी तथा अधिकारीगण दसवर्षीय नहर आबपासी नामक एक एग्रीमेंट के लिये गांव के कृषक समुदाय तथा मालगुजारों को किसी तरह समझा बुझाकर एवं एक झूठा प्रलोभन देकर तथा उनके भविष्य की उज्ज्वल रूपरेखा खींचकर उन्हें विवश कर अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में ऐन केन प्रकारेण सफल हो ही जाते थे। इस तरह इस कार्य में इन्हें भीषण प्रयास करने पर भी संतोषप्रद लाभ होने की आशा नहीं भी हो सकती थी।इस नहर आबपासी नामक दस वर्षीय एग्रीमेंट में कृषकजनों को विशेष आपत्ति यह होती थी कि इसका प्रति एकड़ लगान व निस्बत काली जमीन के लगान के प्रति एकड़ अधिक द्रव्य निर्धारित किया गया था जिसे वे भविष्य में अपने लिये सहन करने में असमर्थ समझते थे।

इसके अतिरिक्त उनका यह तर्क भी न्यायसंगत तथा उपयुक्त जान पड़ता था कि इन दस वर्षों में सिंचाई के लिये जिस गांव की नहर आबपासी के लिये जो द्रव्य व्यय करना होगा उससे उस गांव में सिंचाई के लिये ही एक वृहत्त आबपासी का तालाब सदा के खातिर निर्मित हो सकता है। इस भावना से प्रेरित होकर अनेक गांवों के कृषक-जन इस दस वर्षीय एग्रीमेंट के लिये सर्वथा उद्यत नहीं होते थे जिनमें श्री छोटेलाल बाबू का कंडेल नामक गांव भी एक था। इस अवधि में छोटेलाल बाबू तहसील के कांग्रेसी नेताओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश के उद्धार करने विषयक अनेक कार्यक्रमों में सदा अपना योग देने में परम कर्त्तव्य समझते थे। जैसा कि पूर्व उल्लेख किया गया है कि नहर विभाग को अपने अब तक के कार्य से संतोष नहीं हो सका था, तब इसके लिये इसे ऐन केन प्रकारेण प्रगति देना भी अनिवार्य हो गया था, इसलिये उसने सन् १९२० ई. के लगभग अगस्त माह में अपनी शक्ति का पता लगाने हेतु सर्व प्रथम कंडेल गांव में ही एक अन्याय तथा अनुचित कार्य करने का एक जाल बिछाने का संकल्प किया जिसका प्रधान कारण यह समझा गया था कि सम्प्रति में श्री छोटेलालजी बाबू ने इस तहसील में जन हितकारी तथा देशोद्धार कार्य में पूर्ण उत्साह से राजनैतिक मनीषियों के साथ सक्रिय योग देना प्रारंभ कर दिया था। यदि नहर विभाग इस कुत्सित दुर्भा-वनापूर्ण अनुचित कार्य में सफल हो जाता है तो इसका प्रभाव केवल श्री छोटेलाल पर ही नहीं होगा वरन् सम्पूर्ण तहसील पर ही पड़े बिना नहीं रहेगा। तब फिर बाबूजी को भविष्य में राजनीति से विरत एवं विमुख होने से विवश

होना ही पड़ेगा, जिसका परिणाम यह होगा कि नहर विभाग प्रान्तीय शासन का एक विशेष कृपा पात्र होने में सक्षम हुए बिना नही रह सकेगा। केवल इस प्रबल भावना से ही प्रेरित होकर इस विभाग ने अगस्त सन् १९२० में कंडेल गांव को जाने वाली शाखा नहर की नाली को काट कर उस गांव के संपूर्ण खेतों में देने की सोची जिससे उस गांव के प्राय समस्त खेतों की सिचाई होना संभव हो सके। ऐसी परिस्थिति में उस गांव के किसानों पर चोरी से पानी (ले जाने का) झूठा आरोप लगाकर पेनाल्टी सहित नहर पानी का लगान वसूल कर दस वर्षीय एग्रीमेंट के लिये भी मार्ग प्रशस्त हो जावेगा किन्तु इस विभाग के दुर्भाग्य से अथवा गाव वालों के सौभाग्य से उस रात्रि को ही वहां तथा समीपवर्ती गांव में इतनी वर्षा हुई कि कोई कह नहीं सकता कि इस भीषण वर्षा के बावजूद नहर की नाली काटकर गांव वालों ने अपनी खेती की सिचाई करने की आवश्यकता हुई होगी जिसे एक साधारण व्यक्ति भी सरलतापूर्वक समझ सकता है किन्तु सूर्य के प्रकाश जैसे उज्जवल तथ्य को इस नहर विभाग के कर्मचारी तथा विचार करने में सर्वथा असमर्थ रहे और उस गाव के सभी किसानों पर पानी ले जाने का मिथ्या अभियोग लगाकर ४३०४) रुपये (चार हजार तीन सौ चार रुपये) नहर पानी का लगान लगाने में अपनी दक्षता का परिचय देकर तत्क्षण उसकी वसूली के कार्यवाही का भी आदेश देने मे अपनी इस कार्यपटुता पर नाज करने लगे। उसकी इस हास्यास्पद कार्य की सर्वत्र निन्दा होना अनिवार्य हो ही गया।

अब इस तहसील के राजनैतिक तथा सूझबूझ रखने वाले पुरुषों के लिये इस अविवेकपूर्ण तथा कुत्सित कार्य का विरोध करने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग एवं साधन नहीं था। इसलिए वे सत्याग्रह करने का संकल्प कर उसका एक मानचित्र कंडेल नहर सत्याग्रह के रूप में चित्रित कर तहसील में सर्वत्र प्रचारात्मक कार्य करना प्रारंभ कर दिये। दूसरी ओर जब सीमावधि के भीतर द्रव्य पटाने विषयक शासन की सूचना पत्र की कोई चिन्ता उस गांव वालों ने नही की तब शासन के लिये उनकी चल सम्पत्तियों को कुर्क करने के अतिरिक्त कोई साधन नही रह गया था। इसलिये उसने गांव की समस्त मवेशियों, जिनमें वर्षा के दिनों में खेती कार्य अर्थात् ब्यासी का कार्य करने वाले जानवर सम्मिलित थे, कुर्क कर लिये गये। इसके अनन्तर इन्हें नीलाम करने के लिये सर्वप्रथम धमतरी के रविवासरीय बाजार मे लाया गया किन्तु यहां के देशभक्त कर्मवीर व्यक्तियों के प्रचार तथा प्रयत्न से इन उपयोगी मवेशियो पर कोई बोली बोलना तो दूर रहा, प्रत्युत सर्वसाधारण जन भी उनके निकट जाने मे अपने ऊपर एक महान कलंक लगने का दोष देखते थे, जिसका परिणाम यह हुआ कि शासकीय कर्मचारी खिन्न होकर इस बृहत्त बाजार की पूर्ण आशा त्याग कर तहसील के छोटे तथा अन्य बाजारों में जो धमतरी से १५–२० कोस की दूरी पर स्थित थे उन मवेशियों को नीलाम करने के लिये ले जाने को विवश हुए।

यद्यपि शासन के इस दुराग्रहपूर्ण कार्य का सामना सत्याग्रह द्वारा किया जा रहा है, यह संवाद तहसील में सर्वत्र विद्युत की नायीं फैल गया था, तथापि इसका प्रचार करने के हेतु तहसील के चहुं ओर देशभक्त तथा स्वयंसेवक की टोलियां उन स्थानों में मवेशियों तथा शासकीय कर्मचारियों के पहुंचने के पूर्व ही पहुंच जाती थीं इससे वहां भी इन शासकीय कर्मचारियों की वही गति होती थी जो गति धमतरी बाजार मे हुई थी। रात दिन के आवागमन तथा उन मवेशियों के चारा तथा भूसे का कोई समुचित प्रबन्ध नही होने से अनेक मवेशी दुर्बल तथा रोगग्रस्त होकर अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए तो भी मदांध शासन को इसकी चिन्ता कैसे व्याप्त सकती है। उसे तो केवल चिन्ता शासकीय कोष में ऐन केन प्रकारेण द्रव्य संचय करने की थी। इस तरह शासन का यह क्रम वर्षा ऋतु के समाप्ति के पश्चात् भी चलता रहा। किन्तु इसमें भी उसे कोई लेशमात्र सफलता नहीं हुई। अंत मे शासन को उस गाव के मालगुजार श्री छोटे लाल बाबू श्रीवास्तव तथा उनके चचेरे भाई श्री लालजी भाई तथा अन्य प्रमुख कृषक और तहसील के राष्ट्रीय नेताओं तथा स्वयंसेवकों को जो इस कार्य में एड़ी चोटी का जोर लगा रहे थे, सहसा गिरफ्तार करने की धुन सवार

(शेष पृष्ठ ६० पर)

छत्तीसगढ़ में गांधीवाद

-हरिप्रसाद अवधिया

छत्तीसगढ़ भारत का भू भाग है किन्तु प्रस्तुत लेख में भूमि के साथ साथ उन भारतीयों की ओर भी संकेत है जो उत्तर में सरगुजा से लेकर दक्षिण में बस्तर राज तक तथा पूर्व में प्राय: सम्बलपुर से पश्चिम मे प्राय: गोंदिया तथा बालाघाट तक निवास करते हैं और विशेषत: सरगुजा, रायगढ़, बिलासपुर, रायपुर,दुर्ग, राजनांदगांव, खैरागढ़,डोंगरगढ़ तथा कांकेर बस्तर में "छत्तीसगढ़ी" कहलाते है। छत्तीसगढ़ मे निवास करने वाले लगभग डेढ़ करोड़ व्यक्तियों पर "गांधीवाद का प्रभाव पड़ा और स्वाधीनता-संग्राम मे गांधीवाद के मार्ग-निर्देशन में छत्तीसगढ़ ब्रिटिश हुकूमत की कठोरता से लोहा लेता रहा। गांधीजी के नेतृत्व में संचालित आन्दोलन के युग में छत्तीसगढ़ का कोना-कोना "विजयी विश्व तिरंगा प्यारा , रण भेरी बज चुकी बीर वर पहनो केसरिया बाना" और:—

दक्षिण कोशल के वीरो,
आज तुम्हारा अवसर है।
सेनानी ने शंख बजाया,
सभी देश उठ आगे आया,
तुम भी कह दो दृढ़ स्वर से,
आज हमारा अवसर है"—

के राष्ट्र-गान से गूंज उठा। छत्तीसगढ़ ने द्रुत तथा तीव्र गति से गांधी मार्ग और गांधीवाद को अपनाया।

अपने आन्दोलन के सर्व प्रथम चरण में ही सन् १९२० में मौलाना शौकत अली को साथ लिये गांधीजी का रायपुर में आगमन हुआ। तभी से छत्तीसगढ़ मे गांधीवाद का प्रारंभ होता है। उनके आगमन और आन्दोलन का छत्तीसगढ़ के जन-मानस पर अमिट प्रभाव पड़ा। लोगों ने सरकारी नौकरियां छोड़ दी। शासकीय विद्यालयों से असहयोग कर सबंध विच्छेद कर लिया। उन विद्यार्थियों की शिक्षा का "स्वदेशी प्रबन्ध" करने के लिये छत्तीसगढ़ के केन्द्र रायपुर में "राष्ट्रीय विद्यालय" स्थापित किया गया जो गांधीवादी स्वातंत्र्य संग्राम के प्रसार तथा गांधीवाद के प्रचार का प्रमुख केन्द्र बना। गांधीवाद से पूर्णतया प्रभावित एवं अनुरंजित नेताओं ने गांधीजी के आन्दोलन को पूरे छत्तीसगढ़ मे विस्तृत करने में कोई कोर कसर नही की और इस भू भाग ने गांधीवाद को ग्रहण कर उसके अनुरूप अपने जीवन को ढाला और छत्तीसगढ़ मे सत्य, अहिंसा, चर्खा, खादी तथा असहयोग लहराया। आन्दोलन तथा गांधी संदेश के प्रचार का मुख केन्द्र रायपुर बना जहां से आंतरिक अंचलों में उपकेन्द्र स्थापित कर गांधीवाद का अथक. गंभीर एवम् अमिट प्रचार-प्रसार किया गया जिसका समस्त छत्तीसगढ़ पर गहरा असर पड़ा और देश का यह उपेक्षित भू-खड देश-भक्ति के क्षेत्र मे इतने जोरो से आगे बढ़ा कि समय समय पर उच्च स्तरीय नेता आकृष्ट होकर उत्साह बढ़ाने के लिये यहां आते रहे और राष्ट्रीय क्षेत्र में गांधीवादी नेता पंडित रविशंकर शुक्ल का इतना उत्कर्ष हुआ कि वे मध्यप्रदेश तथा नव गठित मध्यप्रदेश के मुख्य-

मंत्री बने, राजनीति में अद्वितीय हुए (लोक-विश्वास तो यह भी है कि डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद पंडित रविशंकर शुक्ल को राजनीति में अपना गुरु मानते थे) और ए. आई. सी. सी. में अपना गहरा प्रभाव डाला। छत्तीसगढ़ के लोक हृदय पर पंडित रविशंकर शुक्ल के नेतृत्व की अमिट छाप पड़ी थी और उनके मार्ग दर्शन में छत्तीसगढ़ आगे बढ़ता जा रहा था। छत्तीसगढ़ के अन्य भागों में भी वहां के नेता गांधीवाद की जड़ें जन-जन मन से जमा रहे थे।

ब्रिटिश शासन काल में "स्वराज्य" के पहले कदम के रूप में स्वायत्त शासन प्रदान किया गया था। छत्तीसगढ़ के कार्यकर्ताओं ने इससे भरपूर लाभ उठाया। नगर के लिये म्युनिसिपलिटियों और ग्रामीण क्षेत्रों के लिये डिस्ट्रिक्ट कौंसिलों को यहां के नेताओं ने गांधीवाद का प्रसार करने के लिये चुना और उन पर अपना अधिकार कर लिया। दीर्घकाल तक पंडित रविशंकर शुक्ल रायपुर जिले के डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के चेयरमैन रहे और उस पद की सत्ता का उपयोग गांधीवाद के प्रसार के लिये किया। प्रभावपूर्ण प्रचार कार्य में शिक्षक प्रवीण होते हैं। इस तथ्य को शुक्लजी ने अपने समक्ष रखा। गांव-गांव में टूर्नामेंट के आयोजन कराये जिससे शिक्षक वर्ग स्वयं एकत्र होकर लोक-संगठन तथा गांधीवाद के प्रचार में लग गये और सर्वत्र गांधीवाद का संदेश पहुंचाया। गांधीवाद के प्रमुख सक्रिय प्रचारक नेता रायपुर में पंडित रविशंकर शुक्ल, ठाकुर प्यारेलाल सिंह, सेठ शिवदास डागा, महन्त लक्ष्मीनारायण दास, डाक्टर खूबचन्द बघेल, वामन बलीराम लाखे, जमनालाल चोपड़ा, यति यतनलाल, डा. राधाबाई, मौलाना रऊफ अब्दुल बी. एन. बनर्जी, नारायण राव मेघावाले, क्रांति कुमार, बिलासपुर में बैरिस्टर ठाकुर छेदीलाल, ई. राघवेन्द्र राव थे। (स्थानाभाव के कारण अन्य नामों का उल्लेख करना संभव नहीं है।) इनकी कार्य प्रणाली सुसगठित इनके के भाषण,त्याग,तपस्या तथा देश-भक्ति अनुपम थी।नगर-केन्द्र बनाये गये। प्रमुख कस्बे उप-केन्द्र निर्धारित किये गये। गांव-गांव में चर्खा चलने लगा, सूत ने हृदयों को पावन किया, गांधी टोपी, सरल हृदय, त्याग तपस्या, तपी हुई देश-भक्ति, अहिंसा, असहयोग, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार और होली, सहनशीलता विलक्षण गति और रूप से छत्तीसगढ़ का शृंगार करने लगी। छत्तीसगढ़ गांधीवाद से इतना प्रभावित तथा अनुप्राणित हुआ कि उसने १९३० से १९४२ तक असहयोग आन्दोलन में उल्लेखनीय भाग लिया। सत्याग्रह, धरना, बायकाट, जेल यात्रा, कानून के उल्लंघन में यह भाग किसी से पिछड़ा नहीं रहा अपितु देश के महान नेताओं को आकृष्ट किया और समय-समय पर स्वयं महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, आचार्य कृपलानी यहां आये और छत्तीसगढ़ में गांधीवादी नव जागरण का उल्लास लहराया।

रायपुर में महात्मा गांधी का दुबारा आगमन हुआ। नमक कानून तोड़ा गया और गांधीजी के कर कमलों से मंदिरों के द्वार हरिजनों के लिये खोले गये। छत्तीसगढ़ की एक बड़ी भारी विशेषता यह रही है कि गांधीजी के हरिजन आन्दोलन के पूर्व ही अछूत कहे जाने वाले लोगों को राजिम निवासी पंडित सुन्दरलाल शर्मा ने जनेऊ पहनाये और राजिव लोचन के मंदिर का द्वार उनके लिये खोलने का प्रयास किया। इससे उपयुक्त वातावरणका निर्माण हो चुका था जिससे छत्तीसगढ़ ने गांधीवाद को सरलता से सहज ही में अपना लिया। सन् १९३२ में उस समय के '("बेताज के बादशाह" पंडित जवाहरलाल नेहरू का रायपुर आगमन हुआ। लोगों में उत्साह उमड़ आया, नवीन बल का संचार हुआ और गांधीवाद पर आस्था दृढ़ होती गई।

सन् १९४२ में "भारत छोड़ो" प्रस्ताव के संदर्भ में रायपुर का आन्दोलन और उसका दमन अपने आप में बेजोड़ थे। भारत के प्रायः सभी प्रमुख नगरों में नौ अगस्त की क्रांति के समय गोलियां चलीं। विद्यार्थी शहीद हुए किन्तु रायपुर का शासकीय रुख कुछ गांधीवादी ही कहा जा सकता है क्योंकि वह अहिंसक था। इसका श्रेय तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर श्री आर. के. पाटिल को है जिन्होंने यह आदेश दे रखा था कि आन्दोलनकारियों को पुलिस लारी में बैठाकर शहर के बाहर दस मील के अंतर्गत छोड़ दिया जावे। अंग्रेज शासकों को यह कब बर्दाश्त हो सकता था कि छत्तीसगढ़ के केन्द्र

(शेष पृष्ठ ८८ पर)

सन् १९३३ में गांधी जी ने अपने रायपुर प्रवास के समय सदरबाजार खादी भंडार को भेंट दी थीं। स्व. पं रविशंकर जी शुक्ल उनकी आगवानी कर रहें हैं। चित्र : श्रीमती प्रकाशवती मिश्र के सौजन्य से।

सन् १९३३ में रायपुर स्थित मोती बाग में आयोजित स्वदेशी प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए गांधी जी। चित्र में स्व. शुक्ल जी खड़े हुए दृष्टिगोचर हो रहें हैं। चित्र: श्रीमती प्रकाशवती मिश्र के सौजन्य से।

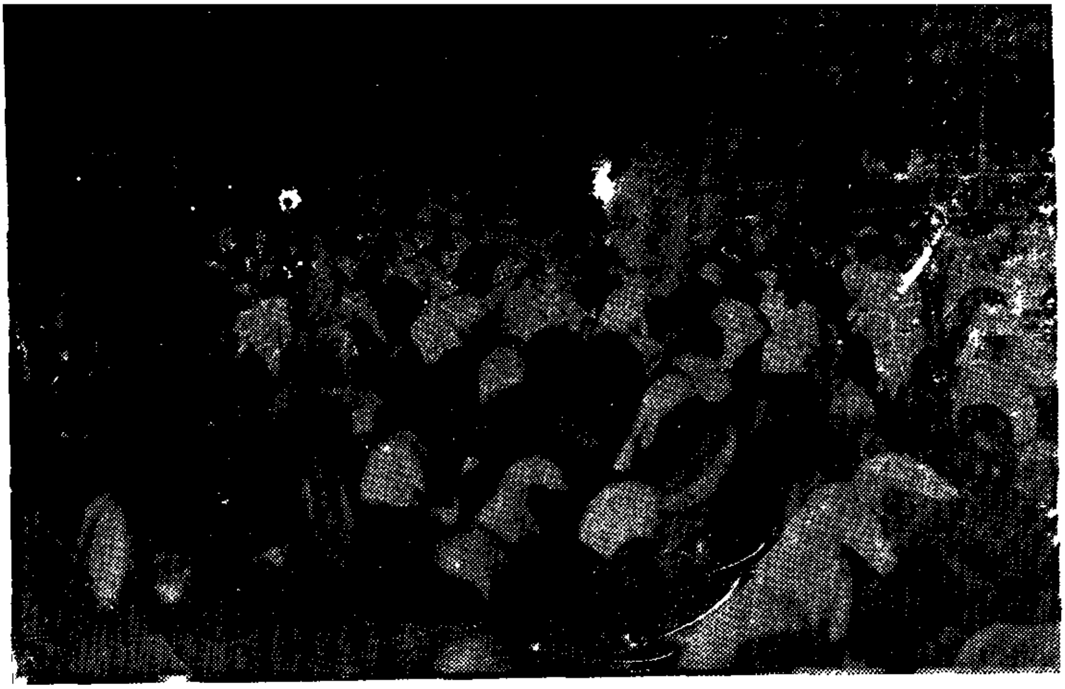

१९३३ में सप्रे हाई स्कूल में महिलाओं कीं एक सभा को सम्बोधित करते हुए महात्मा गांधीजी । स्व. पं. रविशंकरजी शुक्ल कमर पर हाथ रखे दृष्टिगोचर हो रहे हैं। पीछे श्री अम्बिकाचरण जी शुक्ल खड़े हुए हैं। चित्र : श्रीमती प्रकाशवती मिश्रा के सौजन्य से।

सन् १९३३ में सप्रे हाई स्कूल में आयोजित आमसभा को सम्बोधित करते हुए महात्मा गांधीजी। चित्र श्रीमती प्रकाशवती मिश्र के सौजन्य से।

"युग पुरुष"–मेरी स्मृति में

–डा. बलदेव प्रसाद मिश्र

मैं महात्मा गांधी को युग प्रवर्त्तक महापुरुष मानता हूं और अपने को इस दृष्टि से सौभाग्यशाली समझता हूं कि कि मुझे न केवल उनके दर्शन ही हुए हैं किन्तु एकाधिक बार उनकी समीपता का भी लाभ मिला हैं, भले ही वह मेरे दुर्भाग्य से क्षणिक ही रहा हो। जो क्षण अपना अमिट प्रभाव छोड़ जाते है उन्हें क्षणिक भी तो नहीं कहा जा सकता।

महात्माजी के दर्शन सर्वप्रथम मुझे नागपुर कांग्रेस के समय आज से सैंतालीस अड़तालीस वर्षों पूर्व हुए थे। उस समय वे महात्मा नहीं किन्तु कर्मवीर कहलाते थे। असहयोग आन्दोलन का शंख फूंका जा चुका था। कांग्रेस अधिवेशन में उसे स्वीकृति दिलानी थी। श्री सी. आर. दास, श्री विपिन चन्द्रपाल, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द प्रभृति नेतागण एकत्र हुए थे और लोगों की भीड़ इतनी हो गई थी कि जिसका पहिले से अन्दाजा ही नहीं लगाया जा सकता था। स्वागत समिति ने अपने विचार से सभास्थल का बड़ा विशाल प्रबन्ध कर रखा था और आवश्यकता से अधिक कुर्सियों आदि की पूरी व्यवस्था थी क्योंकि तब तक अधिवेशनों में कुर्सी टेबल के बदले फर्शी बैठक का प्रचलन नहीं हुआ था और न ऐसा प्रचलन सोचा ही जा सकता था। किन्तु देखते ही देखते भीड़ ने वह दृश्य उपस्थित कर दिया कि वस्तुतः तिल रखने की भी जगह कहीं न बची और विश्व विजेता पहलवान राममूर्ति नायडू तक को मार्ग ही में दुबककर बैठ जाना पड़ा। भीड़ का रेला उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। नेतागण किंकर्त्तव्य विमूढ़ थे। ठीक इसी समय सभास्थल पर गांधीजी का आगमन हुआ। मैं फाटक के पास ही था। मैंने देखा गांधीजी भी यह दृश्य देखकर दो क्षणों के लिये किंकर्त्तव्य विमूढ़ से हो गये। प्रवेश पत्र परीक्षण करने वाला कर्मचारी फाटक छोड़कर कब का खिसक चुका था। गांधीजी ने उसकी कुर्सी पर खड़े होकर मंच पर और उसके चारों ओर नजर दौड़ाई और तुरन्त ही आंखें मूदकर एवं होंठ हिलाते हुए पूरी गम्भीरता के साथ राम राम राम राम कहना प्रारंभ किया। एक मिनट भी न लगा होगा और उन्हें उपाय सूझ गया। वे तुरन्त सभास्थल से बाहर जाकर खुले मैदान में भाषण देने लगे। असहयोग आन्दोलन के पुरस्कर्त्ता के रूप में उनका नाम ही तो अपार जन-राशि का कौतूहल-केन्द्र था। अतएव देखते-देखते ही मंच के पास वाला सभास्थल खाली होने लगा और भीड़ खुले मैदान में गांधीजी के पास पहुंच गयी। अधिवेशन के प्रथम दिन की औपचारिकता में भी शान्ति बनी रही और दर्शनार्थियों की इच्छा भी पूरी हो गई। बात छोटी सी थी परन्तु अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण थी। पूरी गहराई से लिया हुआ परमात्मा का नाम किस प्रकार अप्रत्याशित रूप में कर्त्तव्य का दिशा निर्देश कर दिया करता है इसका मानो उस दिन मैंने प्रत्यक्ष साक्षात्कार ही किया। उस चित्र की रेखा मेरे मन में अभी तक वैसे ही चटकीले रंगों में अंकित है। दुलहा खुले मैदान में और बारात सभास्थल पर परन्तु क्या मजाल की सन्तुलन में कहीं कोई शैथिल्य आ जाय।

कई वर्षों बाद नागपुर में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन, स्वनामधन्य देशरत्न बाबू राजेन्द्र प्रसादजी की अध्यक्षता में हुआ। उस समय राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर विचार विमर्श हेतु देश के प्रायः सभी कर्णधार एकत्र हुए थे। प. जवाहरलाल नेहरू उस विशिष्ट समिति के अध्यक्ष थे। गांधीजी अन्य नेताओं के साथ पहिले से ही मंच पर बैठे हुए थे। पंडितजी के पधारते ही सबके साथ वे भी अभ्यर्थना हेतु खड़े हो गये। पंडितजी ने आते ही उनके

प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के भाव में कहा "कम से कम आपको तो खड़ा नहीं होना चाहिये था।" गांधीजी ने तुरन्त मुस्कराते हुए उत्तर दिया "यदि इसी बहाने उठने बैठने का थोड़ा व्यायाम हो जाय तो क्या बुरा"। सौभाग्य से मैं भी उस समय मंच पर ही था। तत्पश्चात् जब प्रस्ताव आया कि "समिति की कार्यवाही हिंदी या हिन्दुस्थानी में लिखी जाय", मैंने भाषण प्रारंभ किया था। यह प्रस्ताव सामान्य मुस्लिम नेता या श्री पं. नेहरू जी के द्वारा आया था और गांधीजी उसे स्वीकार कर लेने की मुद्रा में थे किन्तु मेरा तर्क था कि राष्ट्रभाषा विषयक उस समिति की कार्यवाही चाहे देवनागरी लिपि और हिन्दी शैली में लिखी जाय चाहे फारसी लिपि और हिन्दुस्थानी (उर्दू) शैली में लिखी जाय। मेरे वक्तव्य का सार था कि जब भारत की राष्ट्रभाषा का "हिन्दी" नाम मुसलमानों ही की देन है तब अब उन्हें उसकी प्रतिस्पर्धा के लिये हिन्दुस्थानी नाम देकर एक विदेशी संस्कारों वाली भाषा गढ़कर उसे बराबरी का दर्जा क्यों दिलाना चाहिये। मैंने देखा कि एक क्षण के लिये गांधीजी की मुख मुद्रा अत्यन्त गम्भीर हो गयी और उनकी आंखें कुछ ऐसी ध्यान अवस्था में अधमुंदी सी हो गयी मानो वे समस्या की तह पर जाकर सत्य के तुरन्त दर्शन कर लेना चाहते हों। दूसरे ही क्षण वे प्रकृतिस्थ होकर इस प्रकार मुस्कराने लगे मानो समस्या कुछ थी ही नहीं। वे मुझे संबोधित करते हुए बोले "अच्छा समिति की कार्यवाही हिन्दी याने हिन्दुस्थानी में लिखी जाय" ऐसा निर्णय कर देने में तो कोई आपत्ति नहीं रह जाती। मैं निरुत्तर हो गया। एक "ने" ने "या" के साथ जुड़कर सब विपक्षियों का मुंह बन्द कर दिया।

एक बार सेवाग्राम जाकर मैंने महात्माजी के दर्शन किये थे। एकदम नपी तुली दिनचर्या और एक-एक सेकण्ड का सदुपयोग। मैंने देखा वे दो कंधों पर अपनी हलकी देह का बोझ डालते हुए प्रातः भ्रमण के समय हवा में तैरते से बढ़ते चले जा रहे हैं और साथ ही पूर्व निश्चित आगन्तुक महानुभावों की समस्याओं को भी मौन भाव से सुनते जा रहे हैं। पति पत्नी के आपसी विवाद से लेकर ब्रिटिश सरकार के भाग्य निर्णायक क्रूर पंजों के उत्तर तक की समस्यायें उनके सामने उपस्थित रहती थीं और अपना हल पाकर बात की बात में शांत हो जाया करती थी। यह उनका प्रायः नित्य का क्रम था।

ग्रामोद्योग के सिलसिले में महात्माजी ने नलवाड़ी वर्धा के चर्मोद्योग का दायित्व श्री वालुंजकरजी को सौंपा था। वे चाहते थे कि चर्मालय में ऐसे ही पशुओं के चर्म का उपयोग हो जो मारे गये नहीं किन्तु अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मरे हों। उन्हें किसी तरह पता लगा कि कुछ रियासतें ऐसी हैं जहां गो जाति के पशुओं का वध एकदम निषिद्ध है और वहां के चमड़े के व्यापारी के पास से विश्वसनीय चर्म राशि दिलाई जा सकती है या मिल सकती है जो वध किये हुए पशुओं की न हो। मैं उस समय रायगढ़ रियासत का दीवान था और यह मेरा परम सौभाग्य था कि महात्माजी ने इस विश्वसनीय कार्य के लिये मुझे चुना और श्री वालुंजकरजी को मेरे पास भेजा।

रेल यात्रा के सिलसिले में उन्होंने कई बार रायगढ़ स्टेशन पार किया परन्तु जब-जब मैंने उन्हें देखा उन ध्यानस्थ मुद्रा ही में पाया। डाक गाड़ी भी प्रायः दस मिनट रुकती थी किन्तु व खिड़की के पास बैठकर तटस्थ भाव से केवल मात्र अपना दाहिना हाथ प्रतिग्रह की परिपाटी में फैला दिया करते थे और इतने ही से दर्शनार्थियों की अपा भीड़ में प्रतिस्पर्धा सी होने लगती थी कि उस हथेली पर कौन कितना अधिक दे सकता है। जिनकी जेबें खाली रहती थ व पुरुष हों तो हाथ की अंगूठियां और स्त्रियां हों तो गले का हार उतार-उतार कर महात्माजी के हाथ पर रख देने क भावना से भर उठती थीं। उन्हें केवल इस बात का पूर्ण विश्वास ही नहीं रहता था कि उनकी दी हुई एक-एक पाई क का परोपकार में पूरा-पूरा सदुपयोग होगा किन्तु वे इस बात के विचारों से अपना परम अहोभाग्य भी मान लेते थे कि विश्व का इतना बड़ा महात्मा उनके सामने हाथ फैला रहा है।

अनेक घटनायें उस महापुरुष के जीवन के संबंध की हैं जो अब कहानियों ही के रूप में शेष रह गई हैं। य समाज उनसे प्रेरणा लेता रहा तो वह जीवन आज भी जीवित और जागृत ही समझना चाहिये।

गांधी की नजर में हिन्दी

—घनश्याम सिंह गुप्त

मेरा महात्मा गांधीजी से विशेष सम्पर्क था। वह बहुत कुछ मेरा आर्यसमाजी होने के कारण से था। किन्तु उसके अतिरिक्त भी कुछ थोड़ा सा मेरा सम्पर्क था। वे समय की अत्यन्त पाबन्दी रखते थे। इसके मुझे कई उदाहरण याद हैं किन्तु सभी को लिखकर इस लेख को लम्बा करना मैं नहीं चाहता।

मेरे लिए उनके द्वारा दिये हुए समय के लगभग दो मिनट पूर्व में सेवाग्राम में स्थित उनकी कुटी की एक खिड़की के पास लगभग आधा मिनट खड़ा हो जाता था ताकि वे मुझे देखते और जानते कि मैं यथा समय आ गया हूं।

एक दिन की बात है कि मैंने उक्त प्रकार से किया और महात्मा जी से कोई योरोपियन बहुत बड़े अधिकारी बातें कर रहे थे। मुझे देखते ही महात्माजी ने उन अधिकारी से अंग्रेजी में कुछ ऐसा कहा:—मैंने गुप्तजी को जो समय दिया है उसमें वे ठीक समय पर आ गये। आप कृपया थोड़ी देर बाद आवें ताकि मैं उनसे बातें कर सकूं।

एक दूसरी घटना यह हुई कि उन्हें किसी आवश्यक कार्य के लिये कोई सज्जन मोटर द्वारा कहीं ले जा रहे थे। मैं भी महात्माजी के साथ था। मार्ग में मोटर बिगड़ गई और ड्राइवर ने कुछ ऐसा कहा कि हम अभी ही तीन चार मिनट में मोटर सुधर जावेगी। उसके कहे अनुसार महात्माजी लगभग चार मिनट तक ठहरे। एक घड़ी वे सदा अपनी कमरबन्द रस्सी में लटकाये रहते थे। और जब मोटर नहीं सुधरी तब वे पैदल चलने लगे। ड्राइवर और मोटर के मालिक ने उन्हें रुकने के लिये बहुत कुछ कहा पर वे नहीं रुके और कुछ इस प्रकार कहे : "मोटर बन जावे तो लेते आना। हमें पहुंचा लेना उसमें चढ़ जावेंगे।"

हिन्दी में बोल

दिनांक २३–१२–१९३८ से दिनांक २७–१२–१९३८ तक स्वर्गीय बापूजी अणे की अध्यक्षता में शोलापुर में वृहत आर्य कांग्रेस हुआ जहां हैदराबाद शासन के विरुद्ध सत्याग्रह संबंधी विषय पर प्रस्ताव हुए। मैं उन दिनों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान था। इसके थोड़े ही दिन पश्चात मैं और अणेजी महात्मा गांधी से मिलने सेवाग्राम गये ताकि उनको सभी बातों का ज्ञान हो जावे। बापूजी ने अणे उनसे अंग्रेजी में बातें की। उनके बोल लेने के पश्चात दुर्भाग्य से मैंने भी अंग्रेजी में ही महात्माजी से (शोलापुर संबंधी) बातें करना आरंभ किया। तब महात्माजी ने कुछ ऐसा कहा : तू तो हिंदी बहुत अच्छी तरह से बोल सकता है फिर विदेशी भाषा अंग्रेजी क्यों बोल रहा है। उस दिन से मैंने कान पकड़ा और मैंने कभी भी महात्माजी से अंग्रेजी में नहीं बोला। सदा हिंदी में ही बोलता रहा। यह था महात्माजी का अपने देश का प्रेम तथा देश की भाषा के प्रति प्रेम।

घूमती कुर्सी और गांधीजी

दिनांक २२–११–१९३३ को महात्मा गांधी जब दुर्ग आये और हमारे घर को पवित्र करते हुए हमारे यहां ही ठहरे। तब उन्होंने मझसे पूछा कि दुर्ग में देखने लायक क्या स्थान है तब मैंने उन्हें कुछ इस प्रकार कहा:–कि दुर्ग में एक स्थान देखने के लायक है वह है हमारे द्वारा संचालित पाठशाला। अर्थात जब मैं दि.१३–५–१९३३ से दुर्ग नगरपालिका समिति का प्रधान हुआ था तब लगभग सन् १९२६ से लगातार हरिजन (मेहतर) बालक अन्य जाति वाले बालकों के साथ एक ही टाटापट्टी में घुलमिलकर बैठे हुए पढ़ते हैं। तब महात्माजी को बहुत संतोष हुआ और उनने कुछ इस प्रकार कहा। यह तेरा शुभ कार्य कदाचित संपूर्ण भारत में नहीं तो संपूर्ण मध्यप्रदेश में तो अवश्य प्रथम किया हुआ है। उसी दिन अर्थात २२–११–१९३३ के सायंकाल मोतीलाल बावली भूमि में एक बृहत सभा हुई जिसमें लगभग ५०००० (पचास हजार) नर-नारी उपस्थित थे। वहां महात्माजी का भाषण हुआ। उन दिनों लाउड स्पीकर यहां नहीं रहता था। अतः उनके भाषण को इतने बड़े जन समुदाय का सुन सकना असम्भव था। तब मैंने महात्माजी से कुछ इस प्रकार कहा–आपका भाषण सब सुन सकें यह तो सम्भव नहीं किन्तु सभी लोग आपका दर्शन कर सकें यह आवश्यक है तब उनने कुछ ऐसा कहा–मेरा मुंह तो एक ही ओर हो सकता है चारों ओर नहीं हो सकता। उन दिनों रिवालविंग चेअर नहीं होती थी। तब मैंने महात्माजी से कुछ ऐसा कहा–आपका दर्शन चारों ओर वाले कर सकें इसका प्रबन्ध मैंने पहिले से ही कर लिया है कि आप जिसमें बैठे हैं वह कुर्सी चक्की के समान घूम सकती है और मैं तुरन्त उसे अति धीरे-धीरे घुमाने लगा जिससे उनके भाषण देते हुए सारे समय सभी लोग उनका दर्शन कर लिये।

तब महात्माजी ने मुझसे कुछ ऐसा कहा:–तू तो बड़ा चतुर निकला। ऐसा तो अब तक किसी ने नहीं किया था। अब दूसरी जगहों में भी तेरी इस प्रणाली का उपयोग करने के लिये कहूंगा।

अब मैं तत्कालीन हैदराबाद शासन द्वारा हिंदुओं पर और विशेष करके आर्य समाजियों पर जो राक्षसी अत्याचार खुले आम किये जाते थे उसका कुछ वर्णन करना चाहता हूं विशेषकर उन घटनाओं का जिनसे महात्मा गांधीजी से सम्पर्क वाली बात थी।

गांधीजी चुप

देश के संपूर्ण आर्यों द्वारा उक्त शासन के विरुद्ध जो सफल शान्तिमय आन्दोलन किया गया था। उस संबंधमें महात्मा गांधीजी को जो गलत खबर बताई गई थी वह कुछ इस प्रकार की थी। कुमारी सुचेताजी ने तब वे सुचेता कृपलानी नहीं हुई थी तथा एक और सज्जन ने जिनका नाम मैं भूल रहा हूं महात्माजी को यह गलत खबर दी कि आर्य समाज द्वारा संचालित सत्याग्रह पूर्णरूप से शान्तिमय नहीं है। दिनांक २७–७–३९ तथा दिनांक १–८–३९ को जब मैं महात्माजी से मिलने गया तब उनने मुझसे इस बात की जिक्र की। तब मैंने उन्हें कुछ इस प्रकार कहा:—महात्माजी मैं कांग्रेस का कार्यकर्ता हूं और आर्य समाज का भी। कांग्रेस सम्बन्धी सत्याग्रह करते हुए मैंने यह स्पष्ट अनुभव किया है कि आर्य समाज का सत्याग्रह कांग्रेस के उन सत्याग्रहों से कई गुना शान्तिमय है। इसके कुछ उदाहरण भी मैंने दिये जिसमे महात्मा जी संतुष्ट हुए।

सिंध के तत्कालीन मुस्लिम लीगी शासन ने महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का अपने प्रान्त में लाना या रखना इसलिये निषिद्ध किया था कि उसके १४ वें समुल्लास में इस्लाम धर्म के विरुद्ध अनुचित आक्षेप है। यह नवम्बर सन् १९४४ की बात है।

तब मैं दिनांक १६–११–१९४४ को महात्माजी से मिलने गया। उनसे मेरी कुछ इस प्रकार की बातें हुई:—

मै : बापूजी हमारे सत्याग्रह को आपका आशीर्वाद चाहिए। महात्माजी—मैं आशीर्वाद कैसे दे सकता हूं। सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें सम्मुल्लास मे तो इस्लाम की बहुत कटु और नाजायज आलोचना की गई है जो अहिंसा की परिधि से कोसों दूर है। उस सम्मुल्लास को तो उस पुस्तक से निकाल देना चाहिए।मै—बापूजी आप ठीक कहते हैं। आप अपनी आज की तराजू से तौल रहे है जिसमें मन वचन और कार्य से तौलना निहित है।

किन्तु १४ वी सम्मुल्लास आपकी आज की भावना के अनुसार नही लिखा गया है। उसकी तुलना तो कुरान शरीफ मे जो हिंदुओं के प्रति उद्‌गार है उससे करना चाहिए। कुरान और हदीसो में कई ऐसे वाक्य है जिसमे काफिरों और गैरमुस्लिमों की हत्या करना न केवल जायज अपितु फर्ज कहा हुआ बतलाया जाता है।

महात्माजी—मै तो चाहूंगा कि उक्त १४ वी सम्मुल्लास आप लोग निकाल दे। मै—बापूजी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान के नाते बिना सभा के प्रस्ताव के ही मै उक्त १४ वां सम्मुल्लास को निकालने को तैयार हूं बशर्ते कि आप मुसलमान मुल्ला और मौलवियो को इस बात पर राजी कर ले कि वे कुरान शरीफ मे भी उक्त आयतों को निकाल देंगे।

महात्माजी—तूने तो मुझे चुप करा दिया। बोल क्या चाहता है।

मै—मैं तो आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप सिंध के मुख्यमंत्री को एक पत्र लिख दें कि जिसमे उक्त १४ वां सम्मुल्लास पर लगाया हुआ प्रतिबन्ध निरस्त कर दिया जावे।

महात्माजी—अच्छा तो मै लिख दूंगा। और प्रतिबन्ध हटा लिया गया।

भोपाल रियासत के तत्कालीन नवाब के शासन मे भी सत्यार्थ-प्रकाश के १४ वां सम्मुल्लास पर उसी प्रकार प्रतिबन्ध लगाया गया था जिस प्रकार कि सिंध के उक्त मुस्लिम शासन द्वारा लगाया गया था।

जून सन् १९४८ में सिहोर आर्य समाज पर उक्त प्रतिबन्ध लगाया गया था।

उन दिनों मै सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान था। उक्त शासन से मेरा पत्र व्यवहार होता रहा। मैंने उन्हें दिनांक ३१-७-४८ के पत्र पर सूचित किया कि यदि आप शान्तिमय रूपसे उक्त प्रतिबन्ध को नही हटावेगे तो सत्याग्रह करना आवश्यक हो जायगा। उनने अपने पत्र दिनांक २६-६-४८ के द्वारा हमें सूचित किया कि उक्त प्रतिबन्ध हटा लिया गया।

ए रिमार्केएबल रूलिंग

तत्कालीन मध्यप्रदेश और विदर्भ विधानसभा का अध्यक्ष दिनांक ३१-७-३७ से दि. १९-२-१९५२ तक मैं रहा।

सितम्बर अक्टूबर सन् १९३७ मे एक घटना हुई। स्वर्गीय बैरिस्टर छेदीलालजी ने विधानसभा में अपना भाषण हिंदी मे दिया जब कि तत्कालीन विधान के अनुसार विधानसभा की भाषा अंग्रेजी थी। इसपर वहां होहल्ला मचा। कुछ सदस्यों ने आक्षेप किया कि छेदीलालजी बैरिस्टर हैं। बिलायत में रह चुके है। अंग्रेजी अच्छी तरह बोल सकते है। फिर आपने अर्थात मैंने अध्यक्ष होते हुए उन्हे हिंदी मे बोलने की अनुमति क्योंकर दी। इसपर बहुत विवाद हुए। समाचार पत्रों में भी इस मेरी व्यवस्था (रूलिंग) की टीका टिप्पणी होने लगी। महात्माजी के कानों तक यह बात पहुंची। महात्माजी ने सारी बातो को सोच समझकर मेरी उक्त व्यवस्था को बिल्कुल शुद्ध माना और अपने 'हरिजन' नामक अंग्रेजी समाचार पत्र दिनांक २ अक्टूबर सन् १९३७ के अंश मे उनने मेरी उस व्यवस्था को बिल्कुल ठीक कहते हुए एक लम्बा लेख अंग्रेजी मे लिखा जिसका शीर्षक था "ए रिमार्केबल रूलिंग" और उसमें उनने यह भी लिखा:—

"माननीय श्री घ. सि. गुप्तजी ने एक रिमार्केबल व्यवस्था रूलिंग दी है जिसका अध्ययन और अनुसरण सभी तत्संबंधी लोगों को करना चाहिए।"

बापू के सारथी डा. हजारीलाल जैन

प्रेषक—डा. शोभाराम देवांगन

डा. हजारीलाल जैन के संस्मरण सुनाने के पहले मै उनके व्यक्तित्व का परिचय करा देना चाहता हूं ताकि मालूम हो जावे कि यह स्वर्ण अवसर डाक्टर साहब को ही क्यों मिला।

डा. हजारीलाल जैन, जिनका निवास स्थान रायपुर जिला स्थित धमतरी नगर है महात्मा गांधी की द्वितीय छत्तीसगढ़ यात्रा के समय संपूर्ण यात्रा मे उनके वाहन के चालक थे। वे गांधीजी के साथ दिनांक २२ नवम्बर से २८ नवम्बर, १९३३ तक एक सप्ताह छाया की तरह रहे। आपका जन्मराष्ट्रीय चेतना के युग मे १५ फरवरी, सन् १९१० में हुआ।हम उम्र बालको की टोली बना गांधीजी से सीखी नैतिक शिक्षा, निष्ठा को उन्हें सिखाते। बीड़ी नही पीना, किसी की चीज नही चुराना, सत्य बोलना, दूसरो की सहायता करना, नेताओं के साथ विदेशी वस्त्रो की होली जलाना, प्रतिदिन झंडा लेकर प्रभातफेरी निकालना।

रुद्री नवागाव गोली कांड (जिसमे मींदू नामक सत्याग्रही शहीद हुआ था) यह स्वयंसेवक झंडा लिये हुए जुलूस के आगे था। सन् १९३०–३२ के है आन्दोलन मे अनेकों बार वह पकड़ा गया, जेल भेज दिया गया या छोड़ दिया गया। कुल मिलाकर १४ माह की जेलयात्रा उनको हुई। साथ में ३००) रुपये का जुर्माना।

स्व. पं. रविशंकर शुक्ला का धमतरी क्षेत्र के आन्दोलन से घनिष्ठ संबंध था। वे युवक हजारीलाल से बहुत प्रभावित थे। छत्तीसगढ़ की यात्रा के समय महात्मा गांधीजी को उनके हाथो सुरक्षित समझ २३ वर्षीय युवक को बापू जी के वाहन चालन की जिम्मेवारी दी गई। श्री हजारीलालजी एक कुशल वाहन चालक भी थे। वे सन् १९३३ के पूर्व ही धमतरी तहसील कांग्रेस कमेटी के मंत्री रह चुके थे।

डा. हजारीलाल जैन के संस्मरण के मुताबिक महात्मा गांधीजी की यात्रा का प्रारंभ दुर्ग मे हुआ। वे उनके दर्शन करने रायपुर से दुर्ग गये थे। रायपुर आगमन के समय उनकी निवास व्यवस्था पं. रविशंकर शुक्लाजी के यहा थी। उनके साथ यात्रा में कु. मीराबेन (अंग्रेज महिला), श्री ठक्कर बापा, श्री महादेव देसाई तथा स्व. जमुनालाल बजाज की पुत्री भी थीं। स्व. शुक्लजी पूरी यात्रा मे उनके साथ रहे। स्वयंसेवकों में थे श्री प्रभूलाल खोंटिया। श्री सीताराम खंडेलवाल, स्व. श्री भगवतीचरण शुक्ला, श्री नन्दकुमार दानी, श्री नारायणराव अम्बीलकर तथा श्री अंबिका चरण शुक्ला।

म्यूनिसिपल गार्डन में स्वदेशी मेला लगा था। जैनजी की कार मे ही महात्मा गांधी बैठकर उद्‌घाटन करने गये। लोग गांधीजी के पैर तक नहीं पहुंच पाते थे तो मोटर के मडगार्ड को ही लोग छूकर प्रणाम कर लेते थे।

प्रथम दिन की यात्रा मौजा मारगांव, खरोरा, पल्लारी, कसडोल होते हुए बलौदाबाजार तथा सिमगा होते हुए वापस रायपुर तक रही।

दूसरे दिन की यात्रा सिमगा, नांदघाट होते हुए बिलासपुर श्री जैन की ही गाड़ी में सभा मंच तक सम्पन्न हुई। वापसी में ट्रेन से रायपुर आये।

तीसरी यात्रा डूमरतराई, माना, अभनपुर मीथोडीह, मगरोड, कुरूद होते हुए धमतरी। धमतरी में सवेरे १०।। बजे ग्राम सभा हुई जिसमें लोकल बोर्ड तथा म्युनिसिपल कमेटी की ओर से मानपत्र दिये गये। मानपत्रों में से एक श्री जैन ने ही आखरी बोली बोलकर १५) रुपये में खरीदा। करीब १ बजे श्री नत्थूजी जगताप के निवास स्थान में भोजन किये। गांधीजी के भोजन में उन दिनों केवल दूध और फल दिये गये थे और साथ में कुछ सूखे मेवे थे। वे भोजन के साथ अखबार पढ़ते जाते थे। उसमें पेंसिल से चिह्न भी अंकित करते थे। पत्रों का बंडल भी उसी समय आ गया। कई पत्रों के पते पर महात्मा गांधी को इंडिया लिखा देखकर आश्चर्य हुआ। कुछ पत्रों को देसाईजी देखते। बापू उन्हें पत्र का जवाब देने को भी कहते। वहां से कार द्वारा ही श्री छोटेलाल बाबू के निवास स्थान के सामने चौक में महिलाओं की सभा को संबोधित किये। उस सभा में महिलाओं को आगे आने तथा छुआछूत न मानने, सबको ईश्वर की संतान बता भेदभाव न करने का उपदेश दिये। वहां से हरिजन मुहल्ला गये। माताओं और बहनों ने उनकी आरती उतारी। चरण सतनामी नामक उनके मुखिया ने भोजन सामग्री लाई। बापूजी ने उसमें से फल लिया। (क्योंकि उन दिनों बापू ने अन्न त्याग दिया था।) उन्हें अपना स्तर ऊंचा उठाने का उपदेश दिये। गांधीजी हरिजन मुहल्ले के घरों की सफाई देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए।

बापूजी की यात्रा अब धमतरी से वापस होने लगी तो मकईबन्ध के पास चलती कार में किसी ने छोटी सी पोटली फेंक दी जो बापू की कनपटी को छूते हुए गिरी। बापू ने उस पोटली को देखने के लिये कहा। उसमें बन्धा था एक गांठ हल्दी, थोड़ा पीला चावल, दो कौड़ी, एक अधन्ना तथा कुछ फूल। बापू ने स्वयं देखा और बहुत प्रसन्न हुए। वे बोले यह किसी सच्चे गरीब की भेंट है, इसे ज्यों का त्यों बांध दो। इसकी नीलामी राजिम नवापारा में होगी। राजिम नवापारा में भाषण के बाद बापूजी ने उस गरीब की भेंट का संक्षिप्त विवरण बता नीलाम किये जिसे किसी ने १०१) रुपये में लिया। उन सभाओं में हरिजन फंड के लिये चंदा जमा किया जाता था, जिसमें महिलाओं ने भी अपने आभूषण उतार कर दिये। वहां से वे रायपुर वापस आये।

रायपुर की सभा एक बार लारी स्कूल में हुई। वापस आते ही सभा मंच पर गये। दूसरी सभा गांधी चौक में हुई थी। चलती कार में रास्ते में ही श्री शुक्लाजी ने कहा बापू हम लोग दो दिन का कार्य एक ही दिन में कर लिये। बापू न जाने उस समय किस भावसागर में थे, बोले—मनुष्य अगर अपना कार्य इसी तरह निश्चित किये हुए समय के पहले कर ले तो एक जन्म में वह दोनों जन्म का कार्य पूरा कर लेगा।

गांधीजी नित्य चार बजे उठते थे। उनकी प्रार्थना में हम सब शरीक होते। बापू टाइम के इतने पाबन्द थे कि समय के साथ घड़ी देखते, जो समय का सूचक होता, एक मिनट का भी अन्तर नहीं पड़ता था। वे उठते और अपने कार्य-क्रम में लग जाते। दूसरों को सावधान होना पड़ता। मैंने अपनी पूरी यात्रा में उन्हें इसी स्थिति में पाया।

डा० जैन नाई के चक्कर में

बापू एक समय मीरा बेन से बोले:—नापी बुला लो।—उन्होंने डा. हजारीलाल जैन से कहा नापी बुला लाओ जी। हीरालालजी चक्कर में पड़ गये। नापी कौन है, जिसे बुलाऊं। सोचे बापू की टोली में कोई नापी नाम के सज्जन होंगे,

जिन्हें बापू बुला रहे हैं। दौड़ के ठक्कर बापा के पास गये और कहा गांधीजी नापी को बुला रहे हैं। किसका ना है नापी? बापा हंस पड़े और हीरालालजी से बोले नाई को बुला लाओ जी। देखना साफ सुथरा हो।

हीरालालजी को तब अपने माखन नाई की याद आई जो ब्राह्मणपारा में रहते थे तथा बड़े ही साफ सुथ नाई थे। दौड़ते हुए सायकिल पर नाई के घर पहुंचे। दरवाजे से ही चिल्ला कर पुकारने लगे:—माखन जल्दी चलो गाधीजी की हजामत बनाना है:—। राम के लिये केवट की पुकार की तरह यह आवाज लगी।

नाई ने आते ही पहले गाधीजी को साष्टांग दण्डवत किया और थोड़ी देर बाद सावधान होकर हजामत बना की तैयारी करते हुए छत्तीसगढ़ी मे हजारीलाल से बोलने लगा:— बने बलाए मालिक, जेखर दरसन बर लाखों मनखे तर थे तेखर देह ल में आज छुए हवों:—औजार गरम पानी से धोया। साबुन का उपयोग बापू नहीं करते थे। खाली पा से उनकी हजामत बनी। आइने के बारे मे बापू ने बताया कि उन्होंने १६ वर्षो से आइना देखना बन्द कर दिये है

बापूजी हजामत बना लेने के बाद जैन से बोले नाई को १।) निछावर कर दो। जैन को निछावर निकाल देख माखन नाई बापू के सामने फिर दंडवत पड़ गया और पैर छू कर बार बार बिनती करनेलगा, मै निछावर्न लगा, महाराज मुझे माफ कर दो, निछावर मिल गयी। इसपर बापू ने हजारीलाल जैन को कहा कि हरी घास लेकर ग को डाल दो। हजारीलाल ने पोलिस कोतवाली के पास से घास खरीदकर गायों को खिला दिया। रामायण में र केवट प्रेम की तरह यह बापू-नाई प्रेम का दृश्य था। जिसके दर्शन का लाभ केवल हजारीलालजी को ही मिल पाया।

बापूजी अपने से बहुत छोटी उम्र वालों से भी समानता तथा आदर का व्यवहार करते थे।

एक बार एक प्रसग बताते हुए डा. हजारीलाल जैन ने बताया कि:—फोटो ग्राफर डिकास्टा, जो गाधीजी ही लक्ष्य कर फोटो खीचना चाहता था, उन्हे फोटो लेते तक के लिये थोड़ी देर गाड़ी रोक लेने के लिये राजी लिये थे। उसी समय बापू गाड़ी में आकर बैठे और गाड़ी को चलते न देख बोले:—जैन चलते क्यों नही:—। मैंने क बापूजी आपका फोटो खीच रहा है।। बापूजी कुछ आगे की ओर झुकते हुए हाथ के इशारे से मुझे इंगित कर फोटोग्रा से बोले:—मेरी तो बहुत उतरी है, इनकी ले लो:—।बस डिकास्टाजी की बन आई और मौका मिलते ही, उसी क्षण के की बटन दबा दी।

डा. हजारीलाल जैन जो अब धमतरी मे ६ मील दूर गोपालपुरी नामक ग्राम मे एक कृषक तथा वैद्य हैसियत से जीवन बिताते है, सेवारत है। गाधीजी के सान्निध्य के संस्मरणों को अपने जीवन के लिये अमूल्य धरोहर मा है। उसे अपने हृदय मे प्राणों से भी अधिक संजोकर रखे है। उनके मस्तिष्क मे आज भी उन दिनों की स्मृतिया चित्र की तरह अंकित होती रहती है।

और लायसेंस रद्द हो गया

—अब्बास भाई

सन् १९२० में हमारी मोटर बस सर्विस रायपुर से आरंग और महासमुन्द तक चलती थी।

सन् १९२० में नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन के संबध में प्रस्ताव पास हुआ तबसे मुझे भी यह महसूस होने लगा कि हर भारतवासी के लिये यह जरूरी है कि विदेशियों को हटावे।

सन् १९२१ मे महात्माजी और मौलाना शौकत अली का रायपुर में आगमन हुआ। उन्हें धमतरी जाना था परन्तु शासन और पुलिस के आतंक के कारण मोटर मिलना दुष्कर था।

पं. शुक्लजी के आह्वान पर मैं महात्माजी, मौलाना शौकत अली और उनकी पार्टी को अपनी मोटर बस में ले जाने के लिये तैयार हुआ। समय पर पुलिस वालों ने मेरे मोटर ड्राइवर को वहीं रोक लिया।

ईश्वर की कृपा थी कि मैं भी मोटर चला सकता था। मैं महात्माजी और मौलाना सहित पं. शुक्लजी और दूसरे नेतागण को रायपुर ब्राह्मणपारा में जो लाइब्रेरी है, वहां से बैठाकर धमतरी ले गया। रास्ते भर में आते-जाते अपार जन-समुदाय ने पूज्य बापू का अपार हर्ष से सम्मान किया। रायपुर मोटर बस सर्विस, रायपुर के नामसे सर्विस चलती थी तथा प्रोप्रायटर वली भाई एण्ड ब्रदर्स।

शासन की कुदृष्टि से हमें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और डिप्टी कमिश्नर श्री सी. ए. क्लार्क ने हमारी कंपनी का मोटर चलाने का लाइसेंस भी रद्द कर दिया। हमें पारावार नुकसान उठाना पड़ा परन्तु देश के कारण इसका हमें कुछ भी अफसोस नहीं हुआ।

गांधी जी की डांट

—गणपत राव जी दानी

कांग्रेस का सदस्य व कार्यकर्त्ता होने के नाते बूढापारा के लोगों ने मुझसे गांधीजी के अपने घर पर बुलाने का आग्रह किया और कहा कि हम गांधीजी की बातें सुनना चाहते हैं। यह बात सन् १९३३ की है। मैंने बड़ी मुश्किल से उनसे समय मांगा और वे दोपहर को आने के लिये राजी हो गये। मैंने भी कुछ गिने चुने लोगों को आमंत्रित किया और ऊपर हाल में सब लोगों के बैठने का इंतजाम किया। करीब ३ बजे गांधीजी को लाने मोटर भेजी। जैसे ही वे मेरे घर आये, मेरे घर के पास करीब ३०० लोगों की भीड़ जमा थी। गांधीजी ने जैसे अंदर प्रवेश किया, मैंने व मेरे साथियों ने फाटक बन्द करने का प्रयास किया जिससे कि भीड़ अन्दर न आने पाये।

मेरे इस कार्य पर गांधीजी बड़े नाराज हुए और लगभग डांटते हुए बोले:—अरे ऐसा क्यों करते हो, बेचारों को आने दो:—और देखते ही देखते पूरा हाल (बैठक) खचाखच भर गया।

गांधी जी बिलासपुर में

—यदुनन्दन प्रसाद श्रीवास्तव

गांधीजी सन् १९३२–३३ में एक दिन के लिये बिलासपुर आये थे। वह दिन बिलासपुर के इतिहास में चि स्मरणीय रहेगा।

सारा बिलासपुर महात्मा के दर्शनों के लिये उमड़ पड़ा था। जिले के कोने-कोने से लोग आये थे। गांधी लगभग ८ बजे सुबह रायपुर से कार द्वारा जाने वाले थे किन्तु सात बजे से ही इतनी भीड़ एकत्रित हो गई कि म मार्ग पर चलना कठिन हो गया था।

बिलासपुर–रायपुर मुख्य मार्ग पर लगभग दो फर्लांग नगर से आगे बढ़कर हमलोगों ने गांधीजी का स्वा किया। स्वागत गान की एक दो पंक्ति मुझे स्मरण है:—

जय जय गांधी महान,
निर्भय के हरि समान,
अविचल जिमि हेमवान,
भानु सो प्रतापवान,
शांतिरूप धारी।।

हर प्रसंग के लिये अलग अलग गाने और गीत तैयार किये गये थे। हरिजन मोहल्ला में प्रवेश द्वार पर गि था—

—:सुनेरी मैंने निर्बल के बल राम:—।

भीड़ देखकर प्रबंध यह किया गया था कि बापू के आते ही पैर छूने वाले दौड़ेंगे, अतः आते ही उनके और स्वयंसेवकों का घेरा डाल दिया जावे। स्वयंसेवकों का संचालन भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री डाक्टर रामाचरण राय रहे थे। स्वागताध्यक्ष थे स्व. पं. कुंज बिहारीलाल अग्निहोत्री। उनके प्रमुख सहायक और रिपोर्टर की हैसियत से मु आदेश था कि मैं सदैव गांधीजी के आसपास ही रहूं।

कार के आते ही भीड़ का दबाव इतना बढ़ा कि स्वयंसेवकों पर आफत आ गई। स्वयंसेवकों के सरक जगह तक न थी। कहीं से उछलकर एक डेढ़ फुट की लकड़ी डाक्टर राय के पेट पर आई और उनके पे कोंचने लगी। डाक्टर साहब को यह भय हुआ कि यह कहीं उनके प्लीहा आदि किसी मार्मिक अंग को आघात न दें। पर लाचारी थी। जगह न मिल रही थी। अचानक कुछ धक्कों के बाद लकड़ी आपसे आप उचककर कहीं चल और खतरा टल गया।

लोग गांधीजी के ऊपर पैसे, रुपये, अठन्नी, चवन्नी फेंकते थे जो घेरे वालों की अर्थात् हमलोगों की खोंपड़ी पर आकर आघात करती थीं, पर हम इसे चुपचाप सहने को बाध्य थे। लोग हमारी टांगों के बीच से तेजी से हाथ घुमाकर गांधीजी को स्पर्श करना चाहते थे। उन्हें स्पर्श तो वे न कर पाते थे किन्तु १००-२०० नाखूनों के आघातों से हमारी पिण्डलियां जरूर फट गई और उनमें काफी खरोंच आई।

भीड़ के कारण बापू की कार आगे नहीं बढ़ पा रही थी। अतः मैं घेरे से बाहर होकर रास्ता साफ करने लग गया। रास्ता मिलते ही ड्रायवर ने कार की रफ्तार कुछ तेज की। भीड़ हटी नहीं। वह भी आगे-आगे दौड़ने लगी और मैं भी दौड़ने पर मजबूर हुआ। निश्चय ही मैं कुचलकर वीरगति पाता, किन्तु भाग्य ने धोखा दिया। जमीन पर आने की जगह न थी। मैं ऊपर ही ऊपर धक्के खाता हुआ भीड़ के बाहर पहुंच गया। कार आगे बढ़ गई।

गांधीजी के ठहरने का प्रबन्ध स्वागताध्यक्ष अग्निहोत्रीजी के यहां किया गया था। मैं जब दौड़ता हांफता वहां पहुंचा तो मकान का लोहे का फाटक बंद था। घुसने का मार्ग भी अवरुद्ध था। किसी प्रकार फाटक तक पहुंचा। लोगों ने मुझे फाटक के कंगूरों पर चढ़ाया और मैं उन नुकीले कंगूरों पर किसी प्रकार पैर जमाकर भीतर कूद गया। कूदने के पहले एक दृश्य देखा। एक वयोवृद्ध सेठजी जो अछूतोद्धार के कारण कल तक गांधीजी को गालियां देते थे, आज उनके दर्शनों के लिये भीड़ में धक्के खा रहे थे। सेठजी की पगड़ी का एक छोर उनके हाथ में और दूसरे छोर पांच सात गज की दूरी पर किसी दूसरे के हाथ में था। पगड़ी के लिये दोनों ओर से रस्साकसी चली हुई थी। सेठजी उसे वापस चाहते थे, भीड़ उसे किनारे फेंकने की कोशिश में थी। निन्दक भी गांधीजी के दर्शन स्पर्श के लिये पागल हो उठते थे। गांधीजी का आकर्षण ऐसा ही था।

भोजन और कुछ विश्राम के बाद गांधीजी महिलाओं की सभा में जाने के लिये तैयार हुए। उसमें पुरुषों को जाने की व्यवस्था न थी। फाटक पर कुछ स्वयंसेवक जरूर खड़े कर दिये गये थे किन्तु मुझे तो जाना ही था-रिपोर्टिंग के लिये।

भीड़ बराबर डटी हुई थी अतः गांधीजी को पीछे के दरवाजे से बाहर निकाला गया। पर तब तक भीड़ को गंध मिल गई और लोग दौड़ पड़े। गांधीजी का एक पैर पायदान पर जा चुका था, दूसरे पैर को किसी ने पकड़ लिया। मुझे कोई उपाय न सूझा तो मैंने जूता सहित अपना पैर उसके हाथ पर रख दबाया। काम क्रूरता का था, किन्तु गांधीजी का पैर छूट गया और हम लोग वहां से चल दिये।

महिलाओं की सभा में पहुंचते तक मैं इतना थक गया था कि मस्तिष्क ने शायद काम करना बन्द कर दिया। सभा में कई सम्भ्रान्त महिलायें थीं जिनसे मैं अच्छी तरह परिचित था, पर मैंने उन्हे पहिचाना नहीं और प्रश्नों का उत्तर भी ठीक से देना कठिन होता चला गया।

इस सभा से गांधीजी आम सभा में पहुंचे। उनके लिये एक ऊंचा मंच बनाया गया था और उसपर केवल ४-५ लोगों के बैठने की ही जगह थी। एक ओर मैं बैठा हुआ था, कुछ लिख रहा था, दूसरी ओर अग्निहोत्रीजी थे। सभा समाप्ति पर गांधीजी उठे और यहां भी दो बहुत ही सम्भ्रान्त किन्तु विरोधी सज्जनों ने गांधीजी के पैर पकड़ लिये। खतरा यह था कि गांधीजी को धक्का न लग जावे और वे गिर न जावें। मेरे कानों में आवाज आई:-यह क्या कर रहे हो? मैं लिखना छोड़कर उछला और बिना देखे उन दोनों परिचित सम्भ्रान्त सज्जनों को दस बीस धक्के-घूंसे लगाये। पैर छूट गया और गांधीजी स्टेशन चल दिये। मैं फिर भीड़ में फंसकर पिछड़ गया और आधा घंटे देर से स्टेशन पहुंचा।

स्टेशन पर भी वही हाल, वही भीड़। गाड़ी आने पर गांधीजी को डब्बे तक पहुंचाने के लिये फिर छोटा घेरा डाल
पड़ा किन्तु हमें चलना न पड़ा। भीड़ के धक्कों ने हमें डिब्बे तक पहुंचा दिया। गाड़ी छूट जाने पर हमने राहत की सां
ली। कार्य सकुशल निपट चुका था।

मैं गांधीजी की अहिंसा पर विश्वास करने वालों में से हूं और स्वभाव से शान्त हूं। किन्तु उस दिन मालू
नहीं क्या हो गया था कि जीवन मे प्रथम और शायद (अभी तक) अंतिम बार मैंने अहिंसा की प्रतिमूर्ति के सामने
करना और मार तक कर दी। आज भी मुझे अपनी इस बदतमीजी की स्मृति अखरती है।

उस दिन का दृश्य भूला नहीं है। गांधीजी मे क्या जादू और आकर्षण था? लोग पागलों की तरह दौ
और कार्य करते थे।

इस स्मृति के साथ-साथ मुझे किसी अंग्रेजी दैनिक में निकले एक लेख की याद आ जाती है। बात सन् १९:
की है:-लेख का शीर्षक था:-हू रूल्स इंडिया:-? भारत पर किसका राज्य है?

गांधीजी बम्बई पहुंचने वाले थे। इसके दो घंटे पूर्व वायसराय की स्पेशल ट्रेन आई। फौज, शासकीय अ
कारी, दरबारी, फूलमाले, पल्टन, बैंड, टीमटाम पूरा था, पर जनता गैर हाजिर थी।

दो घंटे के बाद जब उसी प्लेटफार्म पर अपने थर्ड क्लास के डिब्बे से गांधीजी उतरे तो २ लाख जनता
वित थी और "गांधीजी की जय" के गगनभेदी नारे से स्टेशन की दीवारें हिल रही थीं। लेख का मन्तव्य शायद
रहा होगा कि भारत पर आज (सन् १९२३) गांधी का राज्य है, अंग्रेजों का नहीं। वह तो लगभग उठ चुका है।
निहत्थे मुट्ठी भर ढांचे का देश पर ऐसा ही चमत्कारिक प्रभाव था।

कस्तूरबा को दण्ड

–श्रीमती इंदिरा बाई लाखे

वर्धा के सेवाग्राम की बात है, वहां ऐसा नियम था कि रोज कस्तूरबा बच्चों को अपने हाथों से सब्जी परोस
एक दिन की बात है बच्चे कतार में बैठे थे और कस्तूरबा अपने हाथ मे बर्तन लेकर परोस रही थीं।
बालक को वह दो चम्मच सब्जी देते जा रही थी, अचानक वह एक स्थान पर रुकी और उस बालक को उन्होंने
चम्मच सब्जी दे डाली। यह बालक और कोई नहीं उनका स्वयं का लड़का था। किन्तु गांधीजी ने इस बात को
आंखों से देख लिया। उन्होंने फौरन कस्तूरबा को आश्रम खाली करने को कहा और कहा कि जब तक आश्रम में
लोग उन्हें माफ नहीं करते, तब तक वे आश्रम में नहीं आ सकेंगी। अब कस्तूरबा को काटो तो खून नहीं। वे आश्रम के
व्यक्तियों के पास गई और उन सब लोगों को अपना अपराध बताया और कहा कि जब तक आप लोग माफ नहीं करते
तक बापू मुझे आश्रम में नहीं आने देंगे। सब लोगों को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सब लोग गांधीजी के
गये और उनसे अनुरोध किया कि उन्होंने "बा" को माफ कर दिया है और अब आप भी माफ कर दें, और उन्हें
से न निकालें। अन्त में गांधीजी इन सबसे सहमत हो गये और कस्तूरबा आश्रम मे रहने लगीं।

तोसरा दर्जा देखो

–प्रभूलाल काबरा

यूं तो मैंने गांधीजी को कई बार देखा, कलकत्ते मे उनके समीप मौन बैठने का सौभाग्य भी पाया पर कभी यह हिम्मत न हुई कि कुछ बोलता। बोलता ही क्या? लडका जो था?

गांधीजी को सर्वप्रथम मैंने मोती बेचने वाले काठियावाड़ी पगड़ी मे देखा। दूसरी दफा कालर वाला कुरता, फिर लगोटी में ही। राजनादगांव में:–गांधीजी मौ.मोहम्मद अली,शौकत अली,जमनालाल बजाज,केसाथ जब कलकत्ता जा रहे थे तब अपार भीड़ स्टेशन पर उमड़ रही थी। गाड़ी रुकी। गांधीजी हाथ जोड़ कुछ कह रहे थे किन्तु जय जयकार में कुछ भी सुनाई न पड़ा। मौ. मोहम्मद अली बेंच पर बैठ कर कुछ लिख रहे थ। सूत की मालाएं पहिनाई। मौ.शौकत अली को माला पहिनाने का आदेश हुआ। इतना ही सुना चरखा चलाओ, खादी पहनो। गाड़ी खसकी। अतृप्त नयनो से जनता चल पड़ी।

जिस समय व कलकत्त के खास अधिवेशन मे जा रहेथे उसी ट्रेन से लोकमान्य तिलक, दादा साहब खापडे, डा. मुंजे भी प्रथम दर्जे के डब्बे में यात्रा कर रहे थे। रायपुर में जब गाड़ी रुकी तो जनता गांधीजी के दर्शन करने उमड़ पड़ी। लोकमान्य और उनके साथी चाय पीने नीचे उतरे। जब गांधीजी नहीं दिखाई दिये तो जनता पूछने लगी:–गांधीजी कहां है?,:–देखो किसी तीसरे दर्जे में बैठा होगा:–उत्तर था। लोग उल्टे पैर भागे–एक एक डिब्बा निहारने लगे कि एक यात्री ने इशारा किया–यहां है। फिर क्या पूछना था, आखिर गांधीजी ने दरवाजा खोला। हाथ जोड़ खड़े हो गये। वे डब्बे में नीचे बैठे थे। आंखें छलक उठीं। कई रोने लगे।

जब गांधीजी रायपुर आये:––

ज्योंही गाड़ी प्लेटफार्म पर लगी, श्री शुक्ल आदि नेतागण सूत की मालायें ले भीड़ चीरते आ रहे थे कि–गांधीजी उतरकर सीधे स्टेशन के बड़े दरवाजे से निकल कार के पास पहुंच गये। दौड़कर मालाये पहिनाई। जनता दर्शन कर प्लेटफार्म से लौटी कि कार चालू हो गई। मणी बहन प्लेटफार्म पर ही थीं। एक-एक सामान को गिन-गिनकर जब देख लिया कि ठीक है तब सीधे शुक्लजी के मकान पर पहुंचीं। सब सामान रखा,बकरी कहा है:–पूछा। डाक्टरी जांच का सर्टिफिकेट? कमरे की सफाई देखी। एक-एक मिनट मीरा बहन के लिये काम का था। गांधीजी का सारा इंतजाम उनके जिम्मे था। दोपहर के बाद लारी हाई स्कूल के मैदान में गांधीजी का भाषण हुआ। वे धीरे-धीरे स्पष्ट बोलते थे। बीच में पानी की घूट लेते। वह दृश्य देखने लायक था, जब गांधीजी ने हरिजनों के लिए झोली उठाई। स्वयंसेवक घूम पड़े। कभी स्वप्न में भी थोड़ा न देने वालों ने भी, जो कुछ खीसे से निकला दे दिया। बहिनें, महिलाओं न तो सोने चांदी के जेवर व जो कुछ भी उनके पास था, निकालकर ढेर कर दिया।

महात्मा गांधी के साथ छै दिन

—यतियतन लाल जी

दुर्ग से ६ बजे शाम को रायपुर मोटर द्वारा प्रस्थान। कुम्हारी से ही भीड़ और स्वागत भेंट प्रारम्भ हो गयी। आमापारा में मिशनरियों की ओर से स्वागत हुआ। आमापारा स्कूल के सामने रायपुर नगर की ओर से अपार उल्लास एवं हर्ष के साथ स्वागत हुआ। वहां से शुक्लजी के घर पहुंचते-पहुंचते तीन घंटे लगे। यहां एक दृश्य अपूर्व था वर्णन करते नही बनता था। दीपमालिका की जगमगाहट भी मात हो गई थी। महात्माजी प्रसन्न थे।

दिनांक २३–११–३३ को लगभग चार बजे प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। उस अवसर पर एक लाख से ऊपर ही मानव मेदनी की भीड़ थी। –मानो रायपुर जिला ही उमड़ पड़ा था। जिधर देखो उधर नर मुंड ही नर मुंड दिखाई देते थे। भाग्य से रेडियो भी बेकार हो गया। लोगों की भीड़ कल से भी अधिक थी। महात्माजी को अति कठिनाई के साथ दूसरे रास्ते से ले जाना पड़ा एव भीड़ का भी सामना करना पड़ा।दिनाक २४–११–३३– को लारी स्कूल (सप्रे स्कूल) में समस्त संस्थाओं की ओर से मानपत्र समर्पित किये गये। इसके पूर्व मंगलाचरण भजन जो मैंने गाया था, वह आगे लिखा है। इस अवसर पर भी मानव मेदिनी उमडी थी। यहां से मौदाहापारा हरिजन सभा मे भाषण हुआ। सतनामी आश्रम का निरीक्षण अनाथालय का निरीक्षण, तथा शिला लेखो का उद्घाटन किया गया।

धमतरी, राजिम, नयापारा, भाटापारा, बलौदा, मुंगेली, बिलासपुर आदि स्थानों पर सर्वत्र एक सी भीड़ दिखाई देती थी। जाते समय रास्ते पर रुकते और चलते थे। जहां भी थैली दिखाई दी–मोटर रुकती थी–तब भीड़ पिल पडती थी, सारा शरीर थककर चूर हो जाने पर भी दूसरे दिन वही जोश सारे कार्य सफलता से सपन्न होते थे।

बच्चों के साथ बाल क्रीड़ा होती थी। बच्चों को खाने की सूचना मिलते ही उन्हे एकत्रित कर महात्मा जी के पास ले जाया जाता था। तब बच्चों के खेल होते थे। उन्हे पुचकारना, थपथपाना, खिलाना आदि सब खेल शामिल थ। आज्ञा होते ही बच्चे हंसते-हंसते विदा होते थे। दर्शनीय दृश्य देखते ही मानव आनन्द मग्न हो जाता था।

हिन्दू महासभा की ओर से आये लोग तथा पंडित गण हरिजन कार्यक्रमों से चिढ़ते थे। धर्म विरुद्ध मानते थे तथा अमंगल अश्लील शब्दावली जो कि न कहने योग्य शब्द कहते थे। इससे जनता भड़क उठती थी परन्तु इसके विपरीत महात्माजी कहते थे, इनकी रक्षा करो–जनता को समझाओ, इनपर तरस खाओ––इस प्रकार आदर्श करुणार्द्र शब्दावली तथा महात्माजी की प्रशांत मुद्रा से हमलोग द्रवीभूत नतमस्तक हो जाते थे। धन्य हो महापुरुष, धन्य हो वन्दनीय हो। रायपुर इसके पूर्व भी अली बन्धुओं सहित १९२० मे आये थे। छत्तीसगढ़ का सौभाग्य तथा बापू का आशीर्वाद छत्तीसगढ़ को रहा है एवं शुक्लाजी का श्रम सदा सफल रहा है,

(शेष पृष्ठ ३० पर)

मैं बनिया हूं

–कन्हैयालाल वर्मा

विदेशी साम्राज्य के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रारंभिक काल मे जब महात्मा गांधीजी की रायपुर पर कृपा हुई तब यहां की जनता ने उनका हर्षोल्लासपूर्ण स्वागत किया हरिजनों में भी आशा और उत्साह की प्रदीप्ति हुई। गांधी चौक मे महात्माजी का भाषण श्रवण करने अपार जन समूह एकत्रित हो गया। उनके मंच पर पधारते ही एकदम शांति हो गई। सबकी दृष्टि उनके दर्शन मे तल्लीन हो गई। सरल सौम्य शब्दों में गांधीजी ने अपना कार्यक्रम श्रोताओं को समझाया और स्वराज्य प्राप्ति के आन्दोलन मे प्रत्येक व्यक्ति से तन, मन, धन की सहायता की याचना की। शीघ्र ही उनकी झोली कई प्रकार की वस्तुओं से भर गई। जब महात्माजी ने कहा कि मैं बनिया हूं, इन चीजों का नीलाम करूंगा तब लोग बहुत प्रसन्न हुए और नीलाम की हरएक चीज मूल से कई गुने अधिक दाम में बिक गई। महात्माजी ने जनता को बहुत धन्यवाद दिया।

रायपुर के स्त्री वर्ग के लिये गांधीजी के भाषण का विशेष आयोजन नयापारा में मछली बाड़े में किया गया। पर्दे में रहने वाली स्त्रियां बड़ी संख्या में उपस्थित हुई और गांधीजी के प्रवचन से प्रभावित होकर सभी प्रकार की स्त्रियों ने नगदी और आभूषण महात्माजी को प्रदान किये। इस प्रकार संपूर्ण रायपुर का वातावरण उल्लासपूर्ण हो गया।

महात्माजी की प्रातःकालीन और सायंकालीन प्रार्थनाओं में भी स्त्री पुरुष भक्तिभाव से भाग लेते रहे। आत्मशक्ति की समर्थता पर विश्वास बढ़ गया और महात्माजी पर जनता की श्रद्धा में अतीव वृद्धि हुई।

आनन्द समाज (लाइब्रेरी) पुस्तकालय के पास महात्मा गांधी के साथ रायपुर की जनता ने मौलाना बन्धुओं को भी देखा और सुना। महात्माजी के दाहिने हाथ मौलाना मोहम्मद अली का गंभीर भाषण बहुत प्रभावोत्पादक हुआ। दूसरा भाषण महात्माजी के बाईं ओर के मौलाना शौकत अली का ओजपूर्ण रहा। गांधीजी ने दोनों भाषणों का समन्वय उपस्थित किया।

रायपुर मे हिंदू-मुस्लिम एकता सदा से रही आई है मौलाना बन्धुओं के साथ महात्माजी का सत्संग सोने मे सुगंध का काम कर गया। महात्मा के दर्शन और श्रवणसे प्रभावित होकर रायपुर में छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े इत्यादि सभी धर्मों और वर्गों के व्यक्तियों ने निश्चय किया कि बुराइयों को दूर करके अपनी आत्मशक्ति बढ़ावेंगे और सत्य और अहिंसा के बल देश की स्वतंत्रता की प्राप्ति में यथेष्ट सहयोग प्रदान करेंगे।

इस वर्ष की होली में रायपुर की जनता ने अपशब्दों का प्रयोग करने के बदले गांधीजी की जय मनाई।

टोपी पहनो खादी की, जय बोलो महात्मा गांधी की॥

गांधीजी के रायपुर आगमन से स्थानीय सरकारी अधिकारी भी प्रभावित हुए। न्यायाधीशों और आरक्षी अधि-

[illegible] दिया कि यदि आप शान्तिमय [illegible] [illegible] के अधिकारी भी उसका हार्दिक समर्थन [illegible] किया।

सोने का छल्ला

[illegible] को सम्बोधित करना था। सम्बोधित करने के लिये श्री [illegible] [illegible] को सम्बोधित किया। अपने स्वभाव के अनुसार [illegible] परन्तु उस जमाने के अनुसार सबसे [illegible] का छल्ला। [illegible] सम्बोधित करना था। [illegible] अंगूठी प्राप्त हुई है। उन्होंने कहा कि [illegible] इस प्रकार उन्होंने उस अंगूठी की नीलामी लगाई। [illegible] में नीलाम हुई।

(शेष पृष्ठ २८ का)

(श्री यतिजी का मंगलाचरण)

पधारो, हे शबरी के राम, हमारा सविनय तुम्हें प्रणाम।
हे अस्पृश्य सेवा व्रतधारी, हरिजन बन्धु अकाम,
नवजीवन की ज्योति जगाने, आये जग अभिराम॥—॥
नाथ सकल साधन विरहित हैं, हम सब निपट सकाम,
जन चातक की आश तुम्हीं हो, मन मोहन घनश्याम॥—॥
महानदी कृत मंजु मेखला, कोशलभूमि ललाम,
चल कर तव शुभ चरण चिह्न पर, अमर करें निज नाम॥—॥
यह प्राचीन दंडक वन प्यारा, योग सिद्धि का धाम,
सफल करें तव दिन साधन का, मंगलमय शुभ काम॥—॥
चुका न सकते देव तुम्हारे, जन सेवा का दाम,
ग्रहण करो हे पूज्य अतिथि, यह त्याग सुधा का जाम॥—॥

जब ताले का आतंक भी विफल हो गया

—रामशरण तंबोली

तब मैं शासकीय हाईस्कूल बिलासपुर में ११ वीं कक्षा का विद्यार्थी था और शाला के पीछे बने छात्रावास में ही रहता था। हरिजन आन्दोलन की प्रगति के लिये नवम्बर, १९३३ से दस माह तक गांधीजी ने देश के कोने-कोने तक का दौरा किया। इसी सिलसिले में वे बिलासपुर भी पधारे थे। शनिवार का दिन था। शहर में तिल धरने को जगह नही थी। अपने प्यारे बापू के दर्शन के लिये लोग दूर-दूर से दौड़ पड़े थे। शाम को चार बजे शनीचरी पड़ाव में भाषण होने वाला था पर सबेरे दस बजे से ही हमारे छात्रावास के मुख्य द्वारों पर ताले लगा दिये गये और हम कैदियों की भांति सीकचों मे झांकने को विवश हो गये। क्रमशः विद्रोह की भावना उठी और चार बजे तक हमारे उपद्रवों ने उग्र रूप धारण कर लिया। वार्डन ने तुरन्त हेडमास्टर साहब को बुलवाया। आते ही वे हमलोगों पर बरस पड़े:– यह सरकारी छात्रावास है तुम्हें सरकारी कानून मानना पड़ेगा, कहते हुए वे बार-बार बेंत चमकाते और रेस्टीकेट करने की धमकी देते रहे। हम लोगों ने उन्हें बहुतेरा समझाया कि जब अन्य सब शासकीय लोग इस प्रकार तालों में बन्द नही हैं तो हम कुछ विद्यार्थी ही क्यों यह यातना सहें। उन्हें कोई तर्क प्रभावित न कर सका और इससे गांधीजी के भाषण का समय निकल गया। वे थोड़ी देर में हमारे स्कूल के सामने से ही स्टेशन लौटने वाले थे। मैंने प्रार्थना की कि हमें स्कूल के मैदान में वार्डन की देखरेख में हाकी खेलने दिया जावे जिससे हम उनकी एक झलक तो पा सकें। प्रार्थना मंजूर हुई और ताले खुल गये किन्तु ज्यों ही हमलोगों ने खेल शुरू किया कि मोटरें तेज रफ्तार से निकल गई और हम दर्शन भी न पा सके।

अब चूंकि गांधीजी स्टेशन जा चुके थे और १५ मिनिट में गाडी रायपुर के लिये छूटने वाली थी, इसलिये अधिकारीगण निश्चिन्त हो गये। मेरा मन दर्शन न पाने के कारण बेचैन हो रहा था। एकाएक स्फूरणा हुई कि प्रयत्न करने से अब भी सफलता मिल सकती है और मैं चुपचाप स्टेशन की ओर दौड पड़ा। वहां पहुंचकर देखा कि प्लेटफार्म पर अपार भीड़ है। गांधीजी डब्बे के दरवाजे पर झोली लिये खडे थे और लोग बारी-बारी से झोली में चन्दा डालकर उन्हें प्रणाम कर रहे थे। भाग्य से मेरी जेब में एक दुअन्नी पड़ी थी। अतः मैं भी जोर से आगे बढ़ा। बापू की निगाह मुझपर पड़ गई और उनके संकेत से मेरे लिये रास्ता बन गया। मैंने दुअन्नी उनकी झोली में डाली और पैर छूकर उन्हें प्रणाम किया ही था कि गाडी चल पड़ी।

यों तो स्वर्गीय माखनलालजी चतुर्वेदीजी ने १२ मार्च सन् १९२१ को ही बिलासपुर में गांधीजी के सिद्धान्तों का अविस्मरणीय उद्बोधन कर दिया था। तथापि गांधीजी के उक्त दोहे से छत्तीसगढ़ में मानो गांधीवाद छा ही गया। गांव-गांव में लोग खादी पहनने लगे और सूत कातते हुए यह गीत गाने लगे–अवतार महात्मा गांधी का भारत का भार उतारन को। जिला बोर्ड के अधिकांश शिक्षकों ने खादी की पोशाक धारण कर गांधीवाद का प्रचार शुरू कर दिया। उन्हें

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

एक कट्टर बनिया

० मुनाफे के लिये नहीं भाषा के लिए....

मुकुटधर पांडे

सन् १९२८ की बात है,कलकत्ते में कांग्रेस का अधिवेशन था। अध्यक्ष पंडित मोतीलाल नेहरू थे। उसी अवसर पर महात्मा गांधी की अध्यक्षता में अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा सम्मेलन भी हो रहा था, जिसकी स्वागत कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष थी सुभाषचन्द्र बोस और मंत्री पं. बनारसीदास चतुर्वेदी थे। चतुर्वेदीजी तब कलकत्ते में ही रहते थे। श्री रामानन्द चटर्जी के—'माडर्न रिव्यू' कार्यालय से निकलने वाले हिन्दी मासिक पत्रिका—'विशाल भारत' के संपादक थे।

राष्ट्रभाषा सम्मेलन के लिय मैने एक कविता लिखी थी जिसकी चार पंक्तियां मुझे आज भी याद हैं (कविता सो जाने कहां खो गई)।

स्वतन्त्रता, शिक्षा-कला कुल कूलिता,
धन, चैतन्य की यह बंग भू,
रत्न, कंचन के सुभग संयोग सा,
आज हिन्दी की बनी है रंग भू॥

चतुर्वेदीजी ने अपनी ओर से छपवाकर इसे सम्मेलन में बंटवाया था। वे चाहते थे कि मैं स्वयं उसे सम्मेलन के मंच से पढ़ूं। सम्मेलन के दिन वे मुझे अपने साथ पंडाल में ले गये। मंच पर केवल तीन कुर्सियां थीं। मध्य की कुर्सी पर गांधीजी बैठे हुए थे, उनकी बाई ओर सुभाषचन्द्र बाबू थे और दाई ओर चतुर्वेदीजी थे। मुझे भी आग्रहपूर्वक बैठाया गया।

एकाएक अपने को विश्व-वंद्य गांधीजी के पार्श्व में पाकर मुझे संकोच हो रहा था। यह चतुर्वेदीजी की कृपा थी। वे स्वयं अपनी फाइलों के साथ मंच के फर्श पर बैठे हुए थे। पंडाल में इतनी भीड़ थी कि तिल रखने को जगह नही नहीं थी। देश भर के बड़े-बड़े नेता और श्री पुरुषोत्तमदासजी टंडन प्रमुख हिंदी के अनेक धनी व्यक्ति उपस्थित थे।

मैने कविता पढ़ी। सुभाष बाबू का भाषण हुआ। उसके बाद महात्माजी बोले। वे हिंदी में बोल रहे थे। कैसा सरल, सुबोध और सुन्दर भाषण था उनका। मुझे इनके अंतिम कुछ वाक्य याद हैं। उन्होंने कहा था—:मैं हूं बनियां, पैसे का महत्व समझता हूं। मुझे दक्षिणा में हिंदी प्रचार के लिये पैसा चाहिए। उनका कहना था कि रुपयों और नोटों की वर्षा होने लगी। महिलायें अपने आभूषण निकालकर फेंकने लगीं। श्री शिवप्रसाद गुप्ता और श्री जमुनालाल बजाज उन्हें बटोरने लगे। ऐसा था महात्मा गांधीजी का प्रभाव। उनके त्याग और तपस्या का ही यह प्रभाव था

और दूसरे दिन चतुर्वेदीजी मुझे गांधीजी से मिलाने उनके निवास स्थान थियेटर रोड ले गये। वहां बिड़ला जैसे करोड़पति को मैंने उनके सामने हाथ जोड़े खड़े देखा। वे चरखा कात रहे थे, बीच-बीच में एक दो बातें कर लेते थे।

महात्मा गांधी को निकट से देखने, सुनने का मौका मुझे सन् १९३६ मे नागपुर में भी मिला था। उनकी अध्यक्षता में—:भारतीय साहित्य परिषद:—की बैठक विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भवन में हुई थी जिसमें देश भर के अनेक गण्य-मान्य साहित्यकारों ने भाग लिया था। परिषद में—:राष्ट्रभाषा:—हिन्दी में हंस नामक एक मासिक पत्र निकालने का निश्चय किया गया था, जिसके संपादक मुंशी प्रेमचंदजी नियुक्त किये गये थे।

जब कुलीन वर्ग की प्रतिष्ठा उपेक्षित

—राज वैद्यजी:

महात्मा गांधी थोड़े ही वस्त्र पहनते थे, पर वे वस्त्र बड़े साफ रहते थे। घुटनों तक की धोती और गले पर से दुपट्टा ही इनका प्राय: वस्त्र होता था, पर दोनों ही विशेष प्रकार से पहने जाते थे। इसके अतिरिक्त छोटा सा कपड़े का टुकड़ा भी साथ रखते थे जो रूमाल का काम करता था। एक बार सभा में जाने के लिये वे तैयार थे, परन्तु रूमाल नहीं मिल रहा था। महात्माजी बड़े अप्रसन्न हुए और सभी लोग रूमाल की खोज में लगे। उन्हे दूसरा रूमाल दिया जाने लगा, पर उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। कहने लगे:—मेरा सारा समय इस तरह के व्यर्थ के काम मे चला जाता है:—।

आखिर रूमाल मिल गया और उन्होंने सार्वजनिक सभा के लिये प्रस्थान किया। यह घटना इस बात को प्रमाणित करती है कि वह अपव्यय के बड़े ही विरोधी थे और सब वस्तुओं को सुव्यवस्थित रूप से रखना और प्रयोग करना पसन्द करते थे। किसी वस्तु को बर्बाद करना, उन्हे बहुत ही नापसन्द था।

१९३३ में गांधीजी ने वर्धा में अपना स्थाई आश्रम बना लिया था। उन्होंने उस आश्रम का नाम "सेवाग्राम" रखा। इसी के पश्चात् वे छत्तीसगढ़ की यात्रा पर निकल आये। सर्वप्रथम वे रायपुर आये। व इनके साथ में स्व. मुख्यमंत्री पं. रविशंकरजी शुक्ला भी आये। उन्होंने अपनी यात्रा रेलगाड़ी के तृतीय वर्ग में ही की। अब उन्होंने यह नियम बना लिया था कि जहां जावेंगे रहने के लिये हरिजन मुहल्लों का चुनाव करेंगे। वे एक हरिजन के यहां रुके और सभी लोगो को आनन्द हुआ जो स्वाभाविक है। ये जो अछूत है, जिन्हें लोग समाज से अलग मानते है, अगर उनके यहां मैं रुक गया तो वे लोग अपने को धन्य समझेंगे। गांधीजी ने हमेशा देश में भेदभाव दूर करने का प्रयत्न किया। उन्होंने ही हरिजनों को मंदिरों में प्रवेश कराया। उन्होंने ही लोगों को समझाया कि हरिजन कोई दूसरा नहीं वरन् अपने ही समाज का एक अंग हैं। उन्होंने कहा कि छुआछूत को मानना मानवता के दृष्टिकोण से बहुत ही गलत है। छुआछूत हिंदू धर्म का अंग नहीं है। इतना ही नहीं, बल्कि उसमें घुसी हुई सड़न है, वहम है, पाप है और उसका निवारण करना प्रत्येक हिंदू का धर्म है, कर्त्तव्य है।

उपरोक्त बात गाधीजी ने हरिजन मोहल्ले मे एक आम सभा को संबोधित करते समय कही थी।

मेहतर से तकली मास्टर

—जयदेव सतपथी

मैं मई ३८ में वर्धा के सेवाग्राम आश्रम में दो माह के लिये गया। जिस दिन मैं वहां पहुंचा मुझे महात्माजी के पास वहां के कार्यकर्ता ले गये। महात्माजी ने मुझे कहा कि कल से तुमको "मेहतर" का काम करना है। मैंने हां तो कह दिया लेकिन मेरा दिल मचलने लगा तथा मैं सोच में पड़ गया कि अब कैसा होगा।

वहा पर जो मेहतर का काम करते थे, उनका काम पानी से पैखाना साफ करना व बाल्टी ले जाकर नदी के पास रख देना इसके बाद जो वैतनिक मेहतर थे वे बाल्टी उठाकर ले जाते थे और साफ करके बाल्टी वापस कर देते थे। यह काम मैंने एक सप्ताह तक किया। पहले दिन ही मुझे कुछ घृणा सी महसूस हुई लेकिन बाद में मुझे यह साधारण सा लगने लगा। ठीक ८ बजे दिन मुझे महात्माजी ने बुलाया और कहा कि आज से तुम तकली मास्टर हो और आश्रम में तकली कातना सिखाया करो। इस तरह आठ दिनों के अन्दर ही मैं मेहतर से तकली मास्टर बन गया।

वहां पर भोजन भी बड़ा साधारण रहता था। लाल चावल का भात, उबले आलू और मोटी रोटियां तथा इन सब पर एक-एक चम्मच कच्चा तिल्ली का तेल डाला जाता था। पहले दिन जब मैंने यह भोजन किया तो जहां-जहां तेल पड़ा था वह भाग मैंने अलग कर दिया था क्योंकि यह पहला मौका था जब कच्चा तेल मैंने खाया था। लेकिन दूसरे दिन के बाद से धीरे-धीरे आदत ही बन गई और आज भी मुझे वह भोजन अन्य भोजन से अच्छा लगता है। मैं जब वहां गया था तो मेरा वजन १३२ पौंड था और जब दो माह बाद लौटा तो मेरा वजन १८८ पौंड हो गया था। इस प्रकार वह भोजन मेरे लिये बड़ा ही लाभप्रद सिद्ध हुआ।

धन्य मेरे भाग्य

—कुबेर नाई

सन् १९३०-३१ में गांधीजी जब रायपुर आये थे, उस समय वे प. रविशंकर शुक्ला के यहां ठहरे थे। वहां पर मैंने गांधीजी के बाल बनाये थे। गांधीजी के बाल बनाते समय एक तरफ शुक्लाजी खड़े थे और दूसरी ओर कोई नेता खड़े थे। मैंने जब बाल बना दिये तब मुझे एक रुपया बाल बनाई का दिया जाने लगा। तो मैंने ने कहा कि धन्य है मेरे भाग्य—जो मुझे भगवान तुल्य पुरुष के बाल बनाने का अवसर प्राप्त हुआ और मैं तो सब कुछ पा गया। मैंने रुपया नही लिया। जिस पुरुष को देखने के लिये कई आदमियों को लगातार खड़े होकर बड़ी कठिनाई से देर तक प्रतीक्षा के बाद दर्शन होते है, बड़ी देर तक वे मेरे समक्ष बैठे रहे। मैंने देखा कि उनके हाथ बड़े लम्बे और देह स्वर्ण की भांति झलकती थी।

मैंने वे बाल कई दिनों तक अपने सजुए में रखे और बाद में सजुआ पुराना होने के कारण टूट गया।

(शेष पृष्ठ ३१ का)

प्रोत्साहन देने के लिये रायपुर मे पं. सुन्दरलालजी शर्मा, स्व. प. रविशंकर शुक्ला तथा बिलासपुर में स्व. छेदीलालजी बैरिस्टर जैसे नेता मिल गये और इन्होंने जनजीवन में गांधीवाद को ऐसा प्रतिष्ठित करा दिया कि अन्यवाद अभी तक छत्तीसगढ़ में ठीक से पनप नहीं सके। किसानों के हृदय सिंहासनों पर गांधी बाबा ऐसे विराजमान हुए कि वे कांग्रेस को छोड़कर अपना वोट दूसरे को देते ही नहीं। छुआछूत की भावना दूर करने के लिये जगह-जगह सभायें हुई और उत्साही स्वर्ण युवकों ने जाति-दण्ड की परवाह न कर भरी सभाओं में हरिजनों के हाथ से पानी पिया। हरिजनों ने अनेक जगह धूमधाम से मंदिरों में प्रवेश किया। पंचायत प्रथा का नवजागरण हुआ। क्रांतिकुमार भारतीय जैसे व्यक्तियों ने रामायण प्रवचन के माध्यम से स्वराज्य की ज्योति जगाई और अपढ़ लोगों का सहारा लेकर राष्ट्र प्रेम जागृत किया।

लोक गीतों का नायक

–अद्वैतगिरी जी

शैशवकाल में उस निरंकुश शासन के अत्याचार मेरे ईर्द-गिर्द घट रहे थे और मैं उन्हीं के बीच बढ़ रहा था। इसी बीच गांधीजी का सत्याग्रह आन्दोलन युग का पथ दीप बनकर हमारे सामने आया।

सन् १९२० में गांधीजी रायपुर आये। स्वर्गीय श्री सुन्दरलालजी शर्मा के भाजे श्री कन्हैयालालजी अध्यापक के निवासगृह में उनके ठहरने की व्यवस्था की गई। संध्याकाल उन्होंने एक ग्रामसभा को संबोधित किया। भाषण के मुख्य विषय देश की स्वतंत्रता, एकता और सत्याग्रह थे। उन्होंने कहा कि ध्येय जितना मूल्यवान होगा-प्रयत्न भी इसके अनुरूप, उतने ही मूल्यवान होने चाहिये। स्वतंत्रता को यदि हम प्राण-पण से चाहेंगे तो उसका मिलना निश्चित है।

छत्तीसगढ़ में तब से गांधीजी की प्रतिष्ठा जन-जन में दिन-दिन घर करती गई। स्वतंत्रता, सत्याग्रह, स्वदेशी और गांधीजी परस्पर पर्यायवाची हो गये। सर्वत्र जन जीवन शनैः शनैः इनकी चर्चा करते-करते इनकी ओर झुक गया।

ग्रामीण महिलायें अपने लोकगीतों में गांधी का नाम लेने लगी। आजादी की मनौतियां मानने लगीं। उनके स्वामी स्वतंत्रता सेनानी हो, ऐसी इच्छायें करने लगीं। चरखा और तिरंगा देहात-देहात और घर-घर में हो गये।

स्वतंत्रता के अमर सेनानी, मोहनदास करमचंद गांधी दूसरी बार सन् १९३३ में छत्तीसगढ़ (रायपुर) आये। इस बार उन्हें कांग्रेस कमेटी की ओर से आमंत्रित किया गया था। स्वर्गीय श्री रविशंकरजी शुक्ल के वे अतिथि बने। उस समय श्री शुक्ला का निवासगृह ही राजनीति के मंच के रूप में स्मरण किया जाता था।

गांधीजी से श्री शुक्लाजी के निवासगृह में हम तमाम कांग्रेसी साथियों की व्यक्तिगत मुलाकात हुई। उनसे प्रश्न किया गया– शक्तिशाली अंग्रेज सत्ता किस प्रकार समाप्त होगी? गांधीजी ने सरल, सहज मुस्कराहट में कहा–सत्य और अहिंसा के इन अमोघ और अपराजेय अस्त्रों के सामने, कोई कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, ठहर नहीं सकता।

एक बड़ा प्रश्न सरल वाक्य में हल कर दिया उन्होंने।

अपराह्न संध्या प्रहर मोतीबाग में उन्होंने अपार जन समूह को संबोधित किया। दर्शनाभिलाषी जनता का समूह भाषण के पश्चात् उनके साक्षात्कार के लिये उद्यत हुआ। फलतः अपार जन समूह पर नियंत्रण पाना अत्यन्त ही कठिन और असंभव हो गया। तब मोतीबाग की पिछली दीवाल तोड़ी गई और गांधीजी को वहां से निकाला जा सका।

इस समय तक गांधीजी का प्रभाव छत्तीसगढ़ में काफी हो ही चुका था परन्तु द्वितीय आगमन से उनकी छाप गहरी और अमिट हो गई। इनका प्रभाव छत्तीसगढ़ की ग्रामीण स्त्रियों पर इतना अधिक हो गया था कि एक गांव की सभी स्त्रियां लोटे में पानी और फूल लेकर उसका कलश रखकर सर पर दूसरे निकटस्थ ग्राम में आजादी और गांधी के गीत गाती, आजादी की नवचेतना देती हुई, जाती थी और फिर दूसरे ग्राम से तीसरे ग्राम में जाने का क्रम दूसरे ग्राम की ही स्त्रियों द्वारा किया जाता था। यह क्रम ऐसा हो गया था कि वह समूचे छत्तीसगढ़ के बच्चे-बच्चे की जिह्वा पर आजादी, गांधी, स्वदेशी, एकता नाम लाने में सफल हुआ। ग्रामीण अपढ़ जनता भी बापू के साथ-साथ स्वतंत्रता का सही अर्थ समझने लगी थी।

कीचड़ भरे रास्ते की कसौटी

-धनीराम वर्मा

पूज्य बापू ने जमनालालजी बजाज के आग्रह पर जब सेवाग्राम में अपना आश्रम रखना स्वीकार कर लिया, तब सेवाग्राम में जो वर्धा से चार मील की दूरी पर है, छोटे-बड़े सभी लोगों का आना-जाना जारी हो गया। महात्मा गांधीजी से मिलने के लिये देश के तथा दूसरे देश के बड़े-बड़े लोग हमेशा मिलने के लिये आया करते थे, परन्तु रास्ते में कुछ दूर तक तक काली मिट्‌टी जमीन के कारण बरसात में मोटरें कीचड़ में फंस जाया करती थीं। अधिकारियों ने तथा कई लोगों ने बापूजी से आग्रह किया कि हम वर्धा से सेवाग्राम तक आपकी आज्ञा होने पर सड़क बनवा देंगे। बापूजी ने कहा जब मैं देहात में रहता हूं तो मेरे यहां आने-जाने का रास्ता भी देहाती ही होना चाहिये ताकि लोगों को ग्रामीणों के दुःख-सुख का अनुभव हो सके। बापू बरसात में स्वयं पैदल आया-जाया करते थे। ४–५ साल के बाद नेताओं और उनके सेवकों के आग्रह पर बड़ी मुश्किल से सड़क बनाने की इजाजत मिली। तब सन् ३९–४० में सड़क का निर्माण हुआ।

मैं दिसम्बर, ३९ मे विद्यामंदिर ट्रेनिंग स्कूल के स्काउट (स्वयंसेवक) शिक्षार्थियों को लेकर सेवाग्राम आश्रम को साफ करा रहा था। बापूजी भ्रमण के लिये निकले। उनने कहा कि क्या आप समझते हैं कि इस आश्रम को साफ करा देने मे या कर देने से आपको पूरा संतोष हो जावेगा। मैंने कहा– जी हां। तब उनने कहा कि इस आश्रम की अपेक्षा गांवों की गलियों को साफ कराना ज्यादा जरूरी है। बाहर की अपेक्षा अन्दर की सफाई ज्यादा जरूरी है। बाहर और अंदर की सफाई के दो मतलब निकलते हैं। पहला तो मकान के बाहर और भीतरी भाग से तथा दूसरा शरीर के बाहरी तथा शरीर के भीतरी भाग की सफाई वस्त्र तथा कार्य और विचार से। हम अपने वस्त्रादि से दिखने वाले भाग को साफ रखते हैं परन्तु भीतरी भाग की सफाई पर उतना ध्यान नहीं देते। हमारे विचारों और वचनों का भी यही हाल है।

स्काउट कैम्प सेवाग्राम आश्रम के मैदान में लगा हुआ था सबेरे झंडा प्रार्थना में बापूजी शामिल हुए। उस समय स्काउटों का एक अलग झंडा था और गीत भी अलग प्रकार का था।झंडे के अलग प्रकार और अलग गीत को देख सुनकर बापूजी बोले कि हमारे राष्ट्र का एक ही प्रकार का झंडा और एक ही प्रकार का उसका गीत होना चाहिये ताकि हमारी राष्ट्रीय एकता और भावना में किसी प्रकार का भेद न होने पावे। सेवा की भावना बाहर और अन्दर एक ही प्रकार की हो। हमारा संकल्प भी एक हो और वह भी दृढ़ हो।

मैं बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र विद्यामंदिर ट्रेनिंग स्कूल वर्धा में ही था। बापूजी ने उस ट्रेनिंग स्कूल का शिलान्यास किया था और बीच-बीच में देखने के लिये भी आते थे। मैं वहां अध्यापक होकर गया था वहां बापूजी ने अपने प्रवचन में कहा था कि बालक की शिक्षा स्वावलम्बी बनाने वाली हो। शिक्षा मे बालकों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास होना आवश्यक है। परावलम्बी बनाने वाली शिक्षा दूर कर देनी चाहिए। शिक्षा से बालकों का जीवन सुन्दर ढंग से विकसित हो ताकि वे देश और समाज की सच्ची सेवा कर सकें।

वक्ता से रिपोर्टर

–मालवीय प्रसाद जी श्रीवास्तव

१९३३–३४ में (दिसम्बर-जनवरी) गांधीजी ३ दिन के लिये रायपुर आये थे। यहा श्री गांधीजी रायपुर में बूढ़ापारा के श्री रविशंकरजी शुक्ल के यहां ठहरे थे।

सपूर्ण देश के करीब १लाख लोग गाँधीजी के इस सम्मेलन में आये थे यहां पर गांधीजी ने ३दिन तक अपना भाषण दिया था। इनके भाषण का आयोजन कांग्रेस की ओर से लारी स्कूल के मैदान में किया गया था। उस समय यहां के वरिष्ठ नेताओं में मुख्यत: श्री वामनरावजी लाखे, श्री लक्ष्मणराव उदागिरकर, श्री रविशंकरजी शुक्ला, श्री महंत लक्ष्मी-नारायण दास जी, यति यतनलालजी,प्रभूलालजी लखोटिया,सेठ शिवदास डागा, इत्यादि थे। उस समय श्री रामदयाल तिवारी रिपोर्टिंग किया करते थे।

सबसे पहले दिन जब गांधीजी सुबह की सभा को संबोधित करने करने वाले थे, उनकी रिपोर्टिंग के लिए रामदयाल तिवारी को नियुक्त किया गया था। परन्तु जैसे-जैसे समय नजदीक आता गया श्री तिवारीजी बहुत ही घबराने लगे। उन्होंने मुझे आकर कहा कि आप आज की रिपोर्टिंग कीजिये। मैं तो महात्माजी की स्पीच की रिपोर्टिंग नहीं कर सकूगा।

मैं चूकि एक वक्ता के रूप में गया था। मैंने इस काम को करने से इंकार कर दिया। तिवारीजी अब तो बड़े ही परेशान दिखाई देने लगे। वे दौड़कर शुक्लाजी के पास गये और उन्हें अपना हाल कह सुनाया तथा यह भी कहा कि मालवीय प्रसादजी पीछे बैठे हैं। आप उनसे कहिये कि आज की रिपोर्टिंग वे करें।

श्री शुक्लाजी व श्री लाखेजी दोनों मेरे पास आये और कहने लगे–श्रीवास्तवजी–क्या बात है? आप रिपोर्टिंग क्यों नही करते। मैंने तत्काल जवाब दिया कि मुझे पूर्व सूचना नहीं दी गई थी। जबकि सब लोगों को मालूम था कि मैं रायपुर मे ही हू।

उसी समय घोषणा की गई कि गांधीजी १० मिनट में आने वाले है। अब तो तिवारीजी और अन्य लोग परेशान होने लगे। शुक्लाजी ने लाखेजी की ओर देखकर कहा कि–देखिये श्रीवास्तवजी इतनी भी बात नही मान रहे हैं। मैं लाखे साहब को बहुत अधिक मानता था। उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा श्रीवास्तव तुम आज की सभा की रिपोर्टिंग करो। मैंने स्पष्ट शब्दो में कहा कि मैं अभी की तो रिपोर्टिंग कर लेता हूं परन्तु अन्य सभाओं के लिये आप अपना इंतजाम कर लीजिए इसपर लाखेजी तथा शुक्लाजी राजी हो गये और उस दिन की कार्यवाही की रिपोर्टिंग मैंने की।

सप्रेजी ने मुझे एक बात सिखाई कि रिपोर्टिंग करते समय यह ध्यान में रखना चाहिये कि बोलने वाला जो

(शेष पृष्ट ४० पर)

वे सारा मामला समझ गये...,

—महंत लक्ष्मीनारायण दास जी

सन् १९२१ की घटना है, जब महात्मा गांधी पहली बार रायपुर आये और उन्होंने जैतूसाव मठ को अपनी अविस्मरणीय भेंट दी।

१९२१ में मेरी आयु लगभग २८ वर्ष की थी। महात्मा गांधीजी के साथ उनके दो अनन्य मित्र और अनुयायी स्वर्गीय शौकत अली और स्वर्गीय मोहम्मद अली भी साथ थे।

स्वर्गीय मोहम्मद अली मठ के नीचे की बैठक कक्ष में जहां आजकल पुस्तकालय और वाचनालय है, बैठ गये और महात्मा गांधी भगवान के दर्शनार्थ मंदिर में प्रवेश करने के लिये जाने लगे। उनके साथ स्वर्गीय शौकत अली भी हो लिये। परन्तु जब महात्माजी मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे, तब उनके पीछे चल रहे स्वर्गीय शौकत अलीजी भी मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे। मैंने तत्काल ही दौड़कर उनका हाथ पकड़ लिया और उनसे आग्रह किया कि चूंकि आप गौ मांस का भक्षण करते हैं, अतः आप मंदिर में प्रवेश करने उत्तराधिकारी नहीं हैं।

मेरे उपरोक्त कथन पर स्वर्गीय शौकत अली मुस्कराये और ठहर गये। मंदिर में प्रवेश करने के पश्चात् महात्मा गाँधीजी ने मुड़ कर देखा कि स्वर्गीय शौकत अली अचानक कहां नदारत हो गये परन्तु जब उन्होंने मुझे और स्वर्गीय शौकत अली को मंदिर की सीढ़ियों पर एक साथ खड़े हुए देखा तो वे सारा मामला समझ गये और मेरी ओर देखकर मुस्कराने लगे।

मेरी पेशी.....!!!

सन् १९३३ की बात है। महात्मा गांधीजी नागपुर कांग्रेस अधिवेशन के पश्चात् हरिजन उद्धार कार्यक्रम के अन्तर्गत दूसरी बार रायपुर पधारे थे। वे स्वर्गीय पं. रविशंकर शुक्ला जी से बूढ़ापारा स्थित निवास स्थान में ठहरे थे। स्वर्गीय शुक्लजी के निवास स्थान से ही हरिजन उद्धार के कार्यक्रमों के प्रारंभ करने की रूपरेखा तैयार की गई थी। इस समय मेरी अवस्था ३६–३७ वर्ष की थी और मैं कांग्रेस के हर प्रकार के आन्दोलनों में सक्रियरूप से भाग लेता था।

स्वर्गीय पं. रविशंकरजी शुक्ला ने मुझे जानकारी दी कि स्वर्गीय ठाकुर प्यारेलालसिंहजी ने मेरी शिकायत महात्मा गांधीजी से की है कि:—महन्त लक्ष्मीनारायणदासजी ने अपना जैतूसाव मठ हरिजनों के दर्शनार्थ नहीं खोला है। स्वर्गीय शुक्लाजी ने मुझे बताया कि इस शिकायत के आधार पर आपकी पेशी महात्मा गांधीजी के समक्ष होगी।

उपरोक्त तथ्यों की जानकारी होने के उपरान्त उस समय मेरे हृदय में यह विचार उठा कि महात्मा गांधी

जी से मेरे विरुद्ध इस प्रकार की शिकायत राजनैतिक क्षेत्र में मेरी प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाने के उद्देश्य से की गई है और महात्मा गाधी तथा अन्य लोगों की नजरों से मुझे नीचे गिराया जा सके।

स्वर्गीय शुक्लाजी ने जब मुझे विचारमग्न मुद्रा में देखा तो उन्होंने मजाक करते हुए कहा कि महन्तजी क्या सोच रहे हैं। पेशी के लिये तैयार रहें।

महात्मा गांधी के समक्ष मेरी पेशी हुई। गाधीजी ने मुझसे प्रश्न किया कि---:महन्तजी हरिजन उद्धार आन्दोलन के संबंध में आपके क्या विचार है, तथा हरिजनों के लिये मंदिर के द्वार खोले जाने के प्रति आपके क्या विचार हैं? मैंने महात्मा गाधीजी से कहा कि ---:हरिजन उद्धार आन्दोलन के प्रति मेरी पूर्ण सहानुभूति है और इस दिशा मे यथा-संभव प्रयास भी करता हू। जहां तक हरिजनों के लिये मंदिर के द्वारा खोलने का प्रश्न है तो मैं भगवान को पतित पावन मानता हूं वह पतित पावन नाम उसी समय सार्थक हो सकता है, जब कि सवर्ण हिंदू हरिजनों को पतित न समझें और अपने हृदय से यह गलतफहमी दूर कर दे कि हरिजन पतित है। जब तक हरिजनों को भगवान केदर्शन नही होंगे, तब तक पतित पावन भगवान शब्द सार्थक नहीं हो सकता है। गांधीजी ने कहा कि.---श्रीयुत जमनालालजी बजाज ने तो अपना मंदिर हरिजनों के लिये खोल दिया है, आप भी क्यों नही खोल देते है? मैंने महात्मा गाधीजी से कहा कि श्री जमनालालजी बजाज अपने मंदिर के मालिक है। मैं जैतूसाव मठ का महन्त व सर्वाराहकार हूं। यहां पर यह भी बतला देना चाहता हूं कि मैं सर्वाराहकार के साथ ही साथ गद्दीनसीन महन्त भी हूं। गद्दीनसीन महन्त के नाते से यदि मैं जैतूसाव मठ के द्वार हरिजनों के लिये खोल दूं तो मेरा कोई कुछ भी नही कर सकता परन्तु मेरी अन्तरात्मा यह सलाह देती है कि मंदिर का निर्माण जो करते है, उसके साथ ही परम्परा का भी निर्माण होता है। यह परम्परा प्राचीनकाल से मंदिर निर्माण के साथ साथ चली आई है और उससे सम्बद्ध है। इस परम्परा मे हेरफेर करने का अधिकार या तो जनता को है या फिर शासन को। चूकि इस समय शासन अंग्रेजों का है अतः यह विदेशी हुकूमत हमारे धार्मिक कार्यो में हस्तक्षेप करने का अधिकार नही रखती है। स्वदेशी शासन को हस्तक्षेप करने का अधिकार है।

मेरी प्रतिष्ठा !!!

मैंने महात्मा गाधीजी से कहा कि गुरुवाइन मे इस तरह का प्रसग आ गया था और मुझे (महन्तजी) यह जानकारी है कि आपने (गाधीजी) यह व्यवस्था कर दी थी कि यदि उस मंदिर के ७५ प्रतिशत दर्शनार्थी हरिजनों के लिये मंदिर के प्रवेश द्वार खोलने की अनुमति दे दे, तो मंदिर हरिजनों के लिए खोला जा सकता है। मैंने श्री ठाकुर प्यारेलाल सिंह जी को ८१-८२ व्यक्तियों की सूची दी है, जिसमे से ६ व्यक्ति वे है जिन्होंने उमाबाई मंदिर का निर्माण करवाया है। (स्व. उमाबाई स्व जैतूसाव जी की धर्मपत्नी थीं) उनकी दो लड़कियां थीं जिनके३-३ पुत्र है। इस तरह कुल मिलाकर ६ पुत्र थे तथा उनके अतिरिक्त जैतूसाव मठ के आसपास रहने वाली अन्य जातियों के प्रमुख व्यक्तियों के नाम भी शामिल थे। यदि वे सब मिलकर सर्वसम्मति से न हो तो एकमत के बहुमत से भी प्रस्ताव पारित कर मंदिर के द्वार हरिजनों के लिये खुलवा सकते हैं। यदि ऐसा कोई प्रस्ताव पारित हो जाता है तो मैं अपना मंदिर हरिजनोंके लिये खोल दूंगा।मैंने इस संबंध में मोहल्ले वालों की एक आम सभा भी बुलायी थी। मेरी अध्यक्षता मे यह आम सभा हुई। मैंने स्वयं इस आम सभा में मंदिर खोलने के बारे मे अपने विचार जोरदार शब्दों मे रखे। श्री ठाकुर प्यारेलालसिंह का भी भाषण हुआ। कुछ लोगों ने पक्ष मे, कुछ लोगों ने विपक्ष मे भाषण दिया।

कुछ दिनों के बाद दूसरी सभा दूरीहटरी में मंदिर से कुछ फासले पर हुई। इस सभा मे मैंने ठाकुर प्यारेलाल सिंह से कहा कि मैंने आपको जिन लोगों के नामों की सूची दी है, उनसे सम्पर्क स्थापित करने के लिये मै भी आपके

साथ चलने को तैयार है और सबको समझा बुझाकर हम ऐसा वातावरण तैयार करें जिससे मंदिर के दरवाजे हरिजनों के लिये खुल जावें। और मेरे बाद आने वाली पीढ़ी को यह सोचने या कहने का अवसर न मिले कि हमारे गुरुजी ने यह कार्य अपनी इच्छा से किया।

मैंने गांधीजी से कहा कि हरिजनों के लिये मंदिर खोलना एक पवित्र कार्य है पर मैं गलत परम्परा डालकर आने वाली पीढ़ी को अपनी मर्जी से कोई भी निर्णय लेने की परम्परा नहीं डालना चाहता हूं। मैं सर्वसम्मत से यह कार्य करना चाहता हूं। परन्तु इसके उपरान्त न तो ठाकुर प्यारेलाल सिंह ही किसी व्यक्ति के पास गये और न उन्होंने मुझे चलने को ही कहा।मैंने गांधीजी को आगे बताया कि हरिजनों के लिये मंदिर खोले जाने के पीछे जो वास्तविकता है या वास्तविक उद्देश्य है, वह यह है कि मेरी राजनैतिक प्रतिष्टा को आघात पहुंचाया जावे।

दूसरी आम सभा के पश्चात जैतूसाव मठ के सामने ३ महापुरुषों को अनशन पर बैठाया गया। मैंने इन महानुभावों को धूप में न बैठने का आग्रह कर उन्हें मंदिर के अहाते में आकर पुस्तकालय कक्ष की इमारत में बैठने के लिये कहा। अनशन के दूसरे दिन मैंने इन अनशनकारियों से कहा कि आपने गलती की है। गलत कार्य करने वालों को परमात्मा सुबुद्धि नहीं देता है। अनशनकारी ब्राह्मण थे। इसमें श्री शालिग्राम की पत्नी पुनिया भी थीं। इनके लिये मंदिर के द्वार खुले हैं। यदि इनमें एक हरिजन भी अनशन पर बैठा होता तो मुझे प्रसन्नता होती और सफलता की भी आशा रहती।२–३ दिनों तक मंदिर के सामने हो हल्ला मचाया गया, उसके बाद अनशनकारी उठकर चले गये।

मेरे विचारों को और तथ्यों को जानने के उपरान्त महात्मा गांधी ने स्व. शुक्लाजी के निवास स्थान पर ठाकुर साहब व अन्य २–४ व्यक्तियों के सामने कहा कि महन्तजी की कार्यवाही न्यायोचित है। महन्तजी मंदिर के द्वार हरिजनों के लिये खोलना चाहते हैं, केवल परम्परा की अड़चन है। इसे तोड़ने में उन्हें आपका सहयोग चाहिये सबकी रजामंदी से महन्त जी मंदिर के द्वार हरिजनों के लिये अवश्य ही खोल देंगे।

(शेष पृष्ठ ३७ का)

कुछ भी बोलता है, उसे बिना बदले ही प्रेस में आना चाहिये। उनका कहना था कि भाषण में एक शब्द को भी अप मन से नहीं लिखना चाहिये। ठीक उनके कहने के अनुसार ही मैंने महात्माजी के भाषण की रिपोर्टिंग की ।

उसी समय यहां पर विक्टोरिया बगीचा (मोतीबाग) में प्रदर्शनी लगी थी, महात्माजी ने इसका उद्घाट किया। सारे लोग प्रदर्शनी देखने में लगे थे और मैंने जो कुछ भी रिपोर्टिंग की थी उसको घर में बैठकर ठीक कर रह था। मुझे प्रदर्शनी देखने तक की भी फुर्सत नहीं थी।

महात्माजी का कोई भी भाषण बगैर उन्हें दिखाये छपने नहीं जाता था। मैंने भी उनके भाषण को ठीक किय और उन्हें दिखाने ले गया। मेरे लिखे भाषण को उन्होंने गौर से देखा व अपने पास ही रख लिया। मुझे यह पता नह चला कि वह कहां छपा।

रायपुर में उन्होंने अपनी प्रथम आम सभा को जिस मैदान में सबंधित किया, उसी मैदान को आज "गा चौक" के नाम से जाना जाता है।

धमतरी में महात्मा गांधीजी

—डा. शोभाराम देवांगन

पं. सुन्दरलालजी शर्मा, राजिम वाले, महात्मा गांधी को धमतरी में लाने के लिये २ दिसम्बर, सन् १९२० ई. को कलकत्ता गये थे किन्तु वहां उनसे भेंट नहीं हो सकी। इसका प्रधान कारण यह था कि इस अवधि में महात्मा गांधी कलकत्ता कांग्रेस विशेष अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन विषयक जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था वह कांग्रेस के अधिवेशन में, जो २६ दिसम्बर, १९२० को नागपुर में प्रस्तुत होने को था, का समर्थन प्राप्त करने के अभिप्राय से भारतवर्ष में सर्वत्र उसके अनुकूल वातावरण उत्पन्न करने को वहां से प्रस्थान कर चुके थे। अतएव शर्माजी को उनके पीछे ही प्रवास करना अनिवार्य हो गया जिसमें उन्हें अधिक दिन लगना स्वाभाविक था। अंत में उनसे दक्षिण भारत के एक नगर में जहां महात्माजी का कार्यक्रम अधिक दिनों के लिये निश्चित था, वहां भेंट होना संभव हुआ। वे गांधीजी को धमतरी तहसील के कंडेल गांव के नहर सत्याग्रह का पूर्ण परिचय कराकर धमतरी में लाने में सफल हुए।

व्यापारी के कन्धों पर

२१ दिम्बर, १९२० ई. को ठीक ११ बजे दिन को महात्मा गांधी मौलाना शौकत अली के साथ, रायपुर होते हुए यहां पधारे। धमतरी में महात्माजी के दर्शन तथा उनके सामयिक भाषण को सुनने के लिये तहसील के प्रत्येक भाग तथा गावों से असंख्य स्त्री तथा पुरुष नगर के प्रमुख प्रवेश द्वार मकईबन्ध चौक से सभा स्थल तक ही नहीं वरन् नगर के डेढ़ मील लम्बे सड़क के दोनों ओर वन्देमातरम्, भारत माता की जय, तथा महात्मा गांधी की जय आदि ध्वनियों से गुंजाकर उनके धमतरी आगमन के उल्लास में उनका हार्दिक अभिवादन कर, उनके तथा देश के प्रति अपनी सच्ची भावनाओं को प्रकट करते हुए खड़े थे। पूर्व से ही महात्मा गांधीजी के भाषण का प्रबन्ध यहां के एक प्रसिद्ध सेठ हुसेन के वृहत बाड़े में निश्चित हुआ, था इसलिये उनकी खुली कार असंख्य नर-नारियों के झुंड को पार करती हुई सीधी वहां पहुंची किन्तु इस सभा स्थल के प्रमुख प्रवेश द्वार पर भी अपार जन समूह के सामने वहीं पर कार से महात्माजी को उतरना पड़ा फिर भी भीड़ के सबब द्वार पार करना, असंभव देखकर गुरूर निवासी श्री उमर सेठ नामक, एक कच्छी व्यापारी झट महात्माजी को उठाकर और अपने कंधों पर बिठाकर सभास्थल के एक सुसज्जित तथा सुरम्य मंच पर पहुंचाने में सफल हुआ। यह स्थान भी उनके पहुंचने के पूर्व ही असंख्य स्त्री तथा पुरुषों से ठसाठस भरा हुआ था। इससे अधिकांशजनों को निकटवर्त्ती भवनों की छतों पर खड़े होकर अपनी उमंगें पूर्ण करनी पड़ीं। जो मंच महात्माजी के बैठने के लिये निर्मित किया गया था, वह अति सुन्दर तोरणपताकाओं तथा देशभक्त नेताओं के चित्रों और शिक्षाप्रद एवं देशभक्ति सूचक वाक्यों की लिखावट आदि से चहुं ओर से एक कलात्मक ढंग से सुसज्जित किया गया था। महात्माजी के आसन ग्रहण करने के पश्चात् नगर निवासियों की ओर से सर्व प्रथम यहां के

एक बड़े प्रमुख तथा प्रतिष्ठित मालगुजार श्रीमन बाजीराव जी कृदत्त महोदय के हाथ से ५०१) रुपये अंकन पांच स
एक रुपये की थैली भेंट कर उनका हार्दिक स्वागत किया गया। जिस उद्देश्य तथा भावना से प्रेरित होकर महात्मा
को यहां लाने का प्रयास किया गया था, वह ईश्वर की कृपा से फलीभूत हो गया था। इससे जन साधारण त
प्रमुख पुरुषों के आनन्द तथा उत्साह में वृद्धि होना स्वाभाविक ही था।

महात्माजी ने देश की सामयिक परिस्थितियों का सुन्दर चित्रण करते हुए हिंदी भाषा में लगभग१घंटे त
भाषण किया जिसमे कंडेल गांव के नहर सत्याग्रह तथा उसके प्रेरक पं. सुन्दरलालजी शर्मा, पं. नारायणरावजी मेघावा
श्री नत्थूजी जगताप तथा श्री छोटेलाल बाबू आदिजनों का उल्लेख करते हुए उपस्थित जन समुदाय को संबोधित क
कहा कि अन्याय तथा अत्याचार का सामना संगठन दृढ़ता तथा सत्यता के साथ सतत् अहिंसात्मक तथा शान्तिमय नी
का अवलम्बन करने से ही देश का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है और इनमें ही देश की उन्नति सन्निहित है। यह अ
लोग निश्चित समझो। इसके पश्चात् लगभग १२॥ बजे दिन को सभा का कार्य समाप्त हुआ। अब यहां से महात्मा
श्री नत्थूजी जगताप के भवन पर फलाहार करने तथा नगर के प्रमुख राजनैतिक तथा प्रतिष्ठितजनों जिनमें श्रीमन्त् बा
रावजी कृदत्त, दाऊ डोमार सिहजी, नन्द वंशी, गुसाई किशनगीरजी, श्री रघुनाथ रावजी जाधव, सेठ हंसराज तेजप
जी, सेठ सोहनलाल मुंशीलालजी, श्री बीरजी भाई, मोहम्मद अब्दुल करीमजी, श्री मोहम्मद अब्दुल हकीमजी वकील द
छोटेलालजी, श्री भांजी भाई ठेकेदार, श्री बदरुद्दीनजी मालगुजार, श्री सेठ उस्मान अब्बाजी के नाम विशेष उल्लेखनीय
को देश की वर्तमान परिस्थिति पर ध्यान देकर उन्हें देश को उद्धार करने विषयक कांग्रेस के कार्यक्रमों
भाग लेने का आग्रह कर गांधी जी लगभग दो बजे दिन को यहां से रायपुर के लिये प्रस्थान किये। इस तरह तीन च
घंटे के लिये यह नगर महात्माजी के आगमन पर आनन्द विभोर में मग्न रहा।

महात्माजी के इस भाषण का प्रभाव प्रत्यक्ष यह हुआ कि नागपुर कांग्रेस को देखने के लिये कांग्रेस प्रतिनिधि
तथा कांग्रेसी स्वयंसेवकों के अतिरिक्त नगर तथा तहसील के लगभग ५०० व्यक्ति गये और वहां से देश सेवा की एक
चेतना तथा स्फूर्ति लेकर वापस हुए जिसका परिणाम यह हुआ कि इस नगर तथा तहसील में असहयोग आन्
लनों के कार्यक्रमों को प्रगति देने के लिये श्री छोटेलाल बाबू श्रीवास्तव ने अपने ही धमतरी स्थित भवन के एक
में राष्ट्रीय विद्यालय तथा खादी उत्पादन केन्द्र की स्थापना कर संचालन जुलाई सन् १९२१ ई. में अपने ही द्रव्य
किया जो लगातार सन् १९२५ ई. तक चलता रहा। असहयोग आन्दोलन की गति धीमी होने से बरबस इसे
कर देना पड़ा। इन दोनों कार्यों में श्री छोटेलाल बाबू श्रीवास्तव को लगभग ४० हजार रुपयों की क्षति हुई फिर
से देश के कार्य करने में सदा अग्रसर रहे। सन् १९३० ई. के जंगल सत्याग्रह आन्दोलन में मेघावाले के गिरफ
होने के पश्चात वे द्वितीय सर्वाधिकारी नियुक्त होकर जेल गये।

१९३३ में महिलाओं के बीच

महात्मा गांधीजी के उपवास से प्रभावित होकर दलित जाति एवं अछूतों के एक प्रसिद्ध नेता तथा निप
कानूनविद् श्री भीमरावजी अम्बेदकर बार एट लाको अछूतों को सवर्ण हिंदुओं से सर्वथा पृथक नहीं होने की एक म
यिक तथा ऐतिहासिक घोषणा करने से कोई शक्ति नहीं रोक सकी। इस तरह महात्माजी के निर्विघ्न उपवास सम
होने पर अछूत जाति को हरिजन शब्द से सम्बोधित करने के एक नवीन नामकरण का जन्म हुआ और अपने
साप्ताहिक पत्र को गांधीजी ने नवजीवन के बदले हरिजन के नाम से प्रख्यात किया जिसका परिणाम यह हुआ कि महा
जी उन्हें हिन्दुओं का एक अविभाज्य अंग बनाये रखने में न केवल सफल ही हुए किन्तु उनकी उन्नति तथा उन्हें सामा

अधिकार प्रदान करने केहेतु तथा सवर्ण हिंदुओं को समयानुसार अपने व्यवहार में परिवर्तन करने के उद्देश्य से तथा उसमें प्रेरणा देने के हेतु उन्होंने भारत में सर्वत्र तदनुकूल वातावरण निर्माण करने के लिये पर्यटन करना आवश्यक समझा।

सर्वप्रथम धमतरी नगर में ही महात्मा गांधीजी का पुनः आगमन २४ या २७ नवम्बर, सन् १९३३ को प्रातःकाल ८ बजे रायपुर से कार द्वारा सुलभ हुआ। तहसील में सर्वत्र महात्मा गांधी जी के इस ऐतिहासिक आगमन की सूचना पूर्व से ही प्रसारित होने के सबब, उनके दर्शन करने तथा सामयिक उपदेश सुनने के लिये असंख्य नर तथा नारी का एक वृहत्त समूह धमतरी के प्रवेश द्वार मकईबन्ध नामक चौक पर उनके आगमन की प्रतीक्षा हेतु एकत्रित हुआ। इस शुभ अवसर पर नगर तोरण पताकाओं तथा वंदनवार द्वारों से सुसज्जित होने के सबब, स्थानीय तथा अभ्यागत-जनों के हृदयों में आनन्द एवं उल्लास की उमंगों का होना स्वाभाविक था। इस तरह धमतरी नगर का वातावरण महात्मा गांधी के इस आगमन पर पूर्णतः आनंदप्रद दृष्टिगोचर हो रहा था। ज्योंही महात्मा गांधी की कार मकईबन्ध चौक के पास आयी, त्योंही सर्वप्रथम कांग्रेस कमेटी की ओर से महात्माजी को पंडित नारायण राव जी मेघावाले ने तथा नगर-पालिका समिति की ओर से श्री नत्थू जगताप अध्यक्ष, नगरपालिका आदि अनेक संस्थाओं के प्रमुखजनों ने पुष्प माला पहना कर हार्दिक स्वागत किया। वहां से अब महात्माजी एक खुली कार में बैठकर नगर के प्रमुख सड़क से होकर पूर्व निश्चित कार्यक्रमानुसार सर्वप्रथम दाजी कन्या मराठी पाठशाला की सभा में भाषण करने गये। तदुपरान्त श्री छोटेलाल बाबू श्रीवास्तव के भवन के सामने वाले चौक पर पूर्व निश्चित महिलाओं की एक वृहत आम सभा में भाषण करने को पहुंचे जहां उनके शिक्षाप्रद सामयिक भाषण से प्रभावित होकर सभा में उपस्थित महिलाओं में से अनेक महिलाओं ने अपने-अपने अंग से सोने तथा चांदी के आभूषणों को निकालकर हरिजनों के उद्धार विषयक कार्यों के लिये सहर्ष महात्माजी को समर्पण कर इस नगर तथा तहसील के पुरुषों के साथ महात्मा गांधी तथा देश के कार्य में पूर्ण सहयोग देने की भावना को प्रत्यक्ष प्रमाणित कर देश के प्रति अपनी एक अनुपम श्रद्धा को प्रकट करने में कोई त्रुटि नहीं की। उनमें से कतिपय महिलाओं के नाम जहा तक मैं स्मरण करने में समर्थ हो सका हूं, नीचे दिये जाते हैं। शेष महिलाओं के नाम स्मरण नही होने के सबब अंकित करने में सर्वथा असमर्थ रहा अस्तु उसके लिये क्षमाप्रार्थी हूं।

(१) श्रीमती यशोदाबाई जी कुदत्त—सोने का आभूषण।

(२) श्रीमती सावित्रीबाईजी देवांगन—पत्नी श्री चन्दूलालजी साव देवांगन—सोने का आभूषण।

इस अवसर पर सभा में उपस्थित प्रायः सभी महिलाएं जिनसे जो हो सका, महात्माजी को पूर्व वर्णित कार्य के लिये रुपये पैसे से दान करने में नहीं चूकी।

भारत की बारडोली

अब लगभग १० बजे दिन को नगरपालिका के मिडिल स्कूल के प्रांगण में एक सुसज्जित सभा मंडप में महात्मा गांधीजी के भाषण का प्रबन्ध किया गया था। वहां महात्माजी के पहुंचने तथा एक उच्च चित्ताकर्षक सुरम्य मंच पर आसन ग्रहण करने के पश्चात् सर्वप्रथम प. नारायणराव जी मेघावाले ने महात्माजी को नगर निवासियों की ओर से पांच सौ एक रुपये की एक थैली भेंट की। तदुपरान्त नगरपालिका (धमतरी) की ओर से उसके अध्यक्ष श्री नत्थूजी जगताप ने महात्माजी को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया। इसी तरह स्थानीय लोकल बोर्ड श्री नाथूरामजी मोतीलाल, संस्कृत पाठ-शाला तथा गौशाला आदि संस्थाओं की ओर से उन्हें अभिनन्दन पत्र समर्पित किये गये। इन सब अभिनन्दन पत्रों के उत्तर देने के साथ ही साथ महात्माजी ने देश की वर्तमान परिस्थिति पर भाषण करते हुए धमतरी तहसील को स्वराज्य

प्राप्त करने विषयक प्रत्येक ग्रान्दोलन में सक्रिय भाग लेने के सबब उनके श्रीमुख से यह तहसील वस्तुतः भारत की एक दूसरी बारडोली ही है, यह वाक्य उच्चरित हुग्रा। लगभग ११॥ बजे दिन का महात्माजी के भाषण समाप्त होने पर वे श्री नत्थूजी जगताप के भवन पर फलाहार करने गये जहां उन्होंने उपस्थित स्थानीय प्रतिष्ठित कांग्रेसी तथा ग्रन्य गण्यमान्य व्यक्तियों को देश की वर्तमान परिस्थिति पर विशद रूप से प्रकाश डालते हुए तदनुकूल कार्य करने का परामर्श दिया।

'जय' में आत्मसन्तोष

महात्माजी के दर्शनार्थ बाहर से ग्राये हुए ग्रसंख्य नर-नारियों के समूह के कारण जगताप साहब के भवन ने वस्तुतः एक तीर्थ स्थल का रूप ग्रहण कर लिया था। किन्तु वे उन्हें देखने में ग्रसमर्थ जान बाहर से ही, केवल महात्माजी की जै ध्वनि लगाने मे ही संतोष करते हुए खड़े थे। ऐसी ग्रवस्था में महात्माजी इस परिस्थिति को ग्रधिक समय तक कैसे टाल सकते थे। ग्रतः मानवता के पुजारी ने सहसा ग्रपने ग्रासन से उठकर उस जन समूह को दर्शन देने एवं उनका दर्शन करने के हेतु भवन की चांदनी पर हाथ जोड़ कर मुस्कुराहट के साथ सर्वप्रथम जनता-जनार्दन का ग्रभिवादन किया जिसके उत्तर में नीचे खड़ी हुई जनता महात्मा गांधी के जय के तुमुल घोष से नभमंडल को गुंजारकर ग्रपनी हार्दिक भावनाग्रों को उनके प्रति प्रकट कर ग्रपने ग्राप को धन्य समझने लगी।

सतनामी शिष्ट मंडल के बीच

ततपश्चात् ही महात्माजी ने पुनः ग्रपने ग्रासन पर विराजमान होकर यहां के हरिजनों के एक शिष्टमंडल के प्रमुख श्री चरणजी सतनामी, श्री बिमालजी सतनामी तथा श्री लालरामजी सतनामी से भेंट की। वे महात्माजी को ग्रपने मोहल्ले में ले जाने की प्रार्थना कर उनके चरण रज से उसे पवित्र करने की भावना से लालायित थे। हरिजनों के उद्धारक महात्माजी उनकी इस प्रार्थना को कैसे स्वीकार कर सकते थे? ग्रतः वे तत्पर वहां ग्राने को उद्यत हो ही गये किन्तु नगर का समस्त भाग स्त्री तथा पुरुषों के समूह से परिपूर्ण था। ऐसी ग्रवस्था में महात्माजी को वहां पहुंचाना स्थानीय तथा रायपुर निवासी ग्रभ्यागत राजनैतिक पुरुषों के लिये एक कठिन समस्या हो गई। किन्तु महात्माजी की इस बलवती इच्छा को जानकर वे उन्हें नगर के बाह्य मार्ग से उस मोहल्ले में पहुंचाने का प्रबन्ध करने में सफल हुए, महात्माजी उस मोहल्ले का प्रत्यक्ष देखकर ऐसे प्रभावित हुए कि उन्हें ग्रपने श्रीमुख से यह कहना पड़ा कि यह मोहल्ला वस्तुतः हरिजन मोहल्ला जैसा तो नहीं जान पड़ता है। उसका प्रधान कारण यह है कि यहां के प्राय. समस्त वर्गों में घर तथा गली कूचों को नित्य स्वच्छ करने की एक सनातन परम्परा प्रचलित है। तदनुसार उस मुहल्ले में भी स्वच्छता का भान होना स्वाभाविक था। ग्रतः महात्माजी को उपयुक्त उद्‌गार निकालना पड़ा ग्रौर हरिजनों (सतनामियों) से इस परम्परा को सदा बनाये रखने तथा उसमें ग्रौर ग्रधिक सुधार करने तथा सवर्ण हिन्दुग्रों के साथ ही साथ समस्त संप्रदाय के पुरुषों के साथ संपर्क बढ़ाकर देश के कार्य में हाथ बटाने का उपदेश देकर वे लगभग ३बजे दिन को यहां से रायपुर के लिये प्रस्थान किये। इस तरह यह नगर चार पांच घंटे के लिये महात्माजी के इस ग्रागमन का पुण्य लूटने में समर्थ रहा।

जब ग्राप रायपुर पधारे तब ग्रापने यहां के समस्त कार्यक्रमों में सम्मिलित होने साथ ही साथ सतनामी ग्राश्रम को भी भेंट दी जिसकी स्थापना पं. सुन्दरलाल जी शर्मा, राजिमवाले की प्रेरणा तथा प्रयत्न से संभव हुई थी। स्व. शर्माजी ने छत्तीसगढ़ में सतनामियों (हरिजनों) को ऊपर उठाने में कोई कसर नहीं रखी थी जिसे देखकर उनके मुख से यह शब्द निकला कि हरिजनों के उद्धार विषयक कार्य में पं. सुन्दरलालजी शर्मा, राजिमवाले मेरे से दो वर्ष बड़े हैं जिन्होंने देश के इस महत्वपूर्ण कार्य को मेरे इस मिशन के पूर्व सम्पादित कर सचालित करने में पूर्ण ग्रादर्श उपस्थित किया है।

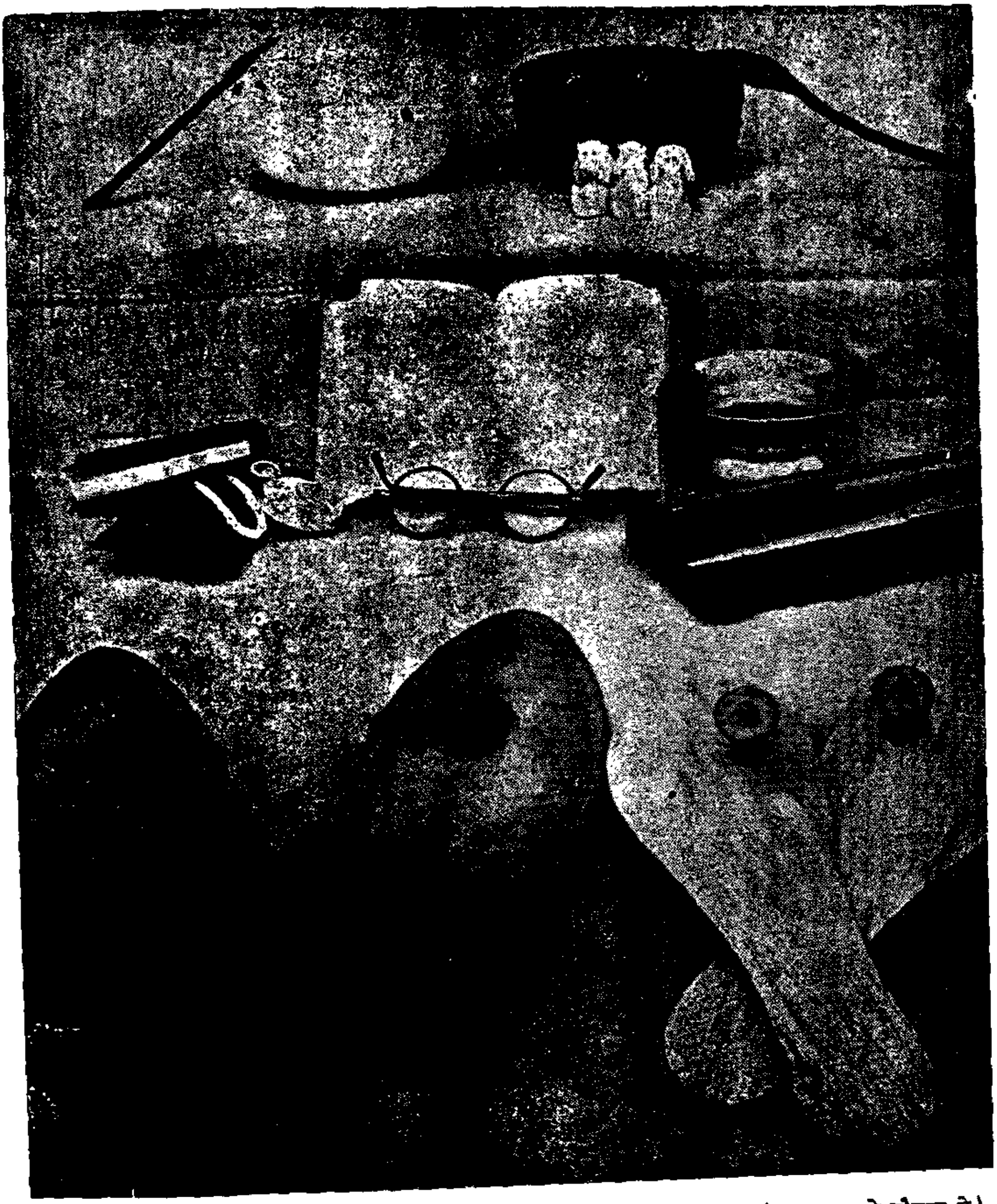

(नवभारत के सौजन्य से)

बापू के स्मृति-चिन्ह

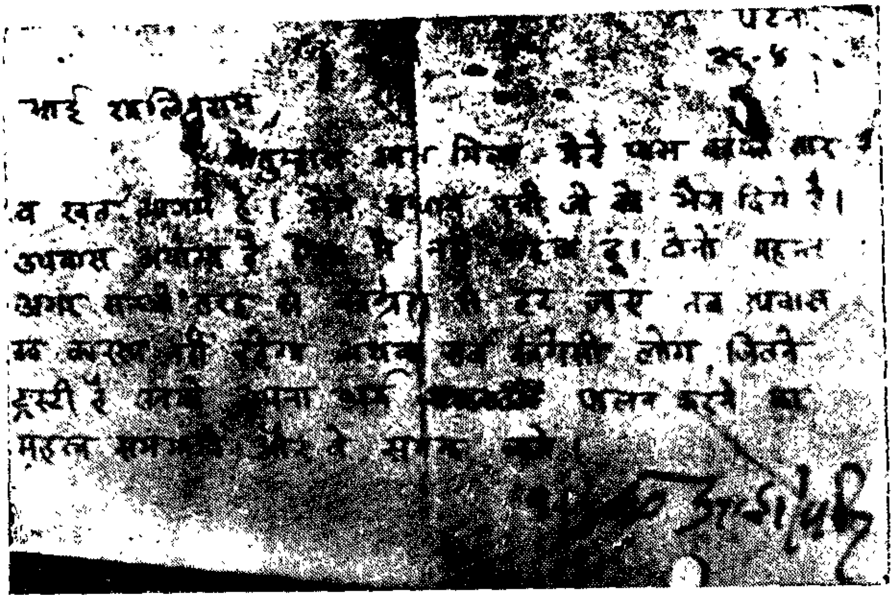

रायपुर के भाई शालिग राम जी को लिखा गया महात्मा गांधी जी का पत्र। (पत्र श्री मानिक लाल चतुर्वेदी सौजन्य से)

बिलासपुर के श्री नागेश्वर राव द्वारा १९३८ में गांधी जी से लिया गया हस्ताक्षर। हस्ताक्षर के ऊपर सा विद्या या विमुक्तये लिखा हुआ है।

कवि मानो अंग्रेजों को अन्तिम चुनौती ही दे रहा है—

गांधीजी की लरइया, नाहीं जितब रे फिरंगिया,
चाहे करद कितनों उपाय, भलमन मजे कर लेहै फिरंगिया।
अब जइहे कोठियां बिकाय।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद लोगों के आनन्द की सीमा नहीं थी। उन्हें यह विश्वास था कि रामराज्य में कोई दुखी नहीं होगा। कुमाऊं प्रदेश के झोड़ा गीत में अभिव्यक्त यह खुशी कितनी निश्चल है—

गौं गौं में खुशी के नडारा बाजा, आब चली गा पचेत राजा,
गांधी ले अपणों मंत्र चलायो, मितिया देश फिरी जगायो।
बांधि बोरिया अंग्रेज भाजा, आब चली गो पचेत राजा।।१।।

सच तो यह है कि गांधीजी के प्रजाराज्य की कल्पना भी यही थी कि जनता सत्य का आचरण करे, चारित्रिक दृष्टि से वह दृढ़ बने। सहनशीलता के प्रति नवीन आस्था बनी रहे। इससे बढ़कर स्वराज्य भला और क्या हो सकता है? लोग निर्बल की रक्षा करें। शक्तिशालियों से न डरें। यही स्वराज्य की सही मनोभूमि है।

राष्ट्रीय आन्दोलन के समय कुमायू प्रदेश के ही एक और लोक कवि गोर्दा द्वारा रचित चांचरी गीत की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं:—

आओ यारो, गांधी संग मिल लो स्वराज्य रे,
गांधी का सिपाही बणों बीछ सरताज रे
चरख को तोप रे, काती बुणी चलू लात,
उड़ि जाली टोप रे।।

जनमानस में गांधीजी की अमरता का एक कारण यह भी है कि उन्होंने जनजीवन के विभिन्न पक्षों को अलग-अलग मानकर कभी नहीं देखा किन्तु इस संदर्भ में वे इन सारे पहलुओं में एक जलधारा जैसी अविभाज्यता ही देखने के वादी थे। अपनी उद्देश्यपूर्ण विराट जीवन-यात्रा में उन्होंने सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक पक्षों की एक नवीन एवं बोधगम्य व्याख्या प्रस्तुत की है। जो कि जनजीवन के बहुत करीब है। सच्चे जीवन का मूलमंत्र देन वाले, देश को पराधीनता के पाश से मुक्त करने वाले विश्व वंद्य गांधी का स्मरण करते हुए एक उड़िया लोक कवि का अपने साथियों को दिया गया उद बोधन दृष्टव्य है:—

गांधी महात्मा आसीले, कले देश स्वाधीन,
कर्ण-मंत्र देई गले है, का ताहार आन,
रखीबा ताहार आन हैं, आस करीबा सेवा,
मद निशा सब छाड़ आन है, आस सांगेर जीबा।

भारतवर्ष के घर-घर में प्रेम के तेल से सत्य का दीप जलाकर मनुष्य के अंधेरे मन-मंदिर को प्रकाशित करने वाले गांधी देवता के प्रति छत्तीसगढ़ी का एक लोक कवि कहता है—

ते घर-घर सत दीया बारे, प्रेम के ओमा तेल ला डारे,
मन मंदिर के अन्धियारी मा, जोत जगाये तैं भारत मा, गांधी देवता।।

(शेष पृष्ठ ५२ पर)

बस्तर के वनवासी गीतों में गांधीजी

–डा. हीरालाल शुक्ल

(१)

मध्यप्रदेश के दक्षिण छोर में 'वंशतरि' के सघन वनों में आज भी आदिम जीवन धारा उद्दाम वेग से प्रवाहि हो रही है। लगभग पन्द्रह हजार वर्गमील में विस्तृत दंतेश्वरी के 'वस्त्र' का प्रतीक बस्तर शालवनों का वह भू-भाग है जहा कभी वनवासी राम ने विचरण किया था। शताब्दियों की विस्मृति के पश्चात् इस वनस्थली का इतिहास चौथ शताब्दि में नल वंश की स्थापना से प्रारम्भ होता है। राष्ट्रकूट, चालुक्य, चोल, तथा गंग आदि राजाओं के संघर्ष-काल के अनन्तर यहां नागवंशी राजाओं का आधिपत्य हुआ। चौदहवीं शताब्दि के मध्य में यह काकतीय नरेशों के अधिकार आया, तथा उन्होंने पांच सौ वर्षों तक यहा शासन किया। अंग्रेजी शासन-काल में बस्तर के वनवासियों ने अपनी स्वा तता के लिये दो बार रक्तक्रांति की थी। सन् १९४८ मे इस भू-भाग के भारत-गणराज्य में विलय के साथ वनवासि के स्वप्न तथा बलिदान सार्थक हुए। १९६८ ई. में "बैलाडीला-लौह-अयस्क-परियोजना" के साथ बस्तर के विकास का न अध्याय प्रारम्भ हुआ।

आज बस्तर जिले में एलविन तथा ग्रिग्सन के समय के बस्तर के साथ कांकेर राज्य भी सम्मिलित है। भार गणराज्य के विविध प्रान्तों के सम्पूर्ण जिलों में बस्तर बृहत्तम जिला है तथा विस्तार में केरल राज्य से भी अधि विस्तृत। इसके पूर्व में उड़ीसा का कोरापुट जिला, दक्षिण पश्चिम में आंध्र का गोदावरी जिला, पश्चिम में महाराष्ट्र व चांदा जिला, व उत्तर पश्चिम में मध्यप्रदेश के रायपुर तथा दुर्ग जिले हैं।

(२)

दण्डकारण्य का भू-भाग बस्तर, भिन्न-भिन्न जातियों का संगम है। यहां अनुमानतः नौ लाख वनवासी जाति रहती है–जिले की बहत्तर प्रतिशत जनसंख्या। इनमें अबूझमाड़िया, दंडामी माड़िया, राजमुरिया, मुरिया, दोर्ला, परज गदबा, हलबा, भतरा, धाकड़, पनरा, महरा, गंदा, पनका, घसिया, परधान तथा कलार आदि प्रमुख हैं। ओरावं कोर्कू खड़िया का उल्लेख सन् १९६१ की जनगणना के पूर्व कभी नहीं मिलता। अतएव ये जातियां सम्भवतः उड़ीसा की ओ से हाल ही मे जाकर बस्तर मे बसी होंगी। यों तो देखने से इन सबमें अलग-अलग रहन-सहन, वेश-भूषा, रीति-रिवा आचार-विचार, उत्सव-संस्कार, नृत्य-गीत, कला-कौशल के भिन्न-भिन्न प्रकार है–सब अलग-अलग दिखाई देते हैं–पर 'सू मणिगणा इव' एक ऐसा सूत्र है, जिसमें इन सब मणिगणों की एक ही माला पिरोई हुई है।

बस्तर के वनवासियों का जीवन सभ्यता के अन्तर्द्वंद्वों मे, राग-द्वेषजनित समस्याओं में कभी उलझा नहीं फलतः उनके जीवन मे आज भी एकातता और शान्ति विद्यमान है। वे आज भी पक्षियो के साथ उठते हैं, सिंह-शाव के साथ खेलते हैं, तथा चांद और सूरज के साथ हंसते और गाते हैं। उनकी हंसी से वन में वसन्त छा जाता है। उच्छ्वास से पतझड़। वेदना से अंतरिक्ष में लहर उठतीहै और विरह से आसमान में काली घटा मंडराती है। प्रकृति उनके बीच कोई व्यवधान नही, कोई रुकावट नही। उनमें कृत्रिमता नहीं है। वे प्रकृति के भांति अकृत्रिम

उनके अंदर मानवी भावों की लहरें अपने अछूते रूप में आती हैं और जीवन के सभी क्षेत्रों में फैल जाती हैं। अपने को छिपाने की कला उन्होंने अभी तक नहीं सीखी। वे न आंसू पीते हैं, न हंसी चुराते हैं।

(३)

इन जनजातियों की बोली भी अलग-अलग है। भतरी, हलबी अथवा छत्तीसगढ़ी आर्य-बोलियां हैं, तो अत्यल्प प्रयुक्त खड़िया, गदबा व कोर्कू मुंडा-बोलियां। द्रविड़ परिवार की उपशाखा गोंडी की छः बोलियां हैं:—झोरिया, माड़िया दंडामी माड़िया, अबूझमाड़िया, मुरिया, दोर्ली तथा प्रर्जी या धुर्वी।

बस्तर की बोलियों पर ग्रियर्सन महोदय को जो सामग्री पटवारियों के माध्यम से मिली थी, वह मुझे अप्रामाणि लगती है। उनके विचार से हलबी मराठी की बोली है, किन्तु मैंने अनेकानेक साक्ष्यों के आधार पर यह सिद्ध किया है f हलबी पूर्वी हिंदी की एक बोली है। ग्रियर्सन को बस्तर में गोंडी का एक ही स्वरूप मिला था तथा वे इसका स्वरू उत्तर-भारत की इतर गोंडी जैसा मानते है। किन्तु तथ्य यह है कि बस्तर की गोंडी अन्य क्षेत्रों की गोंडी से पर्याप्त भि होने के साथ ही साथ अनेकानेक बोलीगत विभेदों से युक्त है। बस्तर के उत्तर-पूर्व कोने से लेकर पश्चिम-दक्षिण दक्षिण-पूर्व तक एक वृत्त-खंड है, जिसमें गोंडी की विविध छः बोलियां बोली जाती हैं।

हलबी बस्तर की सम्पर्क-भाषा है। अबूझमाड़ तथा तेलगू-प्रभावित क्षेत्रों को छोड़कर यह पूरे बस्तर में बो व समझी जाती है। अंग्रेजों के शासन-काल में बस्तर के बनवासियों के निमित्त जो विज्ञप्तियां निकला करती थी, हलबी में ही होती थीं। आज भी मध्यप्रदेश शासन के बस्तरस्थ कर्मचारियों के लिये हलबी का ज्ञान आवश्यक है। हल एक प्राणवंत बोली है तथा बस्तर के वनवासियों के जागरण में इसका महत्वपूर्ण योग रहा है और अब भी है।

बस्तर के लोकगीतों में दण्डकारण्य-प्रकृति के उद्गार है। लोक-जीवन इन लोकगीतों से ओतप्रोत है। बस के गांव-गाव में, गांव की गली-गली में, गली के घर-घर मे, घर के कंठ-कंठ में ये गीत युग-युगान्तर और कल्प-कल्पान से हवा-पानी की तरह, सूरज-चांद की तरह विकसित, सुरक्षित और संरक्षित हैं। समय और दूरी को पार कर सम पन्द्रह हजार वर्गमील में व्याप्त ये स्वर वेद की तरह अपौरुषेय, गीता की तरह अर्थपूर्ण, एवं राम-कृष्ण की तरह प्रचरि हैं।

इन गीतों का विषय जन्म से लेकर मृत्यु तक की कोई भी वस्तु हो सकती है। ये घोटुल-गुडी (प्रमोद-मंदि में चेलिक (घोटुल का युवा सदस्य) व मोटियारी (घोटुल की युवती सदस्या)के द्वारा गाए जाने वाले गीत हो स हैं या विविध 'परब' या 'करसना' (खेल) के गीत।

वनवासियों में प्रचलित गीतों (गोंडी-पाटा, कुरुख-डण्डी) के अनेक रूप हैं:—छेरता, ताग, कोटनी, लेजा, धनकुल व लक्ष्मीजगार। ये हलबी के अपने गीत हैं, तथा 'चइतपरब' शुद्ध रूप से भतरी का। रावनाकेलो, रावना-पा रीलो, करसना, लिगो आदि पाटा गोंडी की छहों बोलियों में मिलते है। आर्य तथा द्रविड़ दोनों ही परिवारों की बोलि ने एक दूसरे की गीत-शैली का अनुकरण किया है। मुंडा-परिवार की बोलियों में गीत की शैली इन दोनों मे अल थलग है तथा उनमें बस्तर के अन्य गीतोंकी भांति संजीदगी नहीं मिलती।

(४)

बस्तर के लोक-जीवन के उजले दर्पण में गांधीजी के जीवन का प्रत्येक पक्ष प्रतिबिम्बित मिलता है। दुर्गम में रहने वाले वनवासियों ने भारत की स्वाधीनता तथा उसके उद्गाता के चित्र संजोए हैं। वनवासी बोलियों में ह ही एक प्रमुख बोली है, जिसमें युग की धड़कनों को निकट से सुना जा सकता है; क्योंकि यह अधिकांश बस्तर की म बोली है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर अन्य बोलियों ने भी गांधी-दर्शन को अपने लोकगीतों का विषय बनाया है, f संख्या में अपेक्षाकृत कम।

रक्त क्रान्ति के स्वर

अंग्रेजी शासन-काल में वनवासियों को अत्यन्त सताया गया था। उनका संत्रास जब-जब सहन-शक्ति से परे हो गया, उन्होंने तब-तब अंग्रेजों के विरुद्ध रक्तक्रांति की। सन् १६१० की रक्तरंजित क्रांति के स्वर आज भी बस्तर के वनों में गूंजते हुए 'भुमकाल गीत' में सुने जा सकते हैं:--

सुना सुजन हो, मान सियान हो,
भुमकाल गीत गाइबि, सुनाइबि ।। (भतरी)
(बड़े लोग सुनें, मैं विप्लव -गीत गाकर सुना रहा हूं।)

कितने ही वर्ष इस त्याग और बलिदान के गीत को सुनते हुए निकल गए। देश में एकता न रही। शक्ति क्षीण हो गई। स्वतंत्रता के अनेकानेक पुजारी (अंग्रेजों के छल के कारण) मातृभूमि के लिये मर मिटे:---

कितरो बरख असन गेली, देस चो टूटली बल।
देस लो कितरो फांसी गेला, करुन थाकला छल ।। (हलबी)

गाँधी का अवतार

ऐसी स्थिति में गांधी का देवता के रूप में अविर्भाव हुआ। यह वह काल था, जब अंग्रेज हमारे देश के अन्न-धन को लूट रहे थे। भारतवासियों में फूट डाल रहे थे, कलह उत्पन्न कर रहे थे। गांधी देवता ने हमारी आंखें खोल दी। उनकी भेद-नीति का रहस्य प्रकट कर दिया:---

देवता बन के आये गांधी, देवता बन के आये।
हमरे देश के अन ला धन ला, जम्मा-जम्मों लूटिन।
परदेशियन के लड़वाए ले, भाई से भाई छूटिन ।।
देश ला करके निचट निहत्था, उल्टा मारैं शेखी।
बोहे गुलामी करत रहेन हम, उंकरे देखा-देखी ।।
तैं आंखी ला हमार उघारे, जम्मो पोल बताए।
गांधी देवता बन के आए ।। (छत्तीसगढ़ी)

और गांधी देवता का अवतार हुआ था 'काठियावाड़' राज्य के दीवान करमचन्द गांधी के घर। मनुष्य धर्म का उन्होंने पाठ पढ़ा था, अतएव अंग्रेजों की बातों को सुनकर उन्हें अत्यन्त कष्ट हुआ। देश के दुख को देखकर वे अत्यन्त चिन्तित थे:---

काठेयावाड़ राज चो देवान रलो, गांधी करमचन्द।
हुनचो घरे बेटा जनमलो, गांधी मोहनचन्द–
हो गांधी मोहनचन्द ।।छेर छेर।।
बाढ़लो उडलो पाठ पढ़लो, मनुज धरमकारी।
साहेब मन चो गोठ सुनुन, धक्का लागली भारी–
हो धक्का लागली भारी ।।छेर छेर।।
देस भर चो दुख के दखुन, गांधी फिरलो घरे।
पेट भितरे चिन्ता ढापली, आइग असन बरे–
हो आइग असन बरे ।।छेर छेर।। (हलबी)

गांधी जी का सत्याग्रह

भारतवर्ष के दुःख-दैन्य को समाप्त करने के लिए उन्होंने अहिंसा का सहारा लिया। उपवास के द्वारा सम्पूर्ण समस्याओं को सुलझाया। पत्थर मन अग्रेज भी पिघल गये। ऐसे गांधी मानव नहीं देवता हैं। उनके कार्यों की चर्चा भला वनवासी कवि कैसे कर सकता है। उसमें सामर्थ्य भी तो नहीं है:——

तोर करनी ला कतेक बतावों, सक्ति नइए भारी।
देस बिदेस अउ गांव-गांव मां, तोरेच चरचा-चारी॥
तै उपास कर-करके मऊनी बनके करे तपस्या।
अंगरेजी चौगुन ला मेटे, टोरे सबो समस्या॥
साल बछरले धरे अहिंसा, पथरा ला पिघलाए॥
गांधी देवता बन के आए॥ (छत्तीसगढ़ी)

गांधीजी के द्वारा प्रदर्शित सत्य मार्ग ही इन वनवासियों का प्रेय है, क्योंकि ये जानते हैं कि:——

सत ने रले भात मिरेंदे, सत ने होएदे जीत।
सत मारग ने रलू जाले, बयरी होयदे मीत——
हो बयरी होयदे मीत॥ छेर छेरा॥ (हलवी)

सत्य धर्म के 'धनुष्काण्ड' को इन्होंने सदैव धारण किया है तथा उसके उद्गाता की एक स्वर से जय बोलते रहे हैं:—

जय जय भारत माता चो, जय जय बलुक इवा हो।
महात्मा गांधी बाबा चो, सपाय जय बलुक दिया हो॥
हामी हिन्दुस्थानी भाई, नी जानू लन्द-फन्द काई।
सत धरम चो धनुकाण्ड के धरुन होलुसे ठीया हो॥ (हलबी)

तभी तो एक गीतकार गांधी को 'सत्य तथा अहिंसा का प्रसाद बांटने वाला' मानता है:—

बांधली द्रौपदी तुमके आंसू धार ने, कुब्जा बांधन पकाली फूलहार ने॥घोषा॥
साग खोआउन बिदुर तुमके बांधले, बांधली सबरी तुमके बेरचार ने।
दीला नु हो सत्त अहिंसा चो परसाद, भारत बांधलो गांधी अवतार ने॥हलवी॥

अर्थात् हे परमेश्वर, द्रौपदी ने तुम्हें अश्रु की धाराओं से बन्दी बनाया। कुब्जा ने फूलों की मालाओं से बन्दी बनाया तुम्हें बिदुर ने साग खिलाकर अपने वश में किया। जंगल के बेरचार खिलाकर सबरी ने तुम्हें अपने बन्ध में जकड़ लिया और तुम्हें इस गरीब भारत ने बन्दी बनाया सत्य और हैं अहिंसा का प्रसाद बांटने वाले गांधी के अवतार से।

राष्ट्र प्रेम : महात्माजी के विचारों से प्रभावित होकर वनवासियों के कंठ से जो स्वर निकले हैं, वे देश-विदेश सेवा व एकता की भावना से ओत-प्रोत हैं। देश-सेवा के लिये कवि धर्म की ढाल व तलवार लेता है।:—

गांधी दखलो अस्तीर होलो, बल्लो जय जय जय भगवान।
तुइ महाप्रु सदा होलिस, राखालिस सत चो लाज।
देस सेवा काजे धरलू, धरम चो ढाल सत चो तलवार॥ (हलबी)

राष्ट्र प्रेम, धर्म और आध्यात्मिकता

'हम सब भाई-भाई है, एक ही देश के निवासी है यह कहकर वह संपूर्ण कलहों को समाप्त करने की सलाह देता है:—

आमी सबे भाई-भाई, गोटकि देस चो लोग।
छियालाता झगड़ा मेंटू, सपाके भारी रोग॥(हलबी)

तथा गांधी के द्वारा दिखाये गये सत्य, अहिंसा और प्रेम के मार्ग का अनुसरण करने के लिए अनुरोध करता है—:

सवंसार चो निको काजे, गांधी महात्मा दखालो तीन बाट।
सत ने रलो ने सुख मिरेदे, धन लक्ष्मी न होय घाट॥
अहिसा के सिखा सबे, काचोय जीवके नी जारा।
दया करा सबरे जीव उपरे, कोनी जीव के नी मारा॥(हलबी)

गांधीजी की लड़ाई असत्य और अधर्म से थी। अंत में सत्य की जीत हुई। उनकी यह गाथा युग-युगान्तर तक चलने वाली कविता बन गई। प्रत्येक युग में अवतार जन्म लेते रहे हैं। गांधी भी एक अवतार थे। कृष्णावतार ने महाभारत युद्ध में गीता का उपदेश दिया था। गांधी—अवतार ने भी सत्य व अहिंसा के शान्तिमय पाठ का उपदेश दिया है। बस्तर की जनता उनके प्रति श्रद्धावान है:—

धरम अधरम लड़ाई होली, सत चो होली जीत।
देव सवंसार कहनी लिखेदे, जुग-जुग चो होली गीत॥
जय भगवान जय परमेसर, बिन्ती काय करुंदे आमी।
युग-युग ने तुइ होलिस, एइ आय भारत भूमि॥
कृष्णावतार धरन दुआपर ने, सांगलिस गीता चो गिआन।
धरम लड़ई महाभारत लड़ली, मारे गोला अधरमी सिआन॥
बउद चोला तुचो ए कलजुग ने, समदुर कठा कठा दुआर।
जानू लोक के तुइ सबे ठाने, करे से गांधी तुके जोहार॥(हलबी)

तथा उसके गीतों में सत्य धर्म की उद्‌घोषणा के साथ निर्भयता की ध्वनि सुनने को मिलती है:—

होएदे सत्त धरम चो जीत, बसेदे बैरी मन चो बेर।
काहाँनि खाद हुनमन पाक, रोपने बीज आत कनेर।
दखानू धान मिरी चो झार, गंवरिया भारत चो रखआर।
नी डरूं आवत खंगार॥(हलबी)

बस्तर के मड़िया 'लिगो' देव के उपासक है तथा उनके प्रत्येक अविदित 'पाटा' 'लिंगो' की अर्चना से प्रारंभ होते हैं:—

वायवा पाटा वाई रा लिंगो, वायवा डाका वाई रा लिंगो,
पहाले पाटा नियरा लिगो, माड़िया पाटा लायोर रा लिंगो,
वायरा लिंगो वायुरा॥(अबुझमाड़िया)

अर्थात्: अविदित गीत हमें प्राप्त हो, अविदित कदम हमें मिले।
प्रथम गीत तुम्हारा है, माड़िया गीत हमारा है, लिंगो, आ जावो, आवो॥

वनवासी गीतों मे शरीर की नश्वरता तथा प्राण की चंचलता का चित्रण इस बात का द्योतक है कि ये आध्यात्म-जगत में भी विचरण करते हैं:—

हांय जिवी हांय हो, हासा होड़मो, हे साक साकाम लेका हिपिड़ हिपिड़ !
सारु साकामदाक लेका जिवे मा ठोल, ठोल नोग्रा सेताक सिसिर बांगराहे ना ॥ (गदबा)

भावार्थ : 'ये प्राण क्या है ? हवा है, शरीर क्या ? मिट्टी है। पीपल के पत्तों से डोलने वाले ये प्राण, अरुई के पत्तों पर पड़े जल-कण की तरह, ढुलक पड़ने वाले है, प्रातःकालीन शिशिर की नाई क्षण भंगुर ॥'

जीवन की क्षणभंगुरता से व्याकुल होकर जन-मानस ने जिस जगत् की कल्पना की है, वह आठ खूटों वाला है। उसके चौथे से लेकर आठवें खूंटो के संरक्षक राम, सीता, गाय, सिंह व गांधी बाबा हैं:—

आंठ ठन खुट, आंठ ठन खुट, माकोड़ा चो जाली।
कुदुन-भांदुन माकोड़ा दखा, एके बनाली॥
गोटक खुंट चटक-मटक, गोटक खुते गीता।
गोटक खुंटे राम रहू आत, गोटक खुटे सीता॥
गोटक खुटे गऊ, रहू आत, गोटक खुटें नाहर।
गोटक खुटे गांधी बाबा, गोटक खुटें जवाहर॥ (हलबी)

(शेष पृष्ठ ४६ का)

पन्द्रह अगस्त १९४७ को जब आजादी मिली तो छत्तीसगढ़ का किसान फूला नहीं समाता। हृदय के समस्त उछाह के साथ वह गा उठता है:—

गांव के गंवइहा मै पहिरे हौं खादी।
हमला आजादी देवाइस महात्मा गांधी॥

पड़ोसी राष्ट्रों द्वारा किये गये आक्रमणों के संदर्भ मे भी लोक कवि गांधीजी का स्मरण करता है। आज बापू नहीं रहे। एकता का वातावरण छिन्न-भिन्न हो गया। प्रेम पाठ पढ़ाने वाला अब कोई नहीं रहा। यही कारण है कि दुश्मन अब हम पर आक्रमण करने का साहस कर रहे है।

नावा रे सड़क मा परे है खपरा।
तोर गये ले बापू, दुश्मन, मारथे थपरा॥

दरअसल गांधीजी न केवल भारत को बल्कि सम्पूर्ण समाज को एक नया रूप देना चाहते थे, काश, मानव मात्र उनके उपदेशों को ग्रहण कर उनकी अपेक्षित ऊंचाई पर पहुंच पाता तो आज दुनिया का नक्शा ही कुछ और होता। आज दुनिया में इतने असुन्दर विचार न होते। हिंसा का दारुण वातावरण न होता। किन्तु अब धीरे-धीरे दुनिया यह महसूस कर रही है कि गांधीजी के आदर्शों पर चल कर ही इस धरती पर स्वर्ग उतारा जा सकता है। एक गुर्जर ग्राम–कवि के शब्दों में—

बापू तें दीघा रे देह नादान, अहिंसा अमर थई,
तारा प्रेम नी जोत अखड, के जड़त नाशी गई॥

अर्थात् हे बापू। तेरी देह का बलिदान पाकर अहिंसा अमर हो गई। तूने जो प्रेम की अखण्ड ज्योति जलाई है उससे मानव-मन की समस्त जड़ता नष्ट हो गई।

अस्तु लोक मानस में गांधीजी का प्रभाव इतना अमिट है कि उसका मिटाया जा सकना असम्भव है। उनका नाम आने वाली पीढ़ियों को जीवन की नवीन प्रेरणा देता रहेगा।

मद्य निषेध आंदोलन

बस्तर के अधिकांश वनवासी मदिरा-प्रिय हैं। सुरा उनकी चिरसंगिनी है तथा किसी भी स्थिति में उसका वियोग उन्हें सह्य नहीं है किन्तु महात्मा गांधी के मद्य-निषेध आन्दोलन से वे अछूते नहीं रहे। प्रचार-गीत, लेजा, छेरता तथा तारा गीत के युवक और युवतियों ने तो जैसे आज इसके विरुद्ध अभियान शुरू कर दिया है:—

गांधी बाबा बल्लो सुना हो गंवरेया
मद के छांड़ा तुमी
संगत गोठ के धरा हो गंवरेया
मंद के छांड़ा तुमी ॥घोषा॥
करेजा फोफसा जरुन जाएसे, देहें के चटपट चरुन खाएसे,
धन सरेसे धरम जाएसे, मंद के छाडा तुमी॥ । ॥
मंद चो जोर ने धरा-धरी, मंद चो जोर ने मारा-मारी,
मंद चेघाए से तुमके कछेरी मंद के छांड़ा तुमी॥५॥
गांव चो झगड़ा गांए टूटे, कछेरी जातोर तुमचो छुटो,
उकील मन चो संगत छूटो मंद के छांड़ा तुमी॥ ॥ ॥(हलबी)

भावार्थ : गांधी बाबा ने कहा है 'ग्रामीण भाइयो शराब को छोड़ दो और अच्छी बात सीखो। इससे कलेजा तथा फेफड़ा जल जाता है। शरीर क्षीण हो जाता है धन तथा धर्म दोनों ही जाते हैं। शराब के कारण पकड़ा-पकड़ी व मार-पीट होती है। लोग अदालत जाते हैं।५। शराब पीना बन्द करो जिससे गाव का झगड़ा गाव में ही निपट जाये तथा वकीलों की संगत से बच सको। ॥ ।

'लेजा' के गायक घसिया तथा महरा आदि भी इस आन्दोलन में पीछे नहीं हैं। निम्नलिखित गीत में वे मंद-प्रेमियों को सावधान कर रहे हैं:—

लेजा, लेजा, लेजा, टोरा तेल पठेरानी घीव,
मंद-मुर के निचे छांडस,
परलो तुमचो जीव॥
लेजा, लेजा, लेजा रे पापा। परलो तुमचो जीव॥(हलबी)

परजा तथा माड़िया के अतिरिक्त सम्पूर्ण वनवासियों द्वारा पूष महीने की चांदनी रातों में मनाए जाने वाले छेरछेरा-उत्सव में गाए जाने वाले युवकों के छेरता-गीतों में गांधीजी के मद्य-निषेध की भावना भरी हुई है। लीजिए नवयुवकों की टोली इधर ही आ रही है:—

मंद सुर के छांड़ते छांड़ा नीको नो हांय मंद।
भाटी बाटे जाउन दखा, खूबे लंद फंद—
हो खूबे लद फद।छेर छेर।।।
धरा-झूमा लोढ़ा-पारा, आउर मारा पेटा।
बारा बाखना कुकड़ी चाखना, बाप के मारलो बेटा—
हो बाप के मारलो बेटा।२।(हलबी)

अर्थात : शराब पीना छोड दो, शराब पीना अच्छी बात नहीं है। नशे में कुछ नहीं सूझता। भट्टी के पास जाकर